

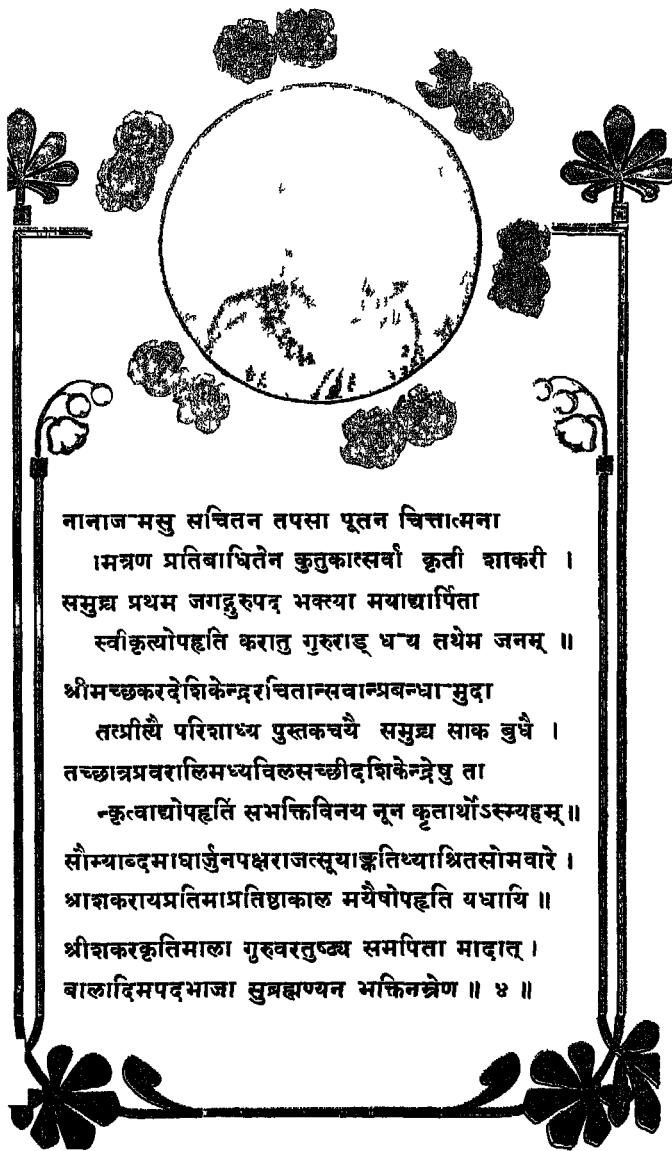
परिप्रहण सं० 10.38०

ग्रन्थालय, के बि दि शि संस्थान

सारनाथ, बाराष्टरी



TO
HIS HOLINESS SRI JAGADGURU
SRI SATCHIDANANDA SIVABHINAVA
NRISIMHA BHARATI SWAMI
WHO ADORNS THE THRONE OF THE SRINGERI MUTT
IS THE WORTHY RI PRESERVATIVE OF THE
CRAFT SANKARACHARYA
AND
THAN WHOM IT IS IMPOSSIBLE
TO COME ACROSS A HOLIER PERSONAGE
A TRUER MAHATMA A NOBLER SAINT
AND A MORE RICOROUS ASCETIC
THIS EDITION IS MOST REPECTFULLY INSCRIBED
AS A TOKEN OF UNBOUND ADMIRATION
BY THE HUMBLEST OF ALL HIS DISCIPLES
T K BALASUBRAHMANYAM



नानाज्ञमसु सचितन तपसा पूतन चित्तात्मना
 मन्त्रण प्रतिबाधितेन कुतुकासवी कृती शाकरी ।
 ससुब्रह्म प्रथम जगद्गुरुपद भक्त्या मयाद्यापिता
 स्वीकृत्योपहृति करातु गुरुराङ् धाय तथेम जनम् ॥

 श्रीमच्छकरदेशिकेन्द्रचितान्सवान्प्रबन्धामुदा
 तत्परीयं परिशाश्य पुस्तकचयै ससुब्रह्म साक बुधै ।
 तच्छान्त्रप्रवशलिमध्यचिलसच्छीदशिकेन्द्रेषु ता
 कृत्वाद्योपहृति सभक्तिविनय नून कृतार्थोऽस्यहम् ॥
 सौम्याददमाधार्जुनपक्ष्मराजत्सूयाङ्कितिथाश्रितसोमवारे ।
 श्राकरायप्रतिमाप्रतिष्ठाकाल मयैषोपहृति यधायि ॥
 श्रीशकरकृतिमाला गुरुवरतुष्वय समयिता मादात् ।
 बालादिमपदभाजा सुब्रह्मण्यन भक्तिनन्देण ॥ ४ ॥



	PAGE
VISHNU STOTRAS	1
MISCELLANEOUS STOTRAS	70
LALITA TRISATISTOTRA BHASHYA	161



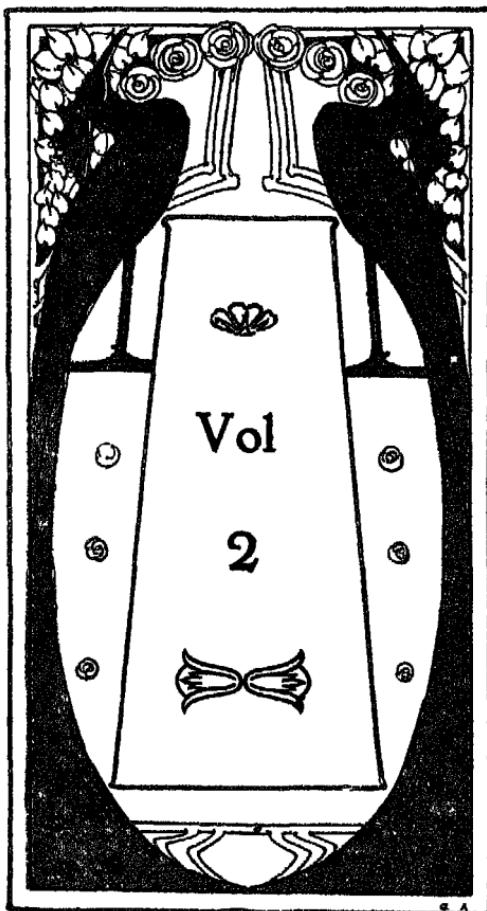


पृष्ठम्

विष्णुस्तोत्राणि	१
सकीर्णस्तोत्राणि	७०
ललितात्रिशतीस्तोत्रभाष्यम्	१६१



STOTRAS.



॥ श्री ॥

॥ विषयानुक्रमणिका ॥



	पृष्ठम्
हनुमत्यच्चरतम्	१
श्रीरामभुजगप्रयातस्तोत्रम्	३
लक्ष्मीनृसिंहपच्चरतम्	११
लक्ष्मीनृसिंहकहणारसस्तोत्रम्	१३
श्रीविष्णुभुजगप्रयातस्तोत्रम्	१८
विष्णुपादादिकेशान्तस्तोत्रम्	२२
पाण्डुरङ्गाष्टकम्	३६
अच्युताष्टकम्	३९
कृष्णाष्टकम्	४२
हरिस्तुति	४५
गोविन्दाष्टकम्	५६
भगवन्मानसपूजा	५९
मोहमुद्र	६२
कनकधारास्तोत्रम्	७०
अन्नपूर्णाष्टकम्	७५

मीनाक्षीपञ्चरत्नम्	७९
मीनाक्षीस्तोत्रम्	८१
दक्षिणामूर्तिस्तोत्रम्	८४
कालभैरवाष्टकम्	८९
नर्मदाष्टकम्	९२
यमुनाष्टकम्	९५
यमुनाष्टकम्	९८
गङ्गाष्टकम्	१०१
मणिकर्णिकाष्टकम्	१०४
निर्गुणमानसपूजा	१०७
प्रात स्मरणस्तोत्रम्	११२
जगन्नाथाष्टकम्	११४
षट्पदीस्तोत्रम्	११७
भ्रमराम्बाष्टकम्	११९
शिवपञ्चाक्षरनक्षत्रमालास्तोत्रम्	१२२
द्वादशलिङ्गस्तोत्रम्	१३०
अर्धनारीश्वरस्तोत्रम्	१३४
शारदासुजगप्रयाताष्टकम्	१३७
गुर्वष्टकम्	१४०
काशीपञ्चकम्	१४३





॥ श्रीमहाविष्णु ॥

॥ श्री ॥

॥ हनुमतपञ्चरत्नम् ।

Gourishunker Ganeriwala

वीताखिलविषयेच्छ

जातानन्दाश्रुपुलकमत्यच्छम् ।

सीतापतिदूताद्य

वातात्मजमद्य भावये हृथम् ॥ १ ॥

तरुणारुणमुखकमल

करुणारसपूरपूरितापाङ्गम् ।

सजीवनमाशासे

मञ्जुलमहिमानमञ्जनाभाग्यम् ॥ २ ॥

शम्बरवैरिशरातिग-

मम्बुजदलविपुललोचनोदारम् ।

कम्बुगलमनिलदिष्ट

द्विम्बजवलितोष्टमेकमवलम्बे ॥ ३ ॥

दूरीकृतसीतार्ति
 प्रकटीकृतरामवैभवस्फूर्ति ।
 दारितदशमुखकीर्ति
 पुरतो मम भानु हनुमतो मूर्ति ॥ ४ ॥

वानरनिकराध्यक्ष
 दानवकुलकुमुदरविकरसद्वक्षम् ।
 दीनजनावनदीक्ष
 पवनतप पाकपुञ्जमद्राक्षम् ॥ ५ ॥

एतत्पवनसुतस्य
 स्तोत्र य पठति पञ्चरत्नारूप्यम् ।
 चिरमिह निखिलानभोगा
 न्मुङ्कत्वा श्रीरामभक्तिभागभवति ॥ ६ ॥

इति श्रीमत्परमहसपरिवाजकाचार्यस्य
 श्रीगोविदभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य
 श्रीमच्छकरभगवत कृतौ
 हनुमत्पञ्चरत्न सपूर्णम् ॥

॥ श्री ॥

॥ श्रीरामभूषणपातस्तोत्रम् ॥

विशुद्ध पर सविदानन्दरूप
गुणाधारमाधारहीन वरेण्यम् ।
महान्त विभान्त गुहान्त गुणान्त
सुखान्त स्वय धाम राम प्रपञ्चे ॥ १ ॥

शिव नित्यमक विभु तारकार्ण्य
सुखाकारमाकारशूल्य सुमान्यम् ।
महेश कलेश सुरेश परेश
नरेश निरीश महीश प्रपञ्चे ॥ २ ॥

यदावर्णयत्कर्णमूलेऽन्तकाले
शिवो राम रामेति रामेति काश्याम् ।
तदेक पर तारकत्रयरूप
भजेऽह भजेऽह भजेऽह भजेऽहम् ॥ ३ ॥

महारब्धपीठे शुभे कल्पमूले
 सुखासीनमादित्यकोटिप्रकाशम् ।
 सदा जानकीलक्ष्मणोपेतमेक
 सदा रामचन्द्र भजेऽहं भजेऽहम् ॥ ४ ॥

कणद्रव्यमञ्जीरपादारविन्द
 लसन्मेखलाच्चारुपीताम्बराढ्यम् ।
 महाग्निहारोलसस्तुभाङ्ग
 । नदष्वारीमञ्जीरीलोलमालम् ॥ ५ ॥

लसञ्चन्द्रिकास्मेरदोणाधराभ
 समुद्घटपतङ्गेन्दुकोटिप्रकाशम् ।
 नमद्रव्यरुद्रादिकोटीररब्द
 स्फुरत्कान्तिनीराजनाराधिताङ्ग्रिम् ॥ ६ ॥

पुर प्राञ्जलीनाञ्जनेश्वादिभक्ता+
 न्स्वचिन्मुद्रया भद्रया बोधयन्तम् ।
 भजेऽहं भजेऽहं सदा रामचन्द्र
 त्वदन्थ न मन्ये न मन्ये न मन्ये ॥ ७ ॥

श्रीरामभुजङ्गप्रयात्स्तोत्रम् ।

५

यदा मत्समीप कृतान्त समेत
प्रचण्डप्रकोपैर्भट्टैर्भीषयेन्माम् ।
तदाविष्करोषि त्वदीय स्वरूप
सदापत्रणाश सकोदण्डवाणम् ॥ ८ ॥

निजे मानसे मन्दिरे सनिधेहि
प्रसीद प्रसीद प्रभो रामचन्द्र ।
ससौमित्रिणा कैकयीनन्दनेन
स्वशक्त्यानुभक्त्या च समेत्यमान ॥ ९ ॥

स्वभक्ताग्रगण्यै कपीशैर्महीशै-
रनीकैरनकैश्च राम प्रसीद ।
नमस्ते नमोऽस्त्वीश राम प्रसीद
प्रशाधि प्रशाधि प्रकाश प्रभो माम् ॥ १० ॥

त्वमेवासि दैव पर मे यदेक
सुचैतन्यमेतत्त्वदन्य न मन्ये ।
यतोऽभूदमेय वियद्वायुतेजो
जलोऽर्थादिकार्यं चर चाचर च ॥ ११ ॥

नम सचिदानन्दरूपाय तस्मै
 नमो देवदेवाय रामाय तुभ्यम् ।
 नमो जानकीजीवितेशाय तुभ्य
 नम पुण्डरीकायताक्षाय तुभ्यम् ॥ १२ ॥

नमो भक्तियुक्तानुरक्ताय तुभ्य
 नम पुण्यपुञ्जैकलभ्याय तुभ्यम् ।
 नमो वेदवेद्याय चाद्याय पुसे
 नम सुन्दरायेन्द्रिरावलभाय ॥ १३ ॥

नमो विश्वकर्णे नमो विश्वहर्षे
 नमो विश्वभोक्ते नमो विश्वमात्रे ।
 नमो विश्वनेत्रे नमो विश्वजेत्रे
 नमो विश्वपित्रे नमो विश्वमात्र ॥ १४ ॥

नमस्ते नमस्त समस्तप्रपञ्च
 प्रभागप्रयोगप्रमाणप्रवीण ।
 मदीय मनस्त्वत्पदवृन्दसेवा
 विधातु प्रवृत्त सुचैतन्यसिद्धै ॥ १५ ॥

श्रीरामभुजङ्गप्रयातोत्तम् ।

७

शिलापि त्वदङ्गग्रिक्षमासज्जिरेणु
प्रसादाद्युच्चैतन्यमाधत्त राम ।
नरस्त्वत्पददुन्दुसेवाविधाना-
सुचैतन्यमेतीति किं चित्तमङ्ग ॥ १६ ॥

पवित्र चरित्र विचित्र त्वदीय
नरा ये स्मरन्त्यन्वह रामचन्द्र ।
भवन्त भवान्त भरन्त भजन्तो
लभन्ते कृतान्त न पश्यन्त्यतोऽन्ते ॥ १७ ॥

स पुण्य स गण्य शरण्यो ममाय
नरो वेद यो देवचूडामणिं त्वाम् ।
सदाकारमेक चिदानन्दरूप
मनोवागगम्य पर धाम राम ॥ १८ ॥

प्रचण्डप्रतापप्रभावाभिभूत
प्रभूतारिवीर प्रभो रामचन्द्र ।
बल ते कथ वर्ण्यतेऽतीव बाल्ये
यतोऽखण्ड चण्डीशकोदण्डदण्डम् ॥ १९ ॥

श्रीरामभुजङ्गप्रयातस्तोत्रम् ।

दशश्रीवसुभ सपुत्र समित्र
सरिहुर्गमध्यस्थरक्षोगणेशम् ।
अवन्त विना राम वीरो नरो वा
सुरो वामरो वा जयेत्काञ्चिलोक्याम् ॥ २० ॥

सदा राम रामेति रामामृत ते
सदारामभानन्दनिष्ठन्दकन्दम् ।
पित्रन्त नमन्त सुदन्त हसन्त
हनूमन्तमन्तर्भजे त नितान्तम् ॥ २१ ॥

सदा राम रामेति रामामृत ते
सदारामभानन्दनिष्ठन्दकन्दम् ।
पित्रन्वह नन्वह नैव मृत्यो
विभेमि प्रसादादसादात्तवैव ॥ २२ ॥

असीतासमेतैरकोदण्डभूषै
रसौमित्रिवन्दैरचण्डप्रतापै ।
अलङ्कारालैरसुप्रीवभित्रै-
ररामाभिधेयैरल दैवतैर्न ॥ २३ ॥

श्रीरामसुजङ्गप्रयातस्तोतम् ।

१

अवीरासनस्थैरचिन्मुद्रिकाढ्यै
रभक्ताञ्जनेयादित्त्वप्रकाशै ।
अमन्दारमूलैरमन्दारमालै
ररामाभिधेयैरल दैवतैर्न ॥ २४ ॥

असिन्धुप्रकोपैरवन्यप्रतापै
रबन्धुप्रयाणैरमन्दस्मिताढ्यै ।
अदण्डप्रवासैरखण्डप्रबोधै
ररामाभिधेयैरल दैवतैन ॥ २५ ॥

हरे राम सीतापते रावणारे
खरारे मुरारेऽसुरार परेति ।
लपन्त नयन्त सदाकालमेव
समालोकयालोकयाशेषबन्धो ॥ २६ ॥

नमस्ते सुमित्रासुपुत्राभिवन्य
नमस्ते सदा कैकयीनन्दनेड्य ।
नमस्ते सदा वानराधीशवन्य
नमस्ते नमस्ते सदा रामचन्द्र ॥ २७ ॥

प्रसीदि प्रसीदि प्रचण्डप्रताप
 प्रसीदि प्रसीदि प्रचण्डारिकाल ।
 प्रसीदि प्रसीदि प्रपञ्चानुकम्पिन्
 प्रसीदि प्रसीदि प्रभो रामचन्द्र ॥ २८ ॥

भुजङ्गप्रयाति पर वेदसार
 मुदा रामचन्द्रस्य भक्त्या च नित्यम् ।
 पठन्सन्तति चिन्तयन्त्वान्तरङ्ग
 स एव स्वयं रामचन्द्र स धन्य ॥ २९ ॥

इति श्रीमत्परमहसपरिव्राजकाचार्यस्य
 श्रीगोविदभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य
 श्रीमच्छकरभगवत् कृतौ
 श्रीरामभुजङ्गप्रयातस्तोत्रम्
 सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

॥ लक्ष्मीनृसिंहपञ्चरत्नम् ॥

—————*

त्वत्प्रभुजीवप्रियमिच्छसि चेन्नरहरिपूजा कुरु सतत
प्रतिबिम्बालकृतिधृतिकुशलो विम्बालकृतिमातनुते ।
चेतोभृङ्गं भ्रमसि वृथा भवमरुभूमौ विरसाया
भज भज लक्ष्मीनरसिंहानघपदसरसिजमकरन्दम् ॥

शुक्रौ रजतप्रतिभा जाता कटकाद्यर्थसमर्था चें
दुखमयी ते ससृतिरेषा निर्वृतिदाने निपुणा स्यात् ।
चेतोभृङ्गं भ्रमसि वृथा भवमरुभूमौ विरसाया
भज भज लक्ष्मीनरसिंहानघपदसरसिजमकरन्दम् ॥

आकृतिसाम्याच्छाल्मलिकुसुमे स्थलनलिनत्वभ्रममकरो
गन्धरसाविह किमु विद्येते विफल भ्राम्यसि भृशाविरसेऽस्मिन् ।
चेतोभृङ्गं भ्रमसि वृथा भवमरुभूमौ विरसाया
भज भज लक्ष्मीनरसिंहानघपदसरसिजमकरन्दम् ॥ ३ ॥

स्वकचन्द्रनवनितादीनिवषयान्मुखदान्मत्वा तत्र विहरसे
 गन्धफलीसहशा ननु तेऽमी भोगानन्तरदुखकृत स्यु ।
 चेतोभृङ्ग भ्रमसि वृथा भवमरुभूमौ विरसाया
 भज भज लक्ष्मीनरसिंहानघपदसरसिजमकरन्दम् ॥४॥

तत्र हितमेक वचन वक्ष्ये शृणु सुखकामो यदि सतत
 स्वप्ने हृष्ट सकल हि मृषा जाप्रति च स्मर तद्विदिति ।
 चेतोभृङ्ग भ्रमसि वृथा भवमरुभूमौ विरसाया
 भज भज लक्ष्मीनरसिंहानघपदसरसिजमकरन्दम् ॥५॥

इति श्रीमत्परमहसपरिब्राजकाचायस्य
 श्रीगोविदभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य
 श्रीमच्छकरभगवत् कृतौ
 लक्ष्मीनृसिंहपञ्चरत्न सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

॥ लक्ष्मीनृसिंहकरुणारसस्तोत्रम् ॥

श्रीमत्पयोनिधिनिकेतनचक्रपाण
भोगीन्द्रभोगमणिराजितपुण्यमूर्ते ।
योगीश शाश्वत शरण्य भवाब्धिपोत
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ १ ॥

ब्रह्मन्द्रुदमरुदर्ककिरीटकोटि
सधट्टिताङ्ग्रिकमलामलकान्तिकान्त ।
लक्ष्मीलसत्कुचसरोहहराजहस
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ २ ॥

ससारदावदहनाकरभीकरोह-
जवालावलीभिरतिदधतनूरुहस्य ।
त्वत्पादपद्मसरसीरुहमागतस्य
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ ३ ॥

ससारजालपतितस्य जगन्निवास
 सर्वेन्द्रियार्थबङ्गिशाप्रश्वोपमस्य ।
 प्रोत्कम्पितप्रचुरतालुकभस्तकस्य
 लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ ४ ॥

ससारकूपमतिधोरमागधमूल
 सप्राप्य दुखशतसर्पसमाकुलस्य ।
 दीनस्य देव कृपया पदमागतस्य
 लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ ५ ॥

ससारभीकरकरीन्द्रकरभिघात
 निष्पीड्यमानवपुष सकलार्तिनाश ।
 प्राणप्रयाणभवभीतिसमाकुलस्य
 लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ ६ ॥

ससारसर्पविषादिग्धमहोप्रतीत्र
 दश्माप्रकोटिपरिदृष्टविनष्टमूर्ते ।
 नागारिवाहन सुधाबिधनिवास शौरे
 लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ ७ ॥

लक्ष्मीनृसिंहकरुणारसस्तोत्रम् ।

१५

ससारवृक्षभूषबीजमनन्तकर्म-

शाखायुत करणपत्रमनङ्गपुष्पम् ।

आरुह्य दुखफलित चकित दयालो

लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ ८ ॥

ससारसागरविशालकरालकाल

नक्कप्रहप्रसितनिग्रहविग्रहस्य ।

व्यग्रस्य रागनिचयोर्मिनिपीडितस्य

लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ ९ ॥

ससारसागरनिमज्जनमुद्घमान

दीन विलोकय विभो करुणानिधे माम् ।

प्रह्लादखेदपरिहारपरावतार

लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ १० ॥

ससारधोरगहने चरतो मुरारे

मारोग्रभीकरमृगप्रचुरार्दितस्य ।

आर्तस्य मत्सरनिदाघसुदु खितस्य

लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ ११ ॥

बद्धा गले यमभटा बहु तर्जयन्त
 कर्षन्ति यत्र भवपाशशतैर्युत माम् ।
 एकाकिन परवश चकित दयालो
 लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ १२ ॥

लक्ष्मीपते कमलमाभ सुरेश विष्णो
 यज्ञेश यज्ञ मधुसूदन विश्वरूप ।
 ब्रह्मण्य केशव जनार्दन वासुदेव
 लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ १३ ॥

एकेन चक्रमपरेण करेण शङ्ख-
 मन्येन सिन्धुतनयामवलम्ब्य तिष्ठन् ।
 वामेतरेण वरदाभयपद्मचिह्न
 लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ १४ ॥

अन्धस्य मे हृतविवेकमहाधनस्य
 चौरैसहावलिभिरन्द्रियनामधेयै ।
 मोहान्धकारकुहरे विनिपातितस्य
 लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ १५ ॥

लक्ष्मीनृसिंहकरुणारसस्तोत्रम् ।

१७

प्रद्वादनारदपराशारपुण्डरीक-
व्यासादिभागवतपुगवह्निवास ।
भक्तानुरक्तपरिपालनपारिजात
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ १६ ॥

लक्ष्मीनृसिंहचरणाबजमधुब्रतेन
स्तोत्र कृत शुभकर भुवि शकरेण ।
ये तत्पठन्ति मनुजा हरिभक्तियुक्ता
स्ते यान्ति तत्पदसरोजमखण्डरूपम् ॥ १७ ॥

इति श्रीमत्परमहसपरिव्राजकाचायस्य
श्रीगोविदभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य
श्रीमन्छकरभगवत कृतौ
लक्ष्मीनृसिंहकरुणारसस्तोत्र सपूर्णम् ॥



॥ श्रीः ॥

॥ श्रीविष्णुभुजंगप्रयातस्तोत्रम् ॥

चिदश विभु निर्मल निर्विकल्प
निरीह निराकारमौकारगम्यम् ।
गुणातीतमव्यक्तमेक तुरीय
पर ब्रह्म य वेद तस्मै नमस्ते ॥ १ ॥

विशुद्ध शिव शान्तमाद्यन्तशून्य
जगज्जीवन ज्योतिरानन्दरूपम् ।
अदिगदग्नकालव्यवच्छिदनीय
त्रयी वक्ति य वेद तस्मै नमस्ते ॥ २ ॥

महायागपीठे परिभ्राजमाने
धरण्यादितस्त्वात्मके शक्तियुक्त ।
गुणाहस्करे वह्निविम्बार्घमध्ये
समाधीनमौकर्णिकेऽष्टाक्षरात्जे ॥ ३ ॥

समानोदितानेकसूर्येन्दुकोटि-
प्रभापूरतुल्यद्युति दुर्निरीक्षम् ।
न शीत न चाष्ण सुवर्णावदात-
प्रसन्न सदानन्दसवित्सरूपम् ॥ ४ ॥

सुनासापुट सुन्दरभूललाट
किरीटोचिताकुच्छितक्षिगधकेशम् ।
स्फुरत्पुण्डरीकाभिरामायताक्ष
समुकुलरब्रप्रसूनावतसम् ॥ ५ ॥

लसत्कुण्डलासृष्टगण्डस्थलान्त
जपारागचोराधर चारहासम् ।
अलिङ्घाकुलामोदिमन्दारमाल
महोरस्फुरत्कौस्तुभोदारहारम् ॥ ६ ॥

सुरजाङ्गदैरन्वित वाहुदण्डे-
श्रुतिभिर्वल्लक्षणालक्षतामे ।
उदारोदरालकृत पीतवस्त्र
पद्मन्दूनिर्षूतपद्माभिरामम् ॥ ७ ॥

स्वभक्तेषु सदर्शिताकारमेव
 सदा भावयन्सनिरुद्धेन्द्रियाश्च ।
 दुराप नरो याति ससारपार
 परस्मै परेभ्योऽपि तस्मै नमस्ते ॥ ८ ॥

श्रिया शातकुम्भध्युतिलिंगधकान्त्या
 धरण्या च दूर्वादलश्यामलाङ्गचा ।
 कलन्त्रद्वयेनामुना तोषिताय
 त्रिलोकीगृहस्थाय विष्णो नमस्ते ॥ ९ ॥

शरीर कलन्त्र सुत बन्धुवर्ग
 वयस्य धन सद्य भूत्य भुव च ।
 समस्त परित्यज्य हा कष्टमेको
 गमिष्यामि दुखेन दूर किलाहम् ॥ १० ॥

जरेय पिशाचीव हा जीवतो मे
 वसामत्ति रक्त च मास बल च ।
 अहो देव सीदामि दीनानुकम्प्य
 निकमद्यापि हन्त त्वयोदासितव्यम् ॥ ११ ॥

श्रीविष्णुभुजगप्रयातस्तोत्रम् ।

२१

कफव्याहृतोष्णोल्बणश्वासवेग
व्यथाविष्फुरत्सर्वमर्मास्थिबन्धाम् ।
विचिन्त्याहमन्त्यामसख्यामवस्था
विभेदि प्रभो किं करोमि प्रसीद ॥ १२ ॥

लपश्चयुतानन्त गोविन्द विष्णो
मुरारे हरे नाथ नारायणेति ।
यथानुस्मारिष्यामि भक्त्या भवन्त
तथा मे दयाशील देव प्रसीद ॥ १३ ॥

भुजगप्रयात पठेद्यस्तु भक्त्या
समाधाय चित्ते भवन्त मुरारे ।
स मोह विहायाशु युष्मत्यसादा
त्समाश्रित्य योग ब्रजत्यच्युत त्वाम् ॥ १४ ॥

इति श्रीमत्परमहसपरिव्राजकाचार्यस्य श्रीगोविदभग
वत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत् कृतौ
श्रीविष्णुभुजगप्रयातस्तोत्र सपूर्णम् ॥

॥ श्री ॥

॥ विष्णुपादादिकेशान्तस्तोत्रम् ॥

—————*

लक्ष्मीभर्तुर्भुजाग्रे कृतवसति सित यस्य रूप विशाल
नीलाद्रेस्तुङ्गशृङ्गस्थितमिव रजनीनाथबिम्ब विभाति ।
पायाञ्च पाञ्चजन्य स दितिसुतकुलत्रासनै पूरयन्त्वै
निध्वनैर्नीरदौघध्वनिपरिभवदैरम्बर कम्बुराज ॥ १ ॥

आहुर्यस्य स्वरूप क्षणमुखमखिल सूरय कालमेत
ध्वान्तस्यैकान्तमन्त यदपि च परम सर्वधाना च धाम ।
चक्र तच्छक्रपाणेदितिजतनुगलद्रक्षधाराक्षधार
शश्वन्नो विश्ववन्द्य वितरतु विपुल शर्म घर्माशुशोभम् ॥

अव्याख्यार्थात्वोरो हरिमुजपवनामर्शनाध्मातमूर्ते
रस्मान्विस्तेरनेत्रत्रिदशनुतिवच साधुकारै सुतार ।
सर्वं सहर्तुर्मिळ्ठोररिकुलभुवन स्फारविष्णारनाद
सथत्कल्पान्तसिन्धौ शरसलिलघटावार्युच कार्युकस्य ॥

विष्णुपादादिकेशान्तस्तोत्रम् ।

३

जीभूतश्यामभासा सुहुरपि भगवद्वाहुना मोहयन्ती
युद्धेषूद्धयमाना ज्ञाटिति तटिदिवालक्ष्यते यस्य भूर्ति ।
सोऽसिङ्गासाकुलाक्ष्मिदशरिपुबपु शोणितास्वादत्तमो
नित्यानन्दाय भूयान्मधुमथनमनोनन्दनो नन्दको न ॥

कप्राकारा मुरारे करकमलतलेनानुरागाहृहीता
सम्यगवृत्ता स्थिताप्र सपदि न सहते दर्शन या परेषाम् ।
राजन्ती दैत्यजीवासवमदमुदिता लोहितालेपनाद्री
काम दीपिआशुकान्ता प्रदिशतु दयितेवास्य कौमोदकी न ॥

यो विश्वप्राणभूतस्तनुरपि च हरेर्यानकेतुस्वरूपो
य सचिन्त्यैव सद्य स्वयमुरगवधूवर्गगर्भा पतन्ति ।
चञ्चलण्डोरुण्डनुटितफणिवसारक्षपङ्काङ्कितास्य
वन्दे छन्दोमय त खगपतिममलस्वर्णवर्णं सुपर्णम् ॥ ६ ॥

विष्णोर्विश्वेश्वरस्य पवरशयनकृत्सर्वलोकैकधर्ता
सोऽनन्त सर्वभूत पृथुविमलयशा सर्ववेदैश्च वेद्य ।
पाता विश्वस्य शश्वत्सकलसुररिपुध्वसन पापहन्ता
सर्वज्ञ सर्वसाक्षी सकलविषभयात्पातु भोगीश्वरो न ॥

२४

विष्णुपादादिकेशान्तस्तोत्रम् ।

वा भूगौर्यादिभेदैर्विदुरिह मुनयो या यदीयैश्च पुसा
 कारुण्यादैं कटाक्षै सकृदपि पतितै सपद स्यु समग्रा ।
 कुन्देन्दुस्वच्छमन्दस्मितमधुरमुखाम्भोरुहा सुन्दराङ्गीं
 वन्दे वन्धामशैरैरपि मुरभिदुरोमन्दराभिन्दरा ताम् ॥

या सूते सत्त्वजाल सकलमपि सदा सनिधानेन पुसो
 धत्ते या तत्त्वयोगाक्षरमचरमिद भूतये भूतजातम् ।
 धात्रीं स्थात्रीं जनित्रीं प्रकृतिमविकृतिं विश्वशक्तिं विधात्रीं
 विष्णोर्विश्वात्मनस्ता विपुलगुणमर्यो प्राणनाथा प्रणौभि ॥

येभ्योऽसूयाद्विरुचै सपदि पदमुक्त तद्यते दैत्यवर्गे-
 येभ्यो धर्तुं च मूर्धा स्प्रहयति सतत सर्वगीर्वाणवर्गं ।
 नित्य निर्मूलयेयुर्निचिततरममी भक्तिनिन्नात्मना न
 पद्माक्षस्याङ्गिपद्मद्वयतलनिलया पासव पापपङ्कम् ॥

रेखा लेखादिवन्द्याश्वरणतलगताश्वकमत्स्यादिरूपा
 स्तिंगदा सूक्ष्मा सुजाता मृदुललिततरक्षौमसूक्ष्मायमाणा ।
 दद्युन्नो मङ्गलानि भ्रमरभरजुषा कोमलेनाबिधजाया
 कम्ब्रेणाम्बेड्यमाना किसलयमृदुना पाणिना चक्रपाणे ॥

यस्मादाकामतो या गहणमणिशिलाकेतुदण्डायमाना
 दाश्च्योतन्ती वभासे सुरसरिदमला वैजयन्तीव कान्ता ।
 भूमिष्ठो यस्तथान्यो भुवनगृहबृहत्सम्भशोभा दधौ न
 पातामेतौ पयोजोदरलिततलौ पङ्कजाक्षस्य पादौ ॥

आकामद्धया त्रिलोकीमसुरसुरपती तत्क्षणादेव नीतौ
 याभ्या वैरोचनीन्द्रौ युगपदपि विपत्सपदेरेकधाम ।
 ताभ्या ताम्रोदराभ्या सुहुरहमजितस्याच्चिताभ्यामुभाभ्या
 प्राज्यैश्वर्यप्रदाभ्या प्रणतिमुपगत पादपङ्केरुहाभ्याम् ॥

येभ्यो वर्णश्चतुर्थश्चरमत उद्भूदादिसग प्रजाना
 साहस्री चापि सरया प्रकटमभिहिता मर्वदेषु येषाम् ।
 प्राप्ता विश्वभरा यैरतिवितततनोर्विश्वमूर्तेविराजो
 विष्णोस्तेभ्यो महज्य सततमपि नमोऽस्त्वच्छिपङ्केरुहेभ्य ॥

विष्णो पादद्वयाग्रे विमलनखमणिभ्राजिता राजते या
 राजीवस्येव रम्या हिमजलकणिकालकृताग्रा दलाली ।
 अस्माक विस्मयार्हाण्यस्विलजनमन प्रार्थनीया हि सेय
 दद्यादाद्यानवद्या ततिरतिरुचिरा भङ्गलान्यकुलीनाम् ॥

यस्या हृष्टाभलाया प्रतिकृतिममरा सभवन्त्यानमन्त
 सेन्द्रा सान्द्रीकृतेष्यस्त्वपरसुरकुलाशङ्क्यातङ्कवन्त ।
 सा सद्य सातिरेका सकलसुखकर्ता सपद साधयेत्
 शश्चार्ज्युचक्रा चरणनलिनयोश्चक्रपाणेनस्ताली ॥

पादाम्भोजन्मसेवासमवनतसुरब्रातभास्वत्किरीट-
 प्रत्युपोच्चावचाइमप्रवरकरगणैश्चिप्रित यहिभाति ।
 नम्राङ्गाना हरेनों हरिदुपलमहाकूर्मसौन्दर्यहारि-
 च्छाय श्रेय प्रदायि प्रपदयुगमिद प्राप गत्पापमन्तम् ॥

श्रीमलौ चारवृत्ते करपरिमलनानन्दहृष्टे रमाया
 सौन्दर्याङ्गेन्द्रनीलोपलरचितमहादण्डयो कान्तिचोरे ।
 सूरीन्द्रै स्तूयमाने सुरकुलसुखदे सूदितारातिसधे
 जडे नारायणीये मुहुरपि जयतामस्मदहो हरन्त्यौ ॥

सम्यक्साहा विधातु समभिव सतत जह्नयो खिन्नयोर्ये
 भारीभूतोरुदण्डद्वयभरणकृतोत्तम्भभाव भजेते ।
 चिचादर्शी निधातु महितभिव सता ते समुद्रायमान
 वृत्ताकारे विधत्ता हृदि मुदमजितस्तानिश जानुनी न ॥

देवो भीति विधातु सपदि विदधत्तौ कैटभार्य मधु चा
प्यारोप्यारुदगर्वावधिजलघि ययोरादिदैत्यौ जघान ।
बृत्तावन्योन्यतुल्यौ चतुरमुपचय बिभ्रताव भनीला
वूरु चारु हरेस्तौ मुदमतिशयिनीं मानस नो विधक्षाम् ॥

पीतेन योतते यच्चतुरपरिहितेनाम्बरेणात्युदार
जातालकारयोग जलमिव जलधेर्बाङ्गिप्रभाभि ।
एतत्पातित्यदान्नो जघनमतिघनादेनसो माननीय
सातत्येनैव चेतोविषयमवतरत्पातु पीताम्बरस्य ॥ २१ ॥

यस्या दान्ना त्रिधान्नो जघनकलितया भ्राजतेऽङ्ग यथाऽव्ये-
र्मध्यस्थो मन्दराद्रिभुजगपतिमहाभागसनद्वमध्य ।
काञ्ची सा काञ्चनाभा मणिवरकिरणैरुद्धसद्धि प्रदीपा
कल्या कल्याणदान्नी मम मतिमनिश कम्ररूपा करोतु ॥

उन्नन्न कम्रमुच्छृंहपचितमुदभूदत्र पत्रैर्विचित्रै
पूर्वं गीर्वाणपूज्य कमलजमधुपस्थास्पद तत्पयोजम् ।
यस्मिन्नीलाशमनीलैस्तरलहचिजलै पूरिते केलिबुद्धथा
नालीकाक्षस्य नाभीसरसि वसतु नश्चित्तहसञ्चिराय ॥

२८ विष्णुपादादिकेशातस्तोत्रम् ।

पाताल यस्य नाल वलयमपि दिशा पत्रपङ्कीनगेन्द्रा-
निव्वास केसरालीर्विदुरिह विपुला कर्णिका स्वर्णशैलम् ।
भूयाद्वायत्स्वयभूमधुकरभवन भूमय कामद नो
नालीक नाभिपद्माकरभवमुरु तन्नागशस्य शौरे ॥

आदौ कल्पस्य यस्मात्प्रभवति वितत विश्वमेतद्विकल्पै
कल्पान्ते यस्य चान्त प्रविशति सकल स्थावर जङ्गम च ।
अत्यन्ताचिन्त्यमूर्तेश्चिरतरमजितस्यान्तरिक्षस्वरूपे
तस्मिन्नस्माकमन्त करणमतिमुदा क्रीडतात्कोडभागे ॥

कान्त्यस्म पूरपूर्णे लसदसितबलीभङ्गभास्वत्तरङ्गे
गम्भीराकारनाभीचतुरतरमहावर्तशोभिन्युदारे ।
क्रीडत्वानद्वैमोदरनहनमहाबाढवाभिप्रभाढ्ये
काम दामोदरीयोदरसलिलनिधौ चित्तमत्स्यश्चिर न ॥

नाभीनालीकमूलादधिकपरिमलोन्मोहितानामलीना
माला नीलेव यान्ती स्फुरति हचिमती वक्त्रपद्मोन्मुखी या ।
रम्या सा रोमराजिर्महितहचिकरी मध्यभागस्य विष्णो-
श्चित्तस्था मा विरसीचिरतरमुचिता साधयन्ती श्रीय न ॥

सस्तीर्ण कौस्तुभाशुप्रसरकिसलयैर्मुग्धमुक्ताफलाढ्य
 श्रीवित्सोङ्गासि फुलप्रतिनववनमालाङ्कि राजद्वृजान्तम् ।
 वक्ष श्रीवृक्षकान्त मधुकरनिकरदयामल शारङ्गपाणे
 ससाराध्वश्रमातैरुपवनमिव यत्सेवित तत्प्रपद्ये ॥ २८ ॥

कान्त वक्षो नितान्त विदधदिव गल कालिमा कालशब्रो
 रिन्दोर्बिंब यथाङ्को मधुप इव तरोर्मञ्चरीं राजत य ।
 श्रीमान्त्रिय विद्येयादविरलमिलित कौस्तुभश्रीप्रतानै
 श्रीवित्स श्रीपत स श्रिय इव दयितो वत्स उच्चे श्रिय न ॥

सभूयाम्भोधिमध्यात्सपदि महजया य श्रिया सनिधत्ते
 नीले नारायणोर स्थलगगनतले हारतारोपसेव्ये ।
 आशा सर्वा प्रकाशा विदधदपिदधच्छात्मभासान्यतेजा
 स्याश्र्वर्यस्याकरो नो द्युमणिरिव मणि कौस्तुभ सोऽस्तु भूत्यै ॥

या वायावानुकूल्यात्सरति मणिरुचा भासमाना समाना
 साक साकम्पमसे वसति विदधती वासुभद्र सुभद्रम् ।
 सार सारङ्गसधैर्मुखरितकुसुमा मेचकान्ता च कान्ता
 माला मालालितास्मान्न विरमतु सुखैर्योजयन्ती जयन्ती ॥

हारस्योरुप्रभाभि प्रतिनववनमालाशुभि प्राशुरुपै
 श्रीभिश्चाप्यङ्गदाना कबलितहन्ति यश्चिक्षभाभिश्च भासि ।
 बाहुल्येनैव बद्धाज्ञालिपुटमजितस्याभियाचामहे त
 द्वन्धार्ते बाधता नो बहुविहतिकर्ता बन्धुर बाहुमूलम् ॥

विश्वत्राणैकदीक्षास्तदनुगुणगुणक्षत्रनिर्माणदक्षा
 कर्तारो दुर्निरुपस्फुटगुणयशसा कर्मणामद्वतानाम् ।
 शार्ङ्ग बाण कृपाण फलकमरिंगदे पद्मशङ्खौ सहस्र
 विभ्राणा शख्जाल मम दधतु हर्वाहवो मोहहानिम् ॥

कण्ठाकलपोद्वैर्य कनकमयलसत्कुण्डलोत्थैरुदारै
 रुद्योतै कौस्तुभस्याप्युरुभिरुपचितश्चित्रवर्णो विभासि ।
 कण्ठाश्लेषे रमाया करवलयपदैमुद्रिते भद्ररूपे
 वैकुण्ठीयेऽत्र कण्ठे वसतु मम मति कुण्ठभाव विहाय ॥

पद्मानन्दप्रदाता परिलसदरुणश्रीपरीताप्रभाग
 काले काले च कम्बुप्रवररक्षशधरापूरणे य प्रवीण ।
 वक्काकाशान्तरस्थास्तिरथति नितरा दन्ततारौघशोभा
 श्रीभर्तुर्देन्तवासोच्युमणिदधतमोनाशनायास्त्वसौ न ॥

विष्णुपादादिकेशा तस्तोत्रम् ।

3

नित्य स्नेहातिरेकाच्छिजकमितुरल विप्रयोगाक्षमा या
वक्त्रेन्दोरन्तराले कृतवसतिरिवाभाति नक्षत्रराजि ।
लक्ष्मीकान्तस्य कान्ताकृतिरतिविलसन्मुग्धमुक्तावलिश्ची-
र्दन्ताली सतत सा नतिनुतिनिरतानक्षतान्क्षतान्क्षतान् ॥

ब्रह्मन्ब्रह्मण्यजिह्वा मतिमपि कुरुषे देव सभावये त्वा
 शभो शक्र त्रिलोकीमवसि किममरैर्नारदाद्या सुख व ।
 इथ सेवावनम् सुरमुनिनिकर वीक्ष्य विष्णो प्रसन्न
 स्वास्थ्यन्दोरास्त्रवन्ति वरवचनसुधाहाद्येन्मानस न ॥

कर्णस्थस्वर्णकम्भोज्जवलमकरमहाकुण्डलप्रोतदीप्य
 न्माणिकयशीप्रतानै परिमिलितमलिश्यामल कोमल यत् ।
 प्रोद्यत्पूर्याशुराजन्मरकतमुकुराकारचोर मुरारे
 गंडामागगमिनीं न शमयतु विपद गण्डयोर्मण्डल तत् ॥

वक्षाम्भोजे लसन्त मुहुरधरमणि पक्विन्द्राभिराम
 दृष्टा द्वंशु शुक्ल स्फुटमवतरतस्तुण्डदण्डायते य ।
 घोण शोणीकृतात्मा श्वरणयुगलस्त्वुण्डलोच्चमूरुरारै
 प्राणमस्यानिलस्य प्रसरणसरणि प्राणदानाय न स्यात् ॥

दिक्कालौ वेदयन्तौ जगति मुहुरिमौ मचरन्तौ रवीन्दू
 त्रैलोक्यालोकदीपावभिदधति ययोरेव रूप मुनीन्द्रा ।
 अस्मानब्जप्रभे ते प्रचुरतरकृपानिर्भर प्रेक्षमाणे
 पातामाताप्रशुक्लासितस्त्रियुचिर्विरे पचानेत्रस्य नेत्रे ॥४०॥

पातात्पातालपातात्पतगपतिगतेर्भूयुग मुम्रमध्य
 येनेषज्ञालितेन स्वपदनियमिता सासुरा देवसधा ।
 चृत्यङ्गालाटरङ्गे रजनिकरतनारधंखण्डावदाते
 कालव्यालद्वय वा विलमति समया वालिकामातर न ॥

लक्ष्माकारालकालिस्फुरदलिकशशाङ्कार्धसदर्शमील-
 नेत्राम्भोजप्रबोधोत्सुकनिभृततरालीनभृङ्गच्छटाभ ।
 लक्ष्मीनाथस्य लक्ष्मीकृतविबुधगणापाङ्गवाणासनार्थ-
 चल्लाये नो भूरिभूतिप्रमवकुशलते भ्रूलते पालयेताम् ॥

रुक्षस्मारक्षुचापच्युतशरनिकरक्षीणलक्ष्मीकटाक्ष-
 प्रोत्कुलतपद्ममालाविलसितमहितस्फाटिकैशान्तलिङ्गम ।
 भूयाद्गूयो विभूतै मम भुवनपतेभ्रूलताद्वन्द्वमध्या
 दुत्थ तत्पुण्ड्रमूर्ध्वं जनिमरणतम स्खण्डन मण्डन च ॥

विष्णुपादादिकेशान्तस्तोत्रम् ।

३३

षीठीभूतालकान्त कुतमकुटमहादेवलिङ्गप्रतिष्ठे
लालादे नाढ्यरङ्गे विकटरतटे कैटभारेश्विराय ।
प्रोद्धाट्यैवात्मतन्द्रीप्रकटपटकुटीं प्रस्फुरन्ती स्फुटाङ्ग
पट्टीय भावनारथा चटुलमतिनटी नाटिका नाटयेत्र ॥

मालालीवालिधाङ्ग कुवलयकलिता श्रीपते कुन्तलाली
कालिन्द्यारुद्धा मूर्खो गलति हरशिर स्वधुर्नीस्पर्धया नु ।
राहुर्वा याति वक्त्र सकलशशिकलाभान्तिलोलान्तरात्मा
लोकैरालोक्यते या प्रदिशतु मतत साखिल मङ्गल न ॥

सुप्राकारा प्रसुप्ते भगवति विबुधैरप्यहृष्टस्वरूपा
व्याप्रव्योमान्तरालास्तरलमणिरुचा रञ्जिता स्पष्टभास ।
देहच्छायोद्भुमाभा रिपुवपुरगरुद्धोषरोषाभिधूम्या
केशा केशिद्विषो नो विदधतु विपुलक्षेशपाशप्रणाशम् ॥

यत्र प्रत्युपरब्रह्मवरपरिलसद्गूरिरोचिष्ठतान-
स्फूर्त्यीं मूर्तिसुरारेद्युमणिशतचितव्योमवहुनिरीक्ष्या ।
कुर्वत्पारेपयोधि उवलदकृशशिखाभास्वदौर्वाभिशङ्का
शश्वन्न शर्म दिश्यात्कलिकलुषतम पादन तत्करीटम् ॥

भ्रान्त्वा भ्रान्त्वा यदन्तस्तिभुवनगुरुरायब्दकोटीरनेका
 गन्तु नान्त समर्थो भ्रमर इव पुनर्नामिनालीकनालात् ।
 उन्मज्जन्मूर्जितश्रीस्तिभुवनमपर निममे तत्सहक्ष
 देहास्मभोधि म देयान्निरवधिरमृत दैत्यविद्वेषिणो न ॥

मत्स्य कूर्मो वराहो नरहरिणपतिवामनो जामदग्न्य
 काकुत्स्थ कसघाती मनसिजविजयी यश्च कलिकर्मविष्यन् ।
 विष्णोरशावतारा भुवनहितकरा धर्मसस्थापनाथा
 पायासुर्मी त एते गुरुतरकरुणाभारविनाशया ये ॥४९॥

यस्माद्वाचो निवृत्ता सममपि मनसा लक्षणामीक्षमाणा
 स्वार्थालाभात्परार्थव्यपगमकथनश्लाघिनो वेदवादा ।
 नित्यानन्द स्वसविनिरवधिविमलस्वान्तसक्रान्तविम्ब
 च्छायापत्यापि नित्य सुरयति यमिनो यत्तदव्यान्महो न ॥

आपादादा च शीर्षाद्विपुरिदमनघ वैष्णव य स्वचित्ते
 धत्ते नित्य निरस्ताखिलकलिकलुष सततान्त प्रमोदम् ।
 जुह्वज्जिह्वाकशानौ हरिचरितहवि स्तोत्रमन्नुपाठै
 मत्पादास्मोरुहाभ्या सततमपि नमस्कुर्महे निर्मलाभ्याम् ॥

विष्णुपादादिकेशा तस्तोत्रम् ।

३५

मोदात्पादादिकेशस्तुतिमितिरचिता कीर्तयित्वा त्रिधाम
पादाब्जद्वन्द्वसेवासमयनतमतिरक्षकेनानमेय ।
उन्मुक्त्यैवात्मनैनोनिच्यकवचक पञ्चतामेत्य भानो-
र्विम्बान्तर्गोचर स प्रविशति परमानन्दमात्मस्वरूपम् ॥

इति श्रीमत्परमहसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्रीगोविदभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य
श्रीमच्छकरभगवत् कुतौ
विष्णुपादादिकेशान्तस्तोत्र
सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

॥ पाण्डुरङ्गाष्टकम् ॥

महायोगपीठे तटे भीमरथा
वर पुण्डरीकाय दातु सुनीन्दै ।
समागत्य तिष्ठन्तमानन्दकन्द
परब्रह्मलिङ्ग भजे पाण्डुरङ्गम् ॥ १ ॥

तटिद्वासस नीलमेघावभास
रमामन्दिर सुन्दर चित्प्रकाशम् ।
वर त्विष्टकाया समन्यस्तपाद
परब्रह्मलिङ्ग भजे पाण्डुरङ्गम् ॥ २ ॥

प्रमाण भवालधेरिद मामकाना
नितम्ब कराभ्या धृतो यन तस्मात् ।
विधातुर्वसत्यै धृतो नाभिकोश
परब्रह्मलिङ्ग भजे पाण्डुरङ्गम् ॥ ३ ॥

स्फुरत्कौस्तुभालकृत कण्ठदेशे
 श्रिया जुष्टकेयूरक श्रीनिवासम् ।
 शिव शन्तमीड्य वर लोकपाल
 परब्रह्मलिङ्ग भजे पाण्डुरङ्गम् ॥ ४ ॥

शरवन्दविम्बानन चारुहास
 लसत्कुण्डलाकान्तगण्डस्थलान्तम् ।
 जपारागविम्बाधर कञ्जनेत्र
 परब्रह्मलिङ्ग भजे पाण्डुरङ्गम् ॥ ५ ॥

किरीटोज्ज्वलतसर्वदिक्प्रान्तभाग
 सुरैरचित दिव्यरत्नैरनर्थे ।
 त्रिभङ्गाकृतिं बह्माल्यावतस
 परब्रह्मलिङ्ग भजे पाण्डुरङ्गम् ॥ ६ ॥

विभु वेणुनाद चरन्त दुरन्त
 स्वय लीलया गोपवेष दधानम् ।
 गवा बृन्दकानन्दद चारुहास
 परब्रह्मलिङ्ग भजे पाण्डुरङ्गम् ॥ ७ ॥

अज रुक्मणीप्राणसजीवन त
 पर धाम कैवल्यमेक तुरीयम् ।
 प्रसन्न प्रपन्नार्तिह देवदेव
 परब्रह्मलिङ्ग भजे पाण्डुरङ्गम् ॥ ८ ॥

स्तव पाण्डुरङ्गस्य वै पुण्यद चे
 पठन्त्येकचित्तेन भक्त्या च नित्यम् ।
 भवाम्भोनिधि ते वितीत्वान्तकाले
 हरेरालय शाश्वत प्राप्नुवन्ति ॥ ९ ॥

इति श्रीमत्परमहसपरिवाजकाचार्यस्य
 श्रीगोविदभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य
 श्रामच्छकरभगवत कृतौ
 पाण्डुरङ्गाष्टक सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

॥ अच्युताष्टकम् ॥

अच्युत केशव रामनारायण
कृष्णदामोदर वासुदेव हरिम् ।
श्रीधर माधव गोपिकावल्लभ
जानकीनायक रामचन्द्र भजे ॥ १ ॥

अच्युत केशव सत्यभामाधव
माधव श्रीधर राधिकाराधितम् ।
इन्दिरामन्दिर चेतसा सुन्दर
देवकीनन्दन नन्दज सदधे ॥ २ ॥

विष्णवे जिष्णवे शङ्खिने चक्रिणे
रुक्मणीरागिणे जानकीजानये ।
वल्लवीवल्लभायार्चितायात्मने
कसविध्वसिने वशिने ते नम ॥ ३ ॥

कृष्ण गोविन्द हे राम नारायण
श्रीपते वासुदेवाजित श्रीनिधे ।
अच्युतानन्त हे माधवाधोक्षज
द्वारकानायक द्रौपदीरक्षक ॥ ४ ॥

राक्षसक्षोभित सीतया शोभितो
दण्डकारण्यभूपुण्यताकारणम् ।
लक्ष्मणेनान्वितो वानरै सेवितो
उगस्त्यसपूजितो राघव पातु माम् ॥ ५ ॥

धेनुकारिष्ठहानिष्ठक्षहेषिणा
केशिहा कसहदशिकावादक ।
पूतनाकापक सूरजाखलनो
बालगोपालक पातु मा सर्वदा ॥ ६ ॥

विद्युदुद्योतवत्प्रसुरद्वासस
प्रावृद्धम्भोदवत्प्रोल्लसद्विग्रहम् ।
वन्यथा मालया शोभितोर स्थल
लोहिताद्विद्वय वारिजाक्ष भजे ॥ ७ ॥

अच्युताष्टकम् ।

४१

कुञ्जितै कुन्तलै भ्राजमानानन
रत्नमौलिं लसत्कुण्डलं गण्डयो ।
हारकेयूरक कङ्कणप्रोज्जवल
किंकिणीमञ्जुल इथामलं त भजे ॥ ८ ॥

अच्युतस्याष्टक य पठेदिष्टद
प्रेमत प्रत्यह पूरुष सस्पृहम् ।
वृत्तत सुन्दर वेदविश्वभर
तस्य वश्यो हरिर्जीयते सत्वरम् ॥ ९ ॥

इति श्रीमत्परमहसपरिव्रजकाचायस्य
श्रीगोविदभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य
श्रीमच्छकरभगवत कृतौ
अच्युताष्टक सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

॥ कृष्णाष्टकम् ॥

श्रियास्त्रियो विष्णु स्थिरचरगुरुर्वेदविषयो
धिया साक्षी शुद्धो हरिसुरहन्ताब्जनयन ।
गदी शङ्खी चक्री विमलवनमाली स्थिररुचि
शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषय ॥१॥

यत् सर्वं जात वियदनिलमुख्यं जगदिद्
स्थितौ नि शेष योऽवति निजसुखाशेन मधुहा ।
लये सर्वं स्वस्मिन्हरति कलया यस्तु स विभु
शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषय ॥२॥

असूनायम्यादौ यमनियममुर्यै सुकरणै
निरुद्धथेद् चित्तं हृदि विलयमानीय सकलम् ।
यमीङ्ग्य पश्यन्ति प्रवरमतयो मायिनमसौ
शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषय ॥

पृथिव्या तिष्ठन्यो यमयति महीं वेद न धरा
 यमित्यादौ वेदो वदति जगतामीशममलम् ।
 नियन्तार ध्येय मुनिसुरनृणा मोक्षदमसौ
 । शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषय ॥

महेन्द्रादिदेवो जयति दितिजान्यस्य बलतो
 न कस्य स्वातन्त्र्य कचिदपि कृतौ यत्कृतिमृते ।
 बलारातेगर्वं परिहरति योऽसौ विजयिन
 शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषय ॥

विना यस्य ध्यान ब्रजति पशुता सूकरमुखा
 विना यस्य ज्ञान जनिमृतिभय याति जनता ।
 विना यस्य स्मृत्या कृमिशतजनिं याति स विभु
 शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषय ॥६॥

नरातङ्कोदृङ्क शरणशरणो भ्रान्तिहरणो
 घनश्यामो वामो ब्रजशिशुवयस्योऽर्जुनसुख
 स्वयभूर्भूताना जनक उचिताचारसुखद
 शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषय ॥७॥

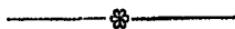
यदा धर्मगळानिर्भवति जगता क्षोभकरणी
 तदा लोकस्वामी प्रकटितवपु सेतुधृदज ।
 सता धाता स्वन्द्धो निगमगणगीतो ब्रजपति
 शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषय ॥८॥

इति श्रीमत्परमहसपरिव्राजकाचार्यस्य
 श्रीगोविंदभगवत्पूज्यादशिष्यस्य
 श्रीमन्त्करभगवत् कृतौ
 कृष्णाष्टक सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

॥ हरिस्तुतिः ॥



स्तोष्ये भक्त्या विष्णुमनादिं जगदादिं
यस्मिन्नेतत्सृतिचक्रं भ्रमतीत्थम् ।
यस्मिन्दृष्टे नश्यति तत्सृतिचक्रं
त ससारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥ १ ॥

यस्यैकाशादित्थमशेषं जगदेत-
प्रादुर्भूतं येन पिनङ्गं पुनरित्थम् ।
येन व्याप्तं येन विबुद्धं सुखदुखै
स्त ससारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥ २ ॥

सर्वज्ञो यो यश्च हि सर्वं सकलो यो
यश्चानन्दोऽनन्तगुणो यो गुणधामा ।
यश्चाव्यक्तो व्यस्तसमस्तं सदसद्य
स्त ससारध्वान्तविनाशं हरिमीडे ॥ ३ ॥

यस्मादन्यन्नास्त्यपि नैव परमार्थ
दृश्यादन्यो निर्विषयज्ञानमयत्वात् ।
ज्ञात्ज्ञानज्ञेयविहीनाऽपि सदा ज्ञ
स्त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ४ ॥

आचार्येभ्यो लब्धसुसूक्ष्मान्युततत्त्वा
वैराग्येणाभ्यासबलाचैव द्रष्टिस्ना ।
भक्त्यैकाङ्ग्रेध्यानपरा य विदुरीश
त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ५ ॥

प्राणानायम्योमिति चित्त हृदि रुध्वा
नान्यत्स्मृत्वा तत्पुनरत्रैव विलाप्य ।
क्षणे चित्त भावशिरसमीति विदुर्य
त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ६ ॥

य ब्रह्माख्य देवमनन्य परिपूर्ण
हृत्स्थ भक्तेलभ्यमज सूक्ष्ममतकर्यम् ।
ध्यात्वात्मस्थ ब्रह्मविदो य विदुरीश
त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ७ ॥

माक्षातीत स्वात्मविकासात्मविबोध
 ज्ञेयातीत ज्ञानमय हृद्युपलभ्य ।
 भावग्राह्यानन्दमनन्य च विदुर्य
 त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ८ ॥

यद्यद्वेष्य वस्तुसतत्व विषयाख्य
 तत्तद्वद्वैवेति विदित्वा तदह च ।
 ध्यायन्त्येव य सनकाद्या मुनयोऽज
 त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ९ ॥

यद्यद्वेष्य तत्तदह नेति विहाय
 स्वात्मज्योतिर्ज्ञानमयानन्दमवाप्य ।
 तस्मिन्नस्मीत्यात्मविदो य विदुरीश
 त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ १० ॥

हित्वाहित्वा दृश्यमशेष सविकल्प
 मत्वा शिष्ट भाद्रशिमात्र गगनाभम् ।
 त्यक्त्वा देह य प्रविशन्त्यच्युतभक्ता-
 स्त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ११ ॥

सर्वंत्रास्त सर्वशरीरी न च सर्व
 सर्वं वेत्येवेह न य वेत्ति च सव ।
 सर्वंत्रान्तर्यामितयेत्थ यमयन्य-
 न्त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ १२ ॥

सर्वं दृष्टा स्वात्मनि युक्त्या जगदेत-
 दृष्टात्मान चैवमज सर्वजनेषु ।
 सर्वात्मकोऽस्मीति विदुर्य जनहत्यथ
 त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ १३ ॥

सर्वत्रैक पश्यति जिघत्यथ भुज्ञे
 सप्तष्ठा श्रोता बुध्यति चेत्याहुरिम यम ।
 साक्षी चास्ते कर्तृषु पश्यन्निति चान्ये
 त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ १४ ॥

पश्यत्पशुणवन्नक विजानन्मसयन्स
 जिघद्विभ्रहेहमिम जीवतयेत्थम् ।
 इत्यात्मान य विदुरीश विषयज्ञ
 त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ १५ ॥

जाप्रदृष्ट्वा स्थूलपदार्थानथ माया
 दृष्ट्वा स्वप्रेऽथापि सुषुप्तौ सुखनिद्राम ।
 इत्यात्मान वीक्ष्य मुदास्त च तुरीये
 त समारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ १६ ॥

पश्यच्छुद्धोऽप्यक्षर एका गुणभेदा
 आनाकारान्स्फाटिकवद्भाति विचित्र ।
 भिन्नशिल्पश्चायमज कर्मफलैर्य
 स्त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ १७ ॥

ब्रह्मा विष्णु रुद्रहुताशौ रविचन्द्रा
 विन्द्रो वायुर्यज्ञ इतीत्थ परिकल्प्य ।
 एक मन्त य बहुधाहुर्मतिभेदा
 त समारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ १८ ॥

सत्य ज्ञान शुद्धमनन्त व्यतिरिक्त
 शान्त गूढ निष्कलमानन्दमनन्यम ।
 इत्याहादौ य वरुणोऽसौ भृगवेऽज
 त समारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ १९ ॥

कोशानेतान्पञ्च रसादीनतिहाय
 ब्रह्मास्मीति स्वात्मनि निश्चित्य हशिस्थम ।
 पित्रा शिष्टो वेद भूगुर्य यजुरन्ते
 त समारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ २० ॥

येनाविष्टो यस्य च शक्त्या यदधीन
 क्षेत्रज्ञोऽय कारयिता जन्तुषु कर्तु ।
 कर्ता भोक्तात्माव हि यन्छक्त्यधिरूढ
 म्त समारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ २१ ॥

सृष्टा सर्वं स्वात्मतयैवत्थमतकर्य
 व्याप्याथान्त कृत्खमिद स्तृष्टमशेषम ।
 मत्त त्यज्ञाभूतपरमात्मा स य एक
 स समारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ २२ ॥

वेदान्तैश्चाध्यात्मिकशास्त्रैश्च पुराणै
 शास्त्रैश्चान्यै सान्त्वततन्त्रैश्च यमीशम ।
 इष्टाथान्तउचेतसि बुद्धा विविशुर्य
 त समारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ २३ ॥

हरिस्तुति ।

५३

अद्याभक्षितध्यानशमादैर्यतमाने-
ज्ञातु शक्यो देव हैवाशु य ईश ।
दुर्विज्ञेयो जन्मशतैश्चापि विना तै-
स्त मसारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ २४ ॥

यस्यात्कर्णे स्वात्मविभूत परमार्थ
सर्वं खल्वित्यत्र निरुक्त श्रुतिविद्धि ।
तज्जातित्वादजिधतरङ्गाभमभिज्ञ
त मसारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ २५ ॥

दद्वा गीतास्वध्वरतस्व विधिनाज
भक्त्या गुर्व्या लभ्य हृदिस्थ हृशिमात्रम् ।
ध्यात्वा तस्मिन्नास्म्यहमित्यत्र विदुर्य
त मसारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ २६ ॥

क्षेत्रज्ञत्वं प्राप्य विभु पञ्चमुखैर्यो
सुङ्गेऽजस्त भोग्यपदार्थान्प्रकृतिस्थ ।
क्षेत्रे क्षेत्रेऽपित्वन्दुवदेको बहुधास्ते
त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ २७ ॥

युक्त्यालोङ्ग व्याभवचाभ्यत्र हि लभ्य
 अत्रभ्रग्नान्तरावद्धि पुरुषारथ ।
 याऽह माऽमौ साऽभ्यहमवात् विदुर्य
 त समारध्वान्तविनाश हरिमीड ॥ २८ ॥

प्रकाक्त्यानकशर्गीरम्थामम ज्ञ
 य विज्ञायहैव म एगाशु भवन्ति ।
 यम्मलेलीना नह पुनजन्म लभन्त
 त समारध्वान्तावनाश हरिमीड ॥ २९ ॥

द्रन्दैकत्व यच्च मधुब्राह्मणवास्ये
 कृत्वा शकापामनमासान् विभूत्या ।
 योऽमौ सोऽह माऽभ्यहमेवेति विदुर्य
 त समारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ३० ॥

याऽय दह चेष्टितान्त करणम्थ
 मूर्ये चासौ तापायता सोऽभ्यहमेव ।
 इत्यात्मैक्यापाभनया य विदुरीश
 त समारध्वान्तावनाश हरिमीडे ॥ ३१ ॥

विज्ञानाशो यस्य सत शक्त्यधिरूढा
 बुद्धिर्वृध्यत्यन्न बाहर्वेध्यपदार्थान् ।
 नैवान्त स्थ बुध्यति य बोधयितार
 त समारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ३२ ॥

कोऽय देह देव इतात्थ सुविचार्य
 ज्ञाता श्राता मन्त्रयिता चैष हि देव ।
 इत्यालोक्य ज्ञाश इहास्मीति विदुर्य
 त समारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ३३ ॥

का ह्यवान्यादात्मनि न म्यादयमष
 ह्येवानन्द प्राणिति चाषानिति चेति ।
 इत्यस्तित्व वक्त्युपपत्त्या श्रुतिरषा
 त समारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ३४ ॥

प्राणो वाह वाक्छ्रवणादीनि मना वा
 बुद्धिर्वाह व्यस्त उताहोऽपि समस्त ।
 इत्यालोक्य ज्ञसिरिहास्मीति विदुर्य
 त समारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ३५ ॥

नाह प्राणो नैव शरीर न मनोऽह
 नाह बुद्धिर्नाहमहकागधियौ च ।
 योऽत्र ज्ञाश मोऽस्म्यहमेवेति विदुर्य
 त समारध्वान्तविनाश हरिमीड ॥ ३६ ॥

सत्तामात्र कवलविज्ञानमज म-
 त्सूक्ष्म नित्य तत्त्वमसीत्यात्मसुताय ।
 साम्रामन्ते प्राह पिता च विभुमाय
 त समारध्वान्तविनाश हरिमीड ॥ ३७ ॥

मूर्तमूर्ते पूर्वमपाह्याथ समाधौ
 इद्य सर्वं नेति च नतीति विहाय ।
 चैतन्याशे स्वात्मनि सन्त च विदुर्य
 त समारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ३८ ॥

ओत्र प्रोत्र यत्र च सर्वं गगनान्त
 योऽस्थूलानण्वादिषु सिद्धोऽक्षरसङ्ग ।
 ज्ञातातोऽन्यो नेत्युपलभ्यो न च वेद्य
 स्त समारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ३९ ॥

तावत्सर्वं सत्यमिद्याभाति यदेत्-
 यावत्सोऽस्मीत्यात्मनि यो ज्ञो न हि इष्ट ।
 हृष्टे यस्मिन्सर्वमसत्य भवतीद्
 त सप्तारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ४० ॥

रागामुक्तं लोहयुत इम यथामौ
 योगाष्ट्राङ्गैरुज्ज्वलितज्ञानमयामौ ।
 दग्ध्वात्मान ज्ञ परिशिष्ट च विदुर्ये
 त सप्तारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ४१ ॥

य विज्ञानज्योतिषमाद्य सुविभान्त
 हृष्टकेनद्वग्न्योक्तसमीड्य तटिदाम्भ् ।
 भक्त्याराध्येहैव विज्ञान्त्यात्मनि मन्त
 त सप्तारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ४२ ॥

पायाद्वक्त स्वात्मनि मन्त पुरुष या
 भक्त्या स्तौतीत्याङ्गिरम विष्णुरिम माम ।
 इत्यात्मान स्वात्मनि महृत्य मदैक
 स्त सप्तारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ४३ ॥

इति श्रीमत्परमहसपरिव्राजकाचायस्य श्रीगोविदभग-
 वत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत् कृतौ
 हरिस्तुति सपूर्णा ॥

॥ श्री ॥

॥ गोविन्दाष्टकम् ॥

✽

सत्य ज्ञानमनन्तं नित्यमनाकाशं परमाकाशं
गोष्ठप्राङ्गणरिद्वृणलालमनायामं परमायामम् ।
मायाकलिपतनानाकारमनाकारं भुवनाकारं
कृमामानाथमनाथं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥ १ ॥

मृतस्थामत्सीहात यशोदाताडनशैशवमन्त्राम
व्यादितवक्रालाकितलाकालोकचतुदशलोकालिम् ।
लोकत्रयपुरमूलस्तम्भं लोकालाकमनालोक
लोकेशं परमेशं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥ २ ॥

त्रैविष्टपरिपुर्वीरग्रं क्षितिभारग्रं भवरागग्रं
कैवल्यं नवनीताहारमनाहारं भुवनाहारम् ।
वैमल्यस्फुटचेतोवृत्तिविशेषाभासमनाभास
शैव केवलशान्तं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥ ३ ॥

गोविन्दाष्टकम् ।

५७

गोपाल प्रभुलीलाविग्रहगोपाल कुलगोपाल
गोपीखेलनगोवधनधृतिलीलालालितगोपालम् ।
गोभिर्निंगदितगोविन्दस्फुटनामान बहुनामान
गोधीगोचरदूर प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥ ४ ॥

गोपीमण्डलगोष्ठीभेद भद्रावस्थमभेदाभ
शश्वद्गोखुरनिर्धूतोद्रुतधूलीधूसरसौभाग्यम् ।
अद्वाभक्तिगृहीतानन्दमचिन्त्य चिन्तितसद्वाव
चिन्तामणिमहिमान प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥

क्षानव्याकुलयोषिद्वस्त्रमुपादायागमुपारुद्ध
व्यादित्सन्तीरथ दिग्वस्त्रा दातुमुपाकर्षन्त ता ।
निर्धूतद्वयशोकविमोह बुद्ध बुद्धेरन्त स्थ
सत्तामात्रशरीर प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥ ५ ॥

कान्त कारणकारणमादिमनादिं कालघनाभास
कालिन्दीगतकालियशिरसि सुनृत्यन्त मुहुरत्यन्तम् ।
काल कालकलातीत कलिताशष कलिदोषन्न
कालत्रयगतिहेतु प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥ ६ ॥

बृन्दावनभुवि बृन्दारकगणबृन्दाराधितवन्याया
 कुन्दाभामलभन्दस्मेरसुधानन्द सुमहानन्दम् ।
 वन्याशेषमहामुनिमानसवन्यानन्दपदद्वन्द्व
 नन्याशेषगुणादिध प्रणमन गोविन्द परमानन्दम् ॥८॥

गोविन्दाष्टकमेतदधीत गोविन्दार्थितचता या
 गोविन्दाच्युत माधव विष्णा गोकुलनायक कृष्णेति ।
 गोविन्दाक्षिसरोजध्यानसुधाजलधौतसमस्ताधा
 गोविन्द परमानन्दामृतमन्तस्थ स तमभ्येति ॥ ९ ॥

इति श्रीमत्परमहसपरिव्राजकाचार्यस्य

श्रीगोवि दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य
 श्रीमच्छकरभगवत कृतौ
 गाविन्दाष्टक सपूर्णम् ॥



॥ श्रीः ॥

॥ भगवन्मानसपूजा ॥

—————*

हृष्मभोजे कृष्ण सजलजलदश्यामलतनु
सरोजाक्ष ऋग्वी मकुटकटकाद्याभरणवान् ।
शरद्राकानाथप्रतिमवदन श्रीमुरलिका
वहन्ध्येयो गोपीगणपरिवृत कुडुमचित ॥ १ ॥

पयोम्भोधेद्वीपान्मम हृदयमायाहि भगव
न्मणिब्रातभ्राजत्कनकवरपीठ भज हरे ।
सुचिहौ ते पादौ यदुकुलज ननेडिम सुजलै
र्गहाणेद दूर्वाफलजलवदर्थ्य मुररिपो ॥ २ ॥

त्वमाचामोपेन्द्र त्रिदशसरिदम्भोऽतिशिंशिर
भजस्वेम पञ्चामृतफलरसाप्तावमघहन ।
शुनव्या कालिन्द्या अपि कनककुम्भाख्यितमिद
जल तेन ल्लान कुरु कुरु कुरुज्वान्मनकम ॥ ३ ॥

तटिद्वृणे वस्त्र भज विजयकान्ताधहरण
 प्रलम्बारिध्रातमृदुलमुपवीत कुरु गल ।
 ललाट पाटीर मृगमन्त्युन धारय हरे
 गहाणेद मास्य शतदलतुलस्यादिरचितम ॥ ४ ॥

दशाङ्ग धूप सद्वरद चरणाप्रपितामद
 मुख दीपनेन्दुप्रभविरजम नव कलय ।
 इमौ पाणी वाणीपतिनुत मकपूरगजमा
 विशोध्यामे न्त सलिलमिदमाचाम नृहरे ॥ ५ ॥

सदा तृपान्न षड्सवदखिलब्य आनयुत
 सुवर्णामत्रे गोघृतचषकयुक्त स्थितमिदम ।
 यशादासूना तत्परमदययाशान सखिभि
 प्रमाद वाञ्छद्धि मह तदनु नार पर्व विभा ॥ ६ ॥

मचूर्ण ताम्बूल मुखशुचिकर भक्षय हर
 फल स्वादु प्रीत्या पारमलवदास्वादय चरम ।
 सपर्यापर्यास्तै कनकभणिजात स्थितमिद
 प्रदीपैरारार्ति जलधितनयाश्लिष्ट रचये ॥ ७ ॥

विजातीये पुष्पैर्गतिसुरभिभिर्विल्वतुलमी
 युतश्चेम पुष्पाञ्चालमजित त मूर्धि निष्ठ ।
 तव प्रादक्षिण्यक्रमणमधविध्वमि रचित
 चतुर्वार विष्णा जनिपथगतश्चान्तविदुषा ॥ ८ ॥

नमस्कारोऽश्टाङ्ग सकलदुरत्थवसनपदु
 कृत नृत्य गीत स्तुतरपि रमाकान्त त इथम ।
 तव प्रीत्यै भूयादहमपि च नामस्तव विभा
 कत छिद्र पूर्ण कुरु कुरु नमस्तऽस्तु भगवन् ॥ ९ ॥

सदा मेव्य कृष्ण सजलघननील करतले
 दधाना दध्यन्न तदनु नवनीत मुरलिकाम ।
 कदाचित्कान्ताना कुचकलशपत्रालिरचना
 समाप्तक िनग्नै सह शिशुविहार विरचयन् ॥ १० ॥

इत श्रीमत्परमहसपारब्राजकाचार्यस्य
 श्रीगोविदभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य
 श्रीमच्छकरभगवत कर्ता
 भगवन्मानसपूजा सपूर्णा ॥

॥ श्री ॥

॥ मोहमुद्गरः ॥

→○←

भज गाविन्द भज गोविन्द
भज गोविन्द मूढमते ।
सप्राप्ते सनिहिते काले
न हि न हि रक्षति दुर्कृष्टकरण ॥ १ ॥

मूढ जहीहि धनागमतृष्णा
कुरु सद्गुर्द्विं मनसि वितृष्णाम ।
यस्त्वंभस निजकर्मोपात्त
वित्त तेन विनोदय चित्तम् ॥ २ ॥

नारीस्तनभरनाभीदेश
दृष्ट्वा मा गा माहावशम् ।
एतन्मासवसादिविकार
मनसि विचिन्तय वार वारम् ॥ ३ ॥

नलिनीदलगतजलमतितरल
तद्वज्जीवितमतिशयचपलम् ।
विद्धि व्याध्यभिमानधस्त
लाक शोकहत च समस्तम् ॥ ४ ॥

यावद्वित्तोपार्जनसक्त
स्तावश्चिजपरिवारो रक्त ।
पश्चाज्जीवति जर्जरदेह
वार्ता कोऽपि न प्रच्छाति गेहे ॥ ५ ॥

यावत्पवनो निवसति देहे
तावत्पूच्छति कुशल गेहे ।
गतवति वायौ दहापाये
भार्या विभ्यति तस्मिन्काये ॥ ६ ॥

बालस्तावलकीडासक्त
म्सरणस्तावत्तरणीसक्त ।
बृद्धस्तावश्चिन्तासक्त
परे ब्रह्मणि कोऽपि न सक्त ॥ ७ ॥

का ते कान्ता कम्त पुत्र
 मसारोऽयमतीव त्राचन ।
 कस्य त्वं कुत आयात
 स्तत्त्वं चिन्तय यतिद भान्त ॥ ८ ॥

मत्सङ्गत्वे नि भङ्गत्व
 नि सङ्गत्वं निर्मोहत्वम् ।
 निर्मोहत्वं निश्चलितत्व
 निश्चलितत्वं जीर मुक्ति ॥ ९ ॥

बयसि गते क कामावकार
 शुष्क नीर क कासार ।
 क्षणे वित्त क परिवारो
 ज्ञात तत्त्वे क समार ॥ १० ॥

मा कुरु धनजनयौवनगर्व
 हरति निमेषात्काल सर्वम् ।
 मायामयमिदमखिल हित्वा
 ब्रह्मपद त्वं प्रविश विदित्वा ॥ ११ ॥

दिनयामिन्यौ साय प्रात
 शिशिरवसन्तौ पुनरायात ।
 काल क्रीडति गच्छत्यायु
 स्तदपि न मुञ्चत्याशावायु ॥ १२ ॥

का ते कान्ताधनगतचिन्ता
 वातुल किं तव नास्ति नियन्ता ।
 त्रिजगति सज्जनसगतिरेका
 भवति भवार्णवतरणे नौका ॥ १३ ॥

जटिली मुण्डी लुभितकेश
 काषायाम्बरबहुकृतवेष ।
 पश्यन्नपि च न पश्यति मूढो
 बुदरनिमित्त बहुकृतवेष ॥ १४ ॥

अङ्ग गलित पलित मुण्ड
 दशनविहीन जात तुण्डम् ।
 बृद्धो याति गृहीत्वा दण्ड
 तदपि न मुञ्चत्याशापिण्डम् ॥ १५ ॥

अप्रे वहि प्रष्ठे भानू
 रात्रौ चुबुकसमर्पितजानु ।
 करतलभिक्षस्तरुतलवास
 स्तदपि न मुचलाशापाश ॥ १६ ॥

कुरुत गङ्गासागरगमन
 व्रतपरिपालनमथवा दानम् ।
 गङ्गानविहीन सर्वमतेन
 मुकिंत न भजति जन्मशतेन ॥ १७ ॥

सुरमन्दिररुमूलनिवास
 शश्या भूतलमजिन वास ।
 सर्वपरिग्रहभोगत्याग
 कस्य सुख न करोति विराग ॥ १८ ॥

योगरतो वा भोगरतो वा
 सगरतो वा सगविहीन ।
 यस्य ब्रह्मणि रमते विच्च
 नन्दति नन्दति नन्दत्येव ॥ १९ ॥

अगवद्वीता किंचिदधीता
 गङ्गाजललवकणिका पीता ।
 सकृदपि येन मुरारिसमर्चा
 क्रियते तस्य यमेन न चर्चा ॥ २० ॥

पुनरपि जनन पुनरपि मरण
 पुनरपि जननीजठरे शथनम् ।
 इह ससारे बहुदुस्तारे
 कृपयापारे पाहि मुरारे ॥ २१ ॥

रथ्याकर्पटविरचितकन्थ
 पुण्यापुण्यविवर्जितपन्थ ।
 योगी योगनियोजितचित्तो
 रमते बालोन्मत्तवदेव ॥ २२ ॥

कस्त्व कोऽह कुत आयात
 का मे जननी को मे तात ।
 इति परिभावय सर्वमसार
 विश्व त्यक्त्वा स्वप्रविचारम् ॥ २३ ॥

त्वयि मयि चान्यत्रैको विष्णु
 वर्यर्थं कुप्यसि मर्यसहिष्णु ।
 सर्वस्मिन्नपि पश्यात्मान
 सर्वत्रोत्सूज भेदाङ्गानम् ॥ २४ ॥

शत्रौ मित्रे पुत्रे बन्धौ
 मा कुरु यत्र विश्रहसन्धौ ।
 भव समचित्तं सर्वत्र त्वं
 वाव्यस्थचिराद्यदि विष्णुत्वम् ॥ २५ ॥

काम क्रोधं लोभं मोहं
 त्यक्त्वात्मानं भावय काऽहम् ।
 आत्मशानविहीना मूढा
 स्ते पच्यन्ते नरकानिगूढा ॥ २६ ॥

गेय गीतानामसहस्र
 ध्यय श्रीपतिरूपमजस्म् ।
 नेय सज्जनसङ्गे चित्त
 देय दीनजनाय च वित्तम् ॥ २७ ॥

सुखत क्रियते रामाभोग
 पश्चाद्गुन्त शरीरे रोग ।
 यद्यपि लोके मरण शरण
 तदपि न मुञ्चति पापाचरणम् ॥ २८ ॥

अर्थमनये भावय नित्य
 नास्ति तत सुखलेश सत्यम् ।
 पुत्रादपि धनभाजा भीति
 सर्वत्रैषा विहिता रीति ॥ २९ ॥

प्राणायाम प्रत्याहार
 नित्यानित्यविवेकविचारम् ।
 जाप्यसमेतसमाधिविधान
 कुर्ववधान महदवधानम् ॥ ३० ॥

गुरुचरणास्तुजानिर्भरभक्त
 ससारादचिराद्वत्तु मुक्त ।
 सेन्द्रियमानसनियमादेव
 द्रष्ट्यसि निःहृदयस्थ देवम् ॥ ३१ ॥

इति मोहमुद्दर सपूर्ण ॥

॥ श्री ॥

॥ कनकधारास्तोत्रम् ॥

— — * —

अङ्ग हरे पुलकभूषणमाश्रयन्ती
भृङ्गाङ्गनेव सुकुलाभरण तमालम् ।
अङ्गीकृताखिलविभूतिरपाङ्गलीला
माङ्गल्यदाम्नु मम मङ्गलदत्तसाया ॥ १ ॥

मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारे
प्रेमत्रप्रणिहितानि गतागतानि ।
मालाहशोमधुकरीव महोत्पले या
सा मे श्रिय दिशतु सागरसभवाया ॥ २ ॥

विश्वामरन्द्रपदविभ्रमदानदक्ष
मानन्दहेतुरधिक मुरविद्विषोऽपि ।
ईषन्निषीदतु मथि भणमीक्षणार्द्ध
मिन्दीवरोदरसहादरमिन्दराया ॥ ३ ॥

आमीलिताक्षमधिगम्य मुदा मुकुन्द
 मानन्दकन्दमनिमेषमनङ्गतन्त्रम् ।
 आकेकरस्थितकनीनिकपक्षमनेत्र
 भूत्यै भवेन्मम मुजगशयाङ्गनाया ॥ ४ ॥

बाहून्तरे मधुजित श्रितकौस्तुभेया
 हारावलीवि हरिनीलमयी विभाति ।
 कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला
 कल्याणमावहतु मे कमलालयाया ॥ ५ ॥

कालान्बुदालिललितारसि कैटभार-
 धीराघरे स्फुरति यत्तटिदङ्गनेव ।
 मातु समस्तजगता महनीयमूर्ति
 र्भद्राणि मे दिशतु भागवन दनाया ॥ ६ ॥

प्राप्त पद प्रथमत खलु यत्प्रभावा-
 न्माङ्गल्यभाजि मधुमाथिनि मन्मथेन ।
 मथ्यापतेत्तदिह मन्थरमीक्षणार्धि
 मन्दालस च मकरालयकन्यकाया ॥ ७ ॥

दथादयानुपवनो द्रविणाम्बुधारा
 मस्मिन्न किञ्चन विहगशिशौ विषणे ।
 दुष्कर्मघर्मपनीय चिराय दूर
 नारायणप्रणयिनीनयनाम्बुवाह ॥ ८ ॥

इष्टाविशिष्टमतयोऽपि यथा दयाद्र्द-
 दृष्ट्या त्रिविष्टपपद सुलभ लभन्ते ।
 दृष्टि प्रहृष्टकमलोदरदीपिरिष्टा
 पुष्टि कृषीष्ट मम पुष्करविष्टराया ॥ ९ ॥

गीर्देवतेति गरुडध्वजसुन्दरीति
 शाकभरीति शशिशेखरवल्लभेति ।
 सृष्टिस्थितिप्रलयकलिषु सस्थितायै
 तस्यै नमस्त्रिभुवनैकगुरोस्तरुण्यै ॥ १० ॥

श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभकर्मफलप्रसूत्यै
 रत्यै नमोऽस्तु रमणीयगुणार्णवायै ।
 शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्रनिकेतनायै
 पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तमवलभायै ॥ ११ ॥

कनकधारास्तोत्रम् ।

४३

नमोऽस्तु नालीकनिभाननायै
नमोऽस्तु दुरधोदधिजन्मभूम्यै ।
नमोऽस्तु सोमामृतसोदरायै
नमोऽस्तु नारायणवल्लभायै ॥ १२ ॥

सप्तकराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि
साम्राज्यदानविभवानि सरोकहाष्ठि ।
त्वद्वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि
मामेव मातरनिश कलयन्तु मान्ये ॥ १३ ॥

यत्कटाक्षसमुपासनाविधि
सेवकस्य सकलार्थसपद ।
सतनोति वचनाङ्गमानसै
स्त्वा मुरारिहृष्येश्वरीं भजे ॥ १४ ॥

सरसिजनिलये सरोजहस्ते
घवलतमाशुकगन्धमाल्यशोभे ।
भगवति हरिवल्लभे मनोङ्गे
त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद महाम् ॥ १५ ॥

दिव्यस्तिभि कनककुम्भमुखावसृष्ट
 स्वर्वाहिनीविमलचारुजलपुताङ्गीम् ।
 प्रातर्नेमामि जगता जननीमशाष
 लोकाधिनाथगृहिणीममृताद्विपुन्नीम् ॥ १६ ॥

कमल कमलाक्षवल्लभ त्व
 करुणापूरतरङ्गितैरपाङ्गे ।
 अवलोकय मामकिचनाना
 प्रथम पात्रमकृत्रिम दयाया ॥ १७ ॥

स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरभीभिरन्वह
 त्रयीमर्यां त्रिभुवनमातर रमाम ।
 गुणाधिका गुरुतरभाग्यभाजिनो
 भवन्ति त भुवि बुधभाविताशया ॥ १८ ॥

इति श्रीमत्परमहसपरित्राजकाचायस्य श्रीगोविदभग-
 वत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ
 कनकधारास्तोत्र सपूर्णम् ॥

॥ श्री ॥

॥ अन्नपूर्णाष्टकम् ॥



नित्यानन्दकरी वराभयकरी सौन्दर्यरत्नाकरी
निर्धूताखिलदोषपावनकरी प्रत्यक्षमाहेश्वरी ।
प्रालयाचलवशपावनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षा दहि कृपावलम्बनकरी माताअपूर्णेश्वरी ॥ १ ॥

नानारत्नविचित्रभूषणकरी हेमाम्बराङ्गम्बरी
सुकताहारविछम्बमानविलमद्वक्षोजकुम्भान्तरी ।
काश्मीरागहवासिताङ्गहचिर काशीपुराधीश्वरी
भिक्षा दाहि कृपावलम्बनकरी माताअपूर्णेश्वरी ॥ २ ॥

योगानन्दकरी रिपुश्चयकरी धर्मैकनिष्ठाकरी
चन्द्रार्कानलभासमानलहरी त्रैलोक्यरक्षाकरी ।
सर्वैश्वर्यकरी तप फलकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षा देहि कृपावलम्बनकरी माताअपूर्णेश्वरी ॥ ३ ॥

कैलासाचलकन्दरालयकरी गौरी ह्युमाशाकरी
 कौमारी निगमार्थगोचरकरी ह्योंकारबीजाक्षरी ।
 मोक्षद्वारकवाटपाटनकरी काशीपुराधीश्वरी
 भिक्षा देहि कृपावलम्बनकरी माताअन्नपूर्णेश्वरी ॥ ४ ॥

हृष्याहृष्यविभूतिवाहनकरी ब्रह्माण्डभाण्डोदरी
 लीलानाटकसूत्रखेलनकरी विज्ञानदीपाङ्कुरी ।
 श्रीविष्वेशमन प्रसादनकरी काशीपुराधीश्वरी
 भिक्षा देहि कृपावलम्बनकरी माताअन्नपूर्णेश्वरी ॥ ५ ॥

आदिक्षान्तसमस्तवर्णनकरी शभुप्रिया शाकरी
 काशमीरत्रिपुरेश्वरी त्रिनयनी विश्वेश्वरी शर्वरी ।
 स्वर्गद्वारकवाटपाटनकरी काशीपुराधीश्वरी
 भिक्षा देहि कृपावलम्बनकरी माताअन्नपूर्णेश्वरी ॥ ६ ॥

उर्वीसर्वजनेश्वरी जयकरी माता कृपासागरी ।
 नारीनीलसमानकुन्तलधरी नित्यानन्दानेश्वरी
 साक्षान्मोक्षकरी सदा शुभकरी काशीपुराधीश्वरी
 भिक्षा देहि कृपावलम्बनकरी माताअन्नपूर्णेश्वरी ॥ ७ ॥

देवी सर्वविचित्ररत्नरचिता दाक्षायणी सुन्दरी
 वामा खादुपयाधरा प्रियकरी सौभाग्यमाहेश्वरी ।
 भक्ताभीष्टकरी सदा शुभकरी काशीपुराधीश्वरी
 भिक्षा देहि कृपावलम्बनकरी माताज्ञपूर्णेश्वरी ॥ ८ ॥

चन्द्रार्कानलकोटिकोटिसहशी चन्द्राशुभिम्बाधरी
 चन्द्रार्काभिसमानकुण्डलधरी चन्द्रार्कवर्णेश्वरी ।
 मालापुस्तकपाशसाङ्कुशधरी काशीपुराधीश्वरी
 भिक्षा देहि कृपावलम्बनकरी माताज्ञपूर्णेश्वरी ॥ ९ ॥

शत्राणकरी महाभयहरी माता कृपासागरी
 सर्वानन्दकरी सदा शिवकरी विश्वेश्वरी श्रीधरी ।
 दक्षाक्रन्दकरी निरामयकरी काशीपुराधीश्वरी
 भिक्षा देहि कृपावलम्बनकरी माताज्ञपूर्णेश्वरी ॥ १० ॥

अज्ञपूर्णे सदापूर्णे
 शकरप्राणवङ्मे ।
 ज्ञानवैराग्यसिद्ध्यर्थ
 भिक्षा देहि च पार्वति ॥ ११ ॥

माता च पार्वतीदेवी
 पिता दवा महेश्वर ।
 बान्धवा शिवभक्ताश्च
 स्वदेशो भुवनन्त्रयम् ॥ १२ ॥

इति श्रीमत्परमहसपरिवाजकाचार्यस्य
 श्रीगोविदभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य
 श्रीमच्छकरभगवत् कृतौ
 अन्नपूर्णाष्टक सपूर्णम् ॥



॥ श्रीः ॥

॥ मीनाक्षीपञ्चरत्नम् ॥



उच्छ्रानुसहस्रकोटिसहश्रा केयूरहारोज्जवला
बिम्बोष्टीं स्मितदन्तपञ्चिरुचिरा पीताम्बरालकृताम् ।
विष्णुब्रह्मसुरेन्द्रसेवितपदा तत्त्वस्वरूपा शिवा
मीनाक्षीं प्रणतोऽस्मि सततमह कारुण्यवारानिधिम् ॥

मुक्ताहारलस्तिकरीटरुचिरा पूर्णेन्दुवक्प्रभा
शिखान्नपुरकिंकिणीमणिधरा पद्मप्रभाभासुराम् ।
सर्वाभीष्टफलप्रदा गिरिसुता वाणीरमासेविता
मीनाक्षीं प्रणतोऽस्मि सततमह कारुण्यवारानिधिम् ॥

श्रीविद्या शिववामभागनिलया हीकारमन्त्रोज्जवला
श्रीचक्राङ्कितविन्दुमध्यवसर्ति श्रीमत्सभानाथकीम् ।
श्रीमत्पण्मुखविघ्नराजजननीं श्रीमज्जगन्मोहिनीं
मीनाक्षीं प्रणतोऽस्मि सततमह कारुण्यवारानिधिम् ॥

श्रीमत्सुन्दरनायकीं भयहरा ज्ञानप्रदा निर्मला
 इयामाभा कमलासनार्चितपदा नारायणस्यानुजाम् ।
 वीणावेणुमृदङ्गवाद्यरसिका नानाविधाडभिका
 मीनाक्षीं प्रणतोऽस्मि सततमह कारुण्यवारानिधिम् ॥

नानायोगिमुनीन्द्रहृषिवसतीं नानार्थसिद्धिप्रदा
 नानापुष्पविराजिताङ्गियुगला नारायणेनार्चिताम् ।
 नाहवद्वामर्यीं परात्परतरा नानार्थतत्त्वाभिका
 मीनाक्षीं प्रणतोऽस्मि सततमह कारुण्यवारानिधिम् ॥

इति श्रीमत्परमहसपरिवाजकाचार्यस्य
 श्रीगोविंदभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य
 श्रीमच्छकरभगवत् कृतौ
 मीनाक्षीपञ्चरत्न सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

॥ मीनाक्षीस्तोत्रम् ॥

————— * —————

श्रीविद्ये शिववामभागनिलये श्रीराजराजार्चिते
श्रीनाथादिगुहस्तरूपविभवे चिन्तामणीपीठिके ।
श्रीबाणीगिरिजानुताङ्गिकमले श्रीशाभवि श्रीशिवे
मध्याह्ने मलयध्वजाधिपसुते मा पाहि मीनाम्बिके ॥ १ ॥

चक्रस्थेऽचपले चराचरजगन्नाथे जगत्पूजिते
आर्तालीवरदे नताभयकर वक्षोजभारान्विते ।
विद्ये वेदकलापमौलिविदिते विद्युलुताविग्रहे
मात पूर्णसुधारसार्द्रहृदये मा पाहि मीनाम्बिके ॥ २ ॥

कोटीराङ्गदरक्षकुण्डलधरे कादण्डबाणार्चिते
कोकाकारकुचद्वयापरिलसत्प्रालम्बहारार्चिते ।
शिखाञ्चूपुरपादसारसमणीश्रीपादुकालकृते
महारिद्यभुजगगाहडखगे मा पाहि मीनाम्बिके ॥ ३ ॥

ब्रह्मेशान्युतगीयमानचरिते प्रतासनान्तस्थिते
 पाशोदङ्गशचापबाणकलित बालन्दुचूडाभित ।
 बाले बालकुरङ्गलालनयन बालाकाटशुज्जवल
 मुद्राराधितदैवते मुनिसुत मा पाहि मीनाम्बिके ॥ ४ ॥

गन्धर्वामरयक्षपन्नगनुत गङ्गाधरालिङ्गित
 गायत्रीगरुडासन कमलजे सुश्यामले सुम्थित ।
 खातीते खलदारुपावकशिखे खण्डातकोटशुज्जवले
 मन्त्राराधितदैवते मुनिसुते मा पाहि मीनाम्बिके ॥ ५ ॥

नादे नारदतुम्बुराद्यविनुते नादान्तनादात्मिक
 नित्ये नीललतात्मिके निरुपम नीवारशूकोपम ।
 कान्त कामकल कदम्बनिलय कामश्वराङ्गस्थित
 माद्विद्य मदभीष्टकल्पलतिके मा पाहि मीनाम्बिके ॥ ६ ॥

वीणानादनिमीलिताधनयन विस्तस्तचूलीभर
 ताम्बूलारुणपलवाधरयुते ताटङ्गहारान्वित ।
 इथामे चन्द्रकलावतसकलित कस्तूरिकाफालिक
 पूर्णे पूर्णकलाभिरामवदने मा पाहि मीनाम्बिक ॥ ७ ॥

मीनाक्षीस्तोत्रम् ।

८३

शब्दग्रहामयी चराचरमयी उयोतिर्मयी वाञ्छयी
नित्यानन्दमयी निरञ्जनमयी तत्त्वमयी चिन्मयी ।
तत्त्वातीतमयी परात्परमयी मायामयी श्रीमयी
सर्वेश्वरमयी सदाशिवमयी मा पाहि मीनाम्बिके ॥८॥

इति श्रीमत्परमहस्यपरिव्राजकाचायस्य श्रीगोविंदभग
वत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत् कृतौ
मीनाक्षीस्तोत्र सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

॥ दक्षिणामूर्तिस्तोत्रम् ॥

— — ♘ — —

उपासकाना यदुपासनीय
मुपात्तवास्त्र वटशास्त्रिमूळे ।
तद्वाम दाक्षिण्यजुषा स्वमूर्त्या
जागर्तु चित्ते मम बोधरूपम् ॥ १ ॥

अद्राक्षमक्षीणदयानिधान-
माचार्यमात्र वटमूलभागे ।
मौनेन मन्दस्मितभूषितन
महाष्ठोकस्य तमो नुदन्तम् ॥ २ ॥

विद्राविताशाषतमोगणन
मुद्राविशेषण मुहुसुनीनाम ।
निरस्य माया दयया विष्टे
देवो महास्तत्त्वमसीति बोधम् ॥ ३ ॥

दक्षिणामूर्तिस्तोत्रम् ।

४५

अपारकाङ्गसुधातरङ्गे
रपाङ्गपातैरवलोकयन्तम् ।
कठोरसारनिदाघतसा
न्मुनीनह नौमि गुरु गुरुणाम् ॥ ४ ॥

ममाद्यदेवो बटमूलवासी
कुपाविशेषात्कुतसनिधान ।
ओकाररूपामुपदिश्य विद्या
माविद्यकध्वान्तमपाकरोतु ॥ ५ ॥

कलाभिरिन्दोरिव कलिपताङ्ग
मुक्ताकलापैरिव बद्धमूर्तिम् ।
आलोकये देशिकमप्रमेय
मनाद्यविद्यातिमिरप्रभातम् ॥ ६ ॥

स्वदक्षजानुस्थितवामपाद
पादोदरालकृतयोगपद्मम् ।
अपस्मृतेराहितपादमङ्गे
प्रणौमि देव प्रणिधानवन्तम् ॥ ७ ॥

तस्वार्थमन्तेवसतामृषीणा
 युवापि य सशुपदेषु मीषे ।
 प्रणौमि त प्राक्तनपुण्यजालै
 राचार्थमाश्र्यगुणाधिवासम् ॥ ८ ॥

एकेन मुद्रा परशु करेण
 करेण चान्येन मृग दधान ।
 स्वजानुविन्यस्तकर पुरस्ता
 दाचायचूडामणिराविरस्तु ॥ ९ ॥

आलेपवन्त मदनाङ्गभूत्या
 शार्दूलकृत्या परिधानवन्तम् ।
 आलोकये कचन देशिकेन्द्र
 मङ्गानवाराकरबाढबामिम् ॥ १० ॥

चाहस्थित सोमकलावतस
 वीणाधर व्यक्तजटाकलापम् ।
 उपासते केचन योगिनस्त्व
 मुपात्तनादानुभवप्रमोदम् ॥ ११ ॥

उपासते य मुनय शुकादा
निराशिषो निर्ममताधिवासा ।
त दक्षिणामूर्तितनु महेश
शुपास्मह मोहमहार्तिशान्तै ॥ १२ ॥

कान्त्या निनिदितकुन्दकदलवपुन्यग्रोधमूले वस
न्काहण्यामृतवारिभिसुनिजन सभावयन्वीक्षितै ।
मोहध्वान्तविभेदन विरचयन्बोधेन तत्तादशा
देवस्तत्वमसीति बोधयतु मा मुद्रावता पाणिना ॥ १३ ॥

अगौरनेत्रैरल्लाटनेत्रै
रशान्तवेषैरभुजगभूषै ।
अबोधमुद्रैरनपास्तनिद्रै
रपूरकामैरमरैरल न ॥ १४ ।

दैवतानि कति सन्ति चावनौ
नैव तानि मनसो मतानि मे ।
दीक्षित जडधियामनुग्रहे
दक्षिणाभिसुखमव दैवतम् ॥ १५ ॥

मुदिताय मुग्धशशिना वतसिने
 भसितावलेपरमणीयमूर्तये ।
 जगदिन्द्रजालरचनापटीयसे
 महसे नमोऽस्तु वटमूलवासिने ॥ १६ ॥

व्यालम्बिनीभि परितो जटाभि
 कलावशेण कलाधरेण ।
 पश्यल्लाटेन मुखेन्दुना च
 प्रकाशसे चेतसि निर्मलानाम् ॥ १७ ॥

त्वपासकाना त्वमुमासहाय
 पूर्णेन्दुभाव प्रकटीकरोषि ।
 यदश्य ते दर्शनमाग्रता मे
 द्रवत्यहो मानसचन्द्रकान्त ॥ १८ ॥

यस्त प्रसन्नामनुसदधानो
 मूर्ति मुदा मुग्धशशाङ्कमौले ।
 एश्वर्यमायुलभत च विद्या
 मन्त च वेदान्तमहारहस्यम् ॥ १९ ॥

इति दक्षिणामूर्तिस्तोत्र संपूर्णम् ॥

॥ श्री ॥

॥ कालभैरवाष्टकम् ॥

देवराजसेव्यमानपावनाङ्गुष्ठज
व्यालयज्ञसूत्रविन्दुशोखर कृपाकरम् ।
नारदादियोगिबृन्दवन्दित दिगम्बर
काशिकापुराधिनाथकालभैरव भजे ॥ १ ॥

भानुकोटिभास्वर भवाज्जितारक पर
नीलकण्ठमीप्सिताथदायक त्रिलोचनम् ।
कालकालमम्बुजाक्षमक्षशूलमक्षर
काशिकापुराधिनाथकालभैरव भजे ॥ २ ॥

शूलटङ्गपाशदण्डपाणिमादिकारण
इयामकायमादिदेवमक्षर निरामयम् ।
भीमविक्रम प्रभु विचित्रताण्डवप्रिय
काशिकापुराधिनाथकालभैरव भजे ॥ ३ ॥

भुक्तिमुक्तिदायक प्रशस्तचारुविग्रह
 भक्तवत्सल स्थिर समस्तलाकाविग्रहम् ।
 निकटन्मनोङ्गेभक्तिद्विणीलसत्कर्तिं
 काशिकापुराधिनाथकालभैरव भज ॥ ४ ॥

धर्मसेतुपालक त्वधममागनाशक
 कर्मपाशमोचक सुशर्मदायक विभुम् ।
 स्वर्णवर्णकशपाशशोभिताङ्गनिर्मल
 काशिकापुराधिनाथकालभैरव भजे ॥ ५ ॥

रत्नपादुकाप्रभाभिरामपादयुग्मक
 नित्यमद्वितीयमिष्टदैवत निरञ्जनम् ।
 मृत्युदपनाशन करालदष्टभूषण
 काशिकापुराधिनाथकालभैरव भज ॥ ६ ॥

अदृहासभिन्नपद्मजाण्डकोशसततिं
 हष्टिपातनष्टपापजालमुग्रशासनम् ।
 अष्टमिद्विदायक कपालमालिकाधर
 काशिकापुराधिनाथकालभैरव भजे ॥ ७ ॥

कालभैरवाष्टकम् ।

११

भूतसङ्घनायक विशालकीर्तिदायक
काशिवासिलोकपुण्यपापशोधक विभुम् ।
नीतिमार्गकोविदं पुरातनं जगत्पतिं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ ८ ॥

कालभैरवाष्टकं पठन्ति ये मनोहर
ज्ञानमुक्तिसाधकं विचित्रपुण्यवर्धनम् ।
शोकमोहलोभद्रैन्यकोपतापनाशन
ते प्रयान्ति कालभैरवाष्टकसनिधिं ध्रुवम् ॥ ९ ॥

इति श्रीमत्परमहसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्रीगोविदभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य
श्रीमच्छकरभगवत् कृतौ
कालभैरवाष्टकं सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

॥ नर्मदाष्टकम् ॥

सविन्दुसिन्धुसुस्खलत्तरङ्गभङ्गरञ्जित
द्विषत्सु पापजातजातकादिवारिसयुतम् ।
कृतान्तदूतकालभूतभीतिहारिवर्मदे
त्वदीयपादपङ्कज नमामि देवि नर्मदे ॥ १ ॥

त्वदम्बुलीनदीनमीनदिव्यसप्रदायक
कलौ मलौघभारहारिमवतीर्थनायकम् ।
सुमच्छकच्छुनकचक्रवाकचक्रशर्मदे
त्वदीयपादपङ्कज नमामि देवि नर्मदे ॥ २ ॥

महागभीरनीरपूरपापधूतभूतल
ध्वनत्समस्तपातकारिदारितापदाचलम् ।
जगङ्गये महाभये मृकण्डसूतुहर्म्यदे
त्वदीयपादपङ्कज नमामि देवि नर्मदे ॥ ३ ॥

गत तदैव मे भय त्वदम्बु वीक्षित यदा
 मृकण्डुसूलुशौनकासुरारिसेवित सदा ।
 पुनर्भवाभिजन्मज भवाभिधदु खर्मदे
 त्वदीयपादपङ्कज नमामि देवि नर्मदे ॥ ४ ॥

अलक्ष्यलक्ष्यकिञ्चरामरासुरादिपूजित
 सुलक्ष्यनीरतीरधीरपक्षिलक्ष्यकूजितम् ।
 वसिष्ठशिष्ठपिप्लादिकर्दमादिशर्मद
 त्वदीयपादपङ्कज नमामि देवि नर्मदे ॥ ५ ॥

सनत्कुमारनाचिकेतकश्यपात्रिषट्पदै
 धृत स्वकीयमानसेषु नारदादिषट्पदै ।
 रवीन्दुरन्तिदेवदेवराजकर्मशर्मदे
 त्वदीयपादपङ्कज नमामि देवि नर्मदे ॥ ६ ॥

अलक्ष्यलक्ष्यपापलक्ष्यसारसायुध
 ततस्तु जीवजन्तुतन्तुभुक्तिभुक्तिदायकम् ।
 विरिज्जिविष्णुशकरत्तकीयधामर्मदे
 त्वदीयपादपङ्कज नमामि देवि नर्मदे ॥ ७ ॥

अहो धृत स्वन श्रुत महेशिकेशजातट
 किरातसूतबाढवेषु पण्डित शठ नटे ।
 दुरन्तपापतापहारि सर्वजन्तुशर्मद
 त्वदीयपादपङ्गज नमामि देवि नमद ॥ ८ ॥

इह तु नर्मदाष्टक त्रिकालमेव ये सदा
 पठन्ति ते निरन्तर न यन्ति दुगति कदा ।
 सुलभयदेहुर्लभ महशधामगौरव
 पुनर्भवा नरा न वै विलोकयन्ति रौरवम् ॥ ९ ॥

इति श्रीमत्परमहसपरिव्राजकाचार्यस्य
 श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य
 श्रीमच्छकरभगवत् क्रतौ
 नर्मदाष्टक सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

॥ यमुनाष्टकम् ॥

—————❀—————

सुरारिकायकालिमाललामवारिधारिणी
तृणीकृतत्रिविष्टपा त्रिलोकशोकहारिणी ।
मनोनुकूलकूलकुञ्जपुञ्जधूतदुर्भदा
धुनोतु नो मनोमल कलिन्दनन्दिनी सदा ॥ १ ॥

मलापहारिवारिपूरिभूरिमण्डतामृता
भृश प्रवातकप्रपञ्चनातिपण्डतानिशा ।
सुनन्दनन्दिनाङ्गसङ्गरागरञ्जिता हिता
धुनोतु नो मनोमल कलिन्दनन्दिनी सदा ॥ २ ॥

लसत्तरङ्गसङ्गधूतभूतजातपातका
नवीनमाधुरीधुरीणभक्तिजातचातका ।
तटान्तवासदासहससवृताह्विकामदा
धुनोतु नो मनोमल कलिन्दनन्दिनी सदा ॥ ३ ॥

विहाररासखेदभद्रधीरतीरमारुता
 गता गिरामगोचरे यदीयनीरचारुता ।
 प्रवाहसाहचर्यपूतमेदिनीनदीनदा
 धुनोतु नो मनोमल कलिन्दननिंदनी सदा ॥ ४ ॥

तरङ्गसङ्गसैकतान्तरातित सदासिता
 शरञ्जिकाकराशुमञ्जुमञ्जरी सभाजिता ।
 भवार्चनाप्रचारुणाम्बुनाधुना विशारदा
 धुनोतु नो मनोमल कलिन्दननिंदनी सदा ॥ ५ ॥

जलान्तकेलिकारिचारुराधिकाङ्गरागिणी
 स्वभर्तुरन्यदुलभाङ्गताङ्गतागभागिनी
 स्वदत्तसुप्रसिन्धुभेदिनाातकोविदा
 धुनोतु नो मनोमल कलिन्दननिंदनी सदा ॥ ६ ॥

जलच्युताच्युताङ्गरागलम्पटालिशालिनी
 विलोलराधिकाकचान्तचम्पकालिमालिनी ।
 सदावगाहनावतीर्णभर्तृभृत्यनारदा
 धुनोतु नो मनोमल कलिन्दननिंदनी सदा ॥ ७ ॥

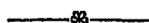
सदैव नन्दनन्दकेलिशालिकुञ्जमञ्जुला
तटोत्थफुलमस्तिकाकदम्बरेणुसूज्जवला ।
जलावगाहिना नृणा भवाभिधसिन्धुपारदा
धुनोतु नो मनोमल कलिन्दनन्दिनी सदा ॥ ८ ॥

इति श्रीभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य
श्रीगोविदभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य
श्रीमच्छकरभगवत् कृतौ
यमुनाष्टक सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

॥ यमुनाष्टकम् ॥



कृपापारावारा तपनतनया तापशमना
मुरारिप्रेयस्या भवभयदवा भक्तिवरदाम् ।
वियज्जवालोन्मुक्ता श्रियमपि सुखासे परिदिन
सदा धीरो नून भजति यमुना नित्यफलदाम् ॥ १ ॥

मधुवनचारिणि भास्करवाहिनि जाहविसङ्गिनि सिन्धुसुते
मधुरिपुभूषणि माधवतोषिणि गोकुलभीतिविनाशकुते ।
जगदघमोचिनि मानसदायिनि केशवकलिनिदानगते
जय यमुने जय भीतिनिवारिणि सकटनाशिनि पावय भाम् ॥

अयि मधुरे मधुमोदविलासिनि शैलविदारिणि वेगपरे
परिजनपालिनि दुष्टनिषूदिनि वाकिञ्चितकामविलासधरे ।
ब्रजपुरवासिजनार्जितपातकहारिणि विश्वजनोद्धरिके
जय यमुने जय भीतिनिवारिणि सकटनाशिनि पावय भाम् ॥

अतिविपदाम्बुधिमग्न भवतापशताकुलमानसक
 गतिमतिहीनमशेषभयाकुलमागतपादसरोजयुगम् ।
 ऋणभयभीतिमनिष्ठतिपातककोटिशतायुतपुञ्चतर
 जय यमुने जय भीतिनिवारिणि सकटनाशिनि पावय माम् ॥

नवजलदधुतिकोटिलसत्त्वनुहेमभयाभररज्जितके
 तडिदवहेलिपदाच्चलच्चलशोभितर्पीतसुचेलधर ।
 मणिमयभूषणचित्रपटासनरज्जितगरज्जितभानुकरे
 जय यमुने जय भीतिनिवारिणि सकटनाशिनि पावय माम् ॥

शुभपुलिने भधुमत्तयदूङ्घवरासमहोत्सवकेलिभरे
 उच्चकुलाचलराजितमौक्तिकहारमयाभररोदसिके ।
 नवमणिकोटिकभास्करकच्छुकिशोभिततारकहारयुते
 जय यमुने जय भीतिनिवारिणि सकटनाशिनि पावय माम् ॥

करिवरमौक्तिकनासिकभूषणवातचमत्कृतच्चलके
 सुखकमलामलसौरभच्चलमत्तमधुब्रतलोचनिक ।
 मणिगणकुण्डललोलपरिस्फुरदाकुलगण्डयुगामलके
 जय यमुने जय भीतिनिवारिणि सकटनाशिनि पावय माम् ॥

कलरवन् पुरहेममयाचितपादसरोकहसारुणिके
 धिमिधिमिधिमिधिमितालविनोदितमानसमञ्जुलपादगते ।
 तत्र पदपङ्कजमाश्रितमानवचित्तसदाखिलतापहर
 जय यमुने जय भीतिनिवारिणि सकटनाशिनि पावय माम् ॥

भवोत्तापाभ्योधौ निपतितजनो दुर्गतियुता
 यदि स्तौति प्रात् प्रतिदिनमनन्याश्रयतया ।
 हयाहेषै काम करकुसुमपुञ्जै रविसुता
 सदा भोक्ता भोगान्मरणसमये याति हरिताम् ॥ ९ ॥

इति श्रीमत्परमहसपरिव्राजकाचायस्य
 श्रागोविदभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य
 श्रीमन्छकरभगवत् कृतौ
 यमुनाष्टक सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

॥ गङ्गाष्टकम् ॥



भगवति भवलीलामौलिमाल तवाम्ब
 कणमणुपरिमाण प्राणिनो य स्पृशन्ति ।
 अमरनगरनारीचामरप्राहिणीना
 विगतकलिकलङ्कातङ्कमङ्के लुठन्ति ॥ १ ॥

ब्रह्माण्ड स्वण्डयन्ती हरशिरसि जटावलिमुलासयन्ती
 स्वर्लोकादापतन्ती कनकगिरिगुहागण्डशैलात्स्वलन्ती ।
 क्षोणीपृष्ठे लुठन्ती दुरितचयचमूर्निर्भर भर्त्सयन्ती
 पाथोधिं पूरयन्ती सुरनगरसरित्पावनी न पुनातु ॥२॥

मज्जन्मातङ्ककुम्भन्युतमदमदिरामादमत्तालिजाल
 स्नानै सिद्धाङ्गनाना कुचयुगविगल्कुङ्कमासङ्गपिङ्गम ।
 साय प्रातर्मुनीना कुगकुसुमचयैश्छन्तीरस्थनीर
 पायाङ्गो गाङ्गमम्भ करिकरमकरान्तरहस्तरङ्गम ॥

५१२ वहण स १० अष्टू
 प्रन्थालय, क उ ति शि संस्कृत
 सारनाथ, बाराणसी

आदावादिपितामहस्य नियमव्यापारपात्रे जल
 पश्चात्पन्नगशायिनो भगवत् पादोदक पावनम् ।
 भूय शभुजटाविभूषणमणिर्जहोर्महर्षेरिय
 कन्या कलमषनाशिनी भगवती भागीरथी पातु माम् ॥

शैलन्द्रादवतारिणी निजजल मज्जनोच्चारिणी
 पारावारविहारिणी भवभयश्रणीसमुत्सारिणी ।
 शष्ठाङ्गेरनुकारिणी हरशिरोवल्लीदलाकारिणी
 काशीप्रान्तविहारिणी विजयत गङ्गा मनोहारिणी ॥५॥

कुतो वीची वीचिस्तव यदि गता लोचनपथ
 त्वमापीता पीताम्बरपुरनिवास वितरसि ।
 त्वदुत्सङ्गे गङ्गे पतति यदि कायस्तनुभृता
 तदा मात शान्तक्रतवपदलाभाऽयतिलघु ॥ ६ ॥

भगवति तव तीरे नीरमात्राशनोऽह
 विगतविषयतृष्णं कृष्णमाराधयामि ।
 सकलकलुषभङ्गे स्वर्गसोपानसङ्गे
 तरलतरतरङ्गे देवि गङ्गे प्रसीद ॥ ७ ॥

मातर्जाहवि शभुसङ्गमिलिते मौलौ निधाया जर्लि
 त्वत्तीरे वपुषोऽवमानसमये नारायणाद्विद्यम् ।
 सानन्द स्मरतो भविष्यति भम प्राणप्रयाणोत्सवे
 भूयाद्वक्तिरविच्युता हरिहराद्वैतात्मिका शाश्रती ॥ ८ ॥

गङ्गाष्टकमिद पुण्य
 य पठेत्प्रयतो नर ।
 सर्वपापविनिर्मुक्तो
 विष्णुलोक स गच्छति ॥ ९ ॥

इति श्रीमत्परमहसपरिव्राजकाचार्यस्य
 श्रीगोविदभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य
 श्रामच्छकरभगवत कृतौ
 गङ्गाष्टक सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

॥ मणिकर्णिकाष्टकम् ॥



त्वन्तीरे मणिकर्णिके हरिहरौ साथुज्यमुक्तिप्रदौ
वादन्तौ कुरुत परस्परमुभौ जन्तो प्रयाणोत्सवे ।
मदूपो मनुजोऽयमस्तु हरिणा प्रोक्त शिवस्तक्षणा
तन्मध्याद्गुलाञ्छनो गरुडग पीताम्बरो निगत ॥

इन्द्राद्याभ्यदक्षा पतन्ति नियत भोगक्षये ये पुन
र्जयन्त मनुजास्ततोपि पशव कीटा पतङ्गादय ।
ये मातर्मणिकर्णिके तव जले मज्जन्ति निष्कलमषा
साथुज्यऽपि किरीटकौस्तुभधरा नारायणा स्युनरा ॥

काशी धन्यतमा विमुक्तनगरी सालकृता गङ्गया
तत्रेय मणिकर्णिका सुखकरी मुक्तिर्हि तर्तिकरी ।
स्वर्लोकस्तुलित सहैव विशुधै काश्या सम ब्रह्मणा
काशी श्वोणितल स्थिता गुरुतरा स्वर्गो लघुत्व गत ॥

गङ्गातीरमनुत्तम हि सकल तत्रापि काशयुत्तमा
तस्या सा मणिकर्णिकोत्तमतमा यत्रेश्वरो मुक्तिद ।
देवानामपि दुर्लभ स्थलमिद पापौघनाशक्तम
पूर्वोपार्जितपुण्यपुञ्जगमक पुण्यैर्जनै प्राप्यते ॥ ४ ॥

दुखाभोधिगतो हि जन्मनिवहस्तेषा कथ निष्कृति
ज्ञात्वा तद्वि विरिच्छिना विरचिता वाराणसी शर्मदा ।
लोका स्वगमुखास्तोऽपि लघवो भोगान्तपातप्रदा
काशी मुक्तिपुरी सदा शिवकरी धर्मार्थमोक्षप्रदा ॥ ५ ॥

एको वेणुधरो धराधरधर श्रीवित्सभूषाधर
योऽयेक किल शकरो विषधरो गङ्गाधरो माधव ।
ये मातर्मणिकर्णिके तव जले मज्जन्ति ते मानवा
रुद्रा वा हरयो भवन्ति बहवस्तेषा बहुत्व कथम् ॥ ६ ॥

त्वत्तीरे मरण तु मङ्गलकर देवैरपि श्लाघ्यते
शक्रस्त मनुज सहस्रनयनैद्रद्वु सदा तत्पर ।
आथान्त सविता सहस्रकिरणै प्रत्युद्रतोऽभूत्सदा
पुण्योऽसौ वृषगोऽथवा गरुडग किं मदिर यास्यति ॥

मध्याहे मणिकर्णिकास्नपनज पुण्य न वक्तु क्षम
 स्वीयैरब्धशतैश्चतुर्मुखधरो वेदाथदक्षागुरु ।
 योगाभ्यासबलेन चन्द्रशिखरस्तपुण्यपारगत
 स्ववक्तीरे प्रकरति सुप्रपुरुष नारायण वा शिवम् ॥ ८ ॥

कुच्छै कोटिशतै स्वपापनिधन यज्ञाश्वमेषै फल
 तत्सर्वं मणिकर्णिकास्नपनजे पुण्ये प्रविष्ट भवेत् ।
 स्नात्वा स्तोत्रमिद नर पठति चेत्ससारपाठोनिर्धि
 तीत्वा पत्वलवत्प्रयाति सदन तेजोमय ब्रह्मण ॥ ९ ॥

इति श्रीमत्परमहसपरिव्राजकाचायस्य
 श्रीगोविं दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य
 श्रीमच्छकरभगवत् कृतौ
 मणिकर्णिकाष्टक सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

॥ निर्गुणमानसपूजा ॥



शिष्य उवाच—

अखण्डे सच्चिदानन्दे निर्बिकल्पैकरूपिणि ।
स्थितेऽद्वितीयभावेऽपि कथ पूजा विधीयते ॥ १ ॥

पूर्णस्यावाहन कुत्र सर्वाधारस्य चासनम् ।
स्वच्छस्य पाद्यमध्ये च शुद्धस्याचमन कुत ॥ २ ॥

निर्मलस्य कुत स्नान वासो विश्वोदरस्य च ।
आगोत्रस्य त्वर्वर्णस्य कुतस्तस्योपवीतकम् ॥ ३ ॥

निर्लेपस्य कुता गन्ध पुष्प निर्वासनस्य च ।
निर्विशेषस्य का भूषा कोऽलकारो निराकृते ॥ ४ ॥

निरञ्जनस्य किं धूपैर्दीपैर्वा सर्वसाक्षिण
निजानन्दैकतृपस्य नैवेद्य किं भवेदिह ॥ ५ ॥

विश्वानन्दयितुस्तस्य किं ताम्बूल प्रकल्पते ।
स्वयप्रकाशचिद्रूपा योऽसावर्कादिभासक ॥ ६ ॥

गीयते श्रुतिभिस्तस्य नीराजनविधि कुत ।
प्रदक्षिणमनन्तस्य प्रमाणोऽद्वयवस्तुन् ॥ ७ ॥

वेदवाचामवेदस्य किं वा स्तोत्र विधीयते ।
अन्तर्बहिः सस्थितस्योद्घासनविधि कुत ॥ ८ ॥

श्रीगुरुहवाच—

आराधयामि मणिसनिभमात्मलिङ्गं
मायापुरीहृदयपङ्कजसनिविष्टम् ।
श्रद्धानदीविमलाचित्तजलाभिषेकै
नित्य समाधिकुमैरपुनर्भवाय ॥ ९ ॥

धर्मेकोऽवशिष्टोऽस्मीत्येवमावाहयेचित्तवम् ।
आसन कल्पयेत्पथात्स्वप्रतिष्ठात्मचिन्तनम् ॥ १० ॥

पुण्यपापरज सङ्गो मम नास्तीति वेदनम् ।
पाद्य समर्पयेद्विद्वान्स्वकल्पनाशनम् ॥ ११ ॥

अनादिकल्पविधृतमूलाङ्गानजलाजलिम् ।
विसृजेदात्मलिङ्गस्य तदेवादर्यसमर्पणम् ॥ १२ ॥

ब्रह्मानन्दाद्विधकलोलकणकोऽवशलेशकम् ।
पिबन्तीन्द्रादय इति ध्यानमाचमन मतम् ॥ १३ ॥

ब्रह्मानन्दजलेनैव लोका सर्वे परिपुता ।
अच्छेद्योऽयमिति ध्यानमभिष्वचनमात्मन ॥ १४ ॥

निरावरणचैतन्यं प्रकाशाऽसीति चिन्तनम ।
आत्मलिङ्गस्य सद्ब्रह्ममित्येव चिन्तयेन्मुनि ॥ १५ ॥

त्रिगुणात्माशेषलोकमालिकासूत्रमस्यहम् ।
इति निश्चयमेवात्र ध्युपवीति पर मतम् ॥ १६ ॥

अनेकवासनामिश्रप्रपञ्चोऽय धृतो ग्रया ।
नान्येनेत्यनुसधानमात्मनश्चन्दनं भवेत् ॥ १७ ॥

रज सत्त्वतमोदृत्तित्यागरूपैस्तिलाक्षतै ।
आत्मलिङ्गं यजेन्नित्यं जीवन्मुक्तिप्रसिद्धये ॥ १८ ॥

ईश्वरो गुहरात्मेति भेदव्यविवर्जितै ।
बिल्वपत्रैरद्वितीयैरात्मलिङ्गं यजेचिछवम् ॥ १९ ॥

समस्तवासनात्याग धूप तस्य विचिन्तयेत् ।
उयोतिर्मयात्मविज्ञानं दीप सदर्शयेद्दुध ॥ २० ॥

नैवेद्यमात्मलिङ्गस्य ब्रह्माण्डारय भगोदनम् ।
पिवानन्दरसं स्वादु मृत्युरस्यापसचनम् ॥ २१ ॥

अज्ञानोऽनिष्टुकरस्य क्षालनं ज्ञानवारिणा ।
विशुद्धस्यात्मलिङ्गस्य हस्तप्रश्वालनं स्मरेत् ॥ २२ ॥

रागादिगुणशून्यस्य शिवस्य परमात्मन ।
सरागविषयाभ्यासत्यागस्ताम्बूलचवणम् ॥ २३ ॥

अज्ञानध्वान्तविध्वसप्रचण्डमतिभास्करम् ।
आत्मनो ब्रह्मताज्ञानं नीराजनमिहात्मन ॥ २४ ॥

विविधब्रह्मसदृष्टिर्मालिकाभिरलकृतम् ।
पूर्णानन्दात्मताहटिं पुष्पाजालिमनुस्मरेत् ॥ २५ ॥

परिभ्रमन्ति ब्रह्माण्डसहस्राणि मर्यीश्वरे ।
कूटस्थाचलरूपोऽहमिति ध्यानं प्रदक्षिणम् ॥ २६ ॥

विश्ववन्द्योऽहमेवास्मि नास्ति वन्द्यो मदन्यत ।
इत्यालोचनमेवात्र स्वात्मलिङ्गस्य वन्दनम् ॥ २७ ॥

आत्मनं सत्किया श्रोत्का कर्तव्याभावभावना ।
नामरूपव्यतीतात्मचिन्तनं नामकीर्तनम् ॥ २८ ॥

श्रवणं तस्य दवस्य श्रोतव्याभावचिन्तनम् ।
मननं त्वात्मलिङ्गस्य मन्तव्याभावचिन्तनम् ॥ २९ ॥

निर्गुणमानसपूजा ।

१११

ध्यातव्याभावविज्ञान निदिध्यासनमात्मन
समस्तभ्रान्तिविक्षेपराहित्येनात्मनिष्ठता ॥ ३० ॥

समाधिरात्मनो नाम नान्यवित्तस्य विभ्रम ।
तत्रैव ब्रह्मणि सदा वित्तविश्रान्तिरिष्यते ॥ ३१ ॥

एव वेदान्तकल्पोक्तस्यात्मलिङ्गप्रपूजनम् ।
कुर्वश्च मरण वापि क्षण वा सुसमाहित ॥ ३२ ॥

सर्वदुर्वासनाजाल पदपासुमिव त्यजेत् ।
विधूयाज्ञानदुखौष मोक्षानन्द समश्नुते ॥ ३३ ॥

इति श्रीमत्परमहस्यपरिव्राजकाचायस्य

श्रीगोविदभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य

श्रीमच्छक्रभगवत् कृतौ

निर्गुणमानसपूजा सपूर्णो ॥



॥ श्री ॥

॥ प्रातःस्मरणस्तोत्रम् ॥

—————*

प्रात स्मरामि हृदि सकुरदात्मतत्त्व
सच्चित्सुखं परमहस्यगतिं तुरीयम् ।
यस्तु प्रजागरसुषुप्तमवैति नित्य
तद्वद्वा निष्कलमहं न च भूतसङ्ग ॥ १ ॥

प्रातभजामि मनसा वचसामगम्य
वाचो विभान्ति निखिला यदनुग्रहेण ।
यश्चेति नेति वचनैनिंगमा अवोच
स्त देवदेवमजमच्युतमाहुरउद्यम् ॥ २ ॥

प्रातनैर्मामि तमसं परमकर्वर्णं
पूर्णं सनातनपदं पुरुषोत्तमारयम् ।
यस्मिन्निव जगदशेषमशेषमूर्तौं
रज्जवा भुजगम इव प्रतिभासित वै ॥ ३ ॥

प्रात स्मरणस्तोत्रम् ।

११३

शोकत्रयमिद पुण्य
लोकत्रयविभूषणम् ।
प्रात काले पठेद्यस्तु
स गच्छेत्परम पदम् ॥ ४ ॥

इति श्रीमत्परमहसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य
श्रीमच्छकरभगवत कृतौ
प्रात स्मरणस्तोत्र सपूर्णम् ॥



॥ श्रीः ॥

॥ जगन्नाथाष्टकम् ॥



कदाचित्कालिन्दीतटविपिनसगीतकवरो
मुदा गापीनारीवद्नकमलास्वादमधुप ।
रमाशभुद्वामरपतिगणशार्चितपदो
जगन्नाथ स्वामी नयनपथगामा भवतु मे ॥ १ ॥

मुजे सब्धे वेणु शिरसि शिखिपिङ्ग कटितदे
दुकूल नेत्रान्त सहचरकटाक्ष विदधत् ।
सदा श्रीमद्भून्दावनवस्तिलीलापरिचयो
जगन्नाथ स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ २ ॥

महाम्भोधेस्तरे कनकरुचिर नीलशिखरे
वसन्प्रासादान्त सहजबलभद्रेण बलिना ।
सुभद्रामध्यस्थ सकलसुरसेवावसरदो
जगन्नाथ स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ३ ॥

कृपापारावार सजलजलदशेणिरुचिरो
 रमावाणीसोमस्फुरदमलपद्मोद्भवमुखै ।
 सुरेन्द्रराराध्य श्रुतिगणशिखागीतचरितो
 जगन्नाथ स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ४ ॥

रथारुढो गच्छन्पथि मिलितभूदेवपटै
 स्तुतिप्रादुर्भाव प्रतिपदमुपाकर्ण्य सदय ।
 दयासिन्धुर्बन्धु सकलजगता सिन्धुसुतया
 जगन्नाथ स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ५ ॥

परब्रह्मापीड कुवलयदलोऽफुल्लनयनो
 निवासी नीलाद्रौ निहितचरणोऽनन्तशिरसि ।
 रसानन्दो राधासरसवपुरालिङ्गनसुखो
 जगन्नाथ स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ६ ॥

न वै प्रार्थ्य राज्य न च कनकता भोगविभवे
 न याचेऽह रम्या निश्चिलजनकाम्या वरवधूम् ।
 सदा काले काले प्रमथपतिना गीतचरितो
 जगन्नाथ स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ७ ॥

११६

जगन्नाथाष्टकम् ।

हर त्व ससार द्रुतरमसार सुरपते
हर त्व पापाना वित्तिमपरा यादवपते ।
अहो दीनानाथ निहितमचल पातुमनिश
जगन्नाथ स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ८ ॥

इति श्रीमत्परमहसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्रीगोविदभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य
श्रीमच्छकरभगवत कृतौ
जगन्नाथाष्टक सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

॥ षट्पदीस्तोत्रम् ॥



अविनयमपनय विष्णो
दमय मन शमय विषयमृगतुष्णाम् ।
भूतदया विस्तारय
तारय ससारसागरत ॥ १ ॥

दिव्यधुनीमकरन्दे
परिमलपरिभोगसच्चिदानन्द ।
श्रीपतिपदारविन्दे
भवभयखेदच्छिल्दे वन्दे ॥ २ ॥

सत्यपि भेदापगमे
नाथ तवाह न मामकीनस्त्वम् ।
सामुद्रो हि तरङ्ग
कचन समुद्रो न तारङ्ग ॥ ३ ॥

उद्घृतनग नगभिदनुज
 दनुजकुलामित्र मित्रशशिष्टे ।
 हष्टे भवति प्रभवति
 न भवति किं भवतिरस्कार ॥ ४ ॥

मत्स्यादिभिरवतारै-

रवतारवतावता सदा वसुधाम् ।
 परमेश्वर परिपाल्यो
 भवता भवतापभीतोऽहम् ॥ ५ ॥

दामोदर गुणमन्दिर
 सुन्दरवदनारविन्द गोविन्द ।
 भवजलधिमथनमन्दर
 परम दरमपनय त्व मे ॥ ६ ॥

नारायण करुणामय
 शरण करवाणि तावकौ चरणौ ।
 इति षट्पदी मदीये
 वदनसरोजे सदा वसतु ॥ ७ ॥

इति षट्पदीस्तोत्र सपूर्णम् ॥

॥ श्री ॥

॥ भ्रमराम्बाष्टकम् ॥

—*

चाच्छ्वल्याहुणलोचनाच्चितकृपाचन्द्राकचूडामणि
चारुस्मेरमुखा चराचरजगत्सरक्षणीं तत्पदाम् ।
चाच्छ्वल्यकनासिकाप्रविलसन्मुक्तामणीरचिता
श्रीशैलस्थलवासिनीं भगवतीं श्रीमातर भावये ॥ १ ॥

कस्तूरीतिलकाच्चितेन्दुविलसत्प्रोद्भासिफालस्थली
कर्पूरद्रवमिश्रचूर्णखदिरामोदोष्णसद्वीटिकाम् ।
लोलापाङ्गतरङ्गितैरधिकृपासारैनेतानन्दिनीं
श्रीशैलस्थलवासिनीं भगवतीं श्रीमातर भावये ॥ २ ॥

राजन्मत्तमरालमन्दगमना राजीवपत्रेक्षणा
राजीवप्रभवादिदेवमकुटै राजत्पदाम्भोरुहाम् ।
राजीघायतमन्दमण्डितकृचा राजाधिराजेश्वरीं
श्रीशैलस्थलवासिनीं भगवतीं श्रीमातर भावये ॥ ३ ॥

षट्तारा गणदीपिका शिवसती षड्विर्वर्गापहा
 षट्चक्रान्तरसस्थिता वरसुधा षड्योगिनीवेष्टिताम् ।
 षट्चक्राञ्चितपादुकाञ्चितपदा षड्भावगा षोडशीं
 श्रीशैलस्थलवासिनीं भगवतीं श्रीमातर भावये ॥ ४ ॥

श्रीनाथाहतपालितत्रिभुवना श्रीचक्रसच्चारिणीं
 ज्ञानासक्तमनोजयौवनलसद्रुन्धर्वकन्याहृताम् ।
 दीनानामतिवेलभाग्यजननीं दिव्याम्बरालकृता
 श्रीशैलस्थलवासिनीं भगवतीं श्रीमातर भावये ॥ ५ ॥

लावण्याधिकभूषिताङ्गलतिका लाक्षालसद्रागिणीं
 सेवायातसमस्तदेववनिता सीमन्तभूषान्विताम् ।
 मावोङ्गासवशिकृतप्रियतमा भण्डासुरच्छेदिनी
 श्रीशैलस्थलवासिनीं भगवतीं श्रीमातर भावये ॥ ६ ॥

धन्या सोमविभावनीयचरिता धाराधरश्यामला
 मुन्याराधनमेधिनीं सुमवता मुक्तिप्रदानत्रताम् ।
 कन्यापूजनसुप्रसन्नहृदया काञ्चीलसन्मध्यमा
 श्रीशैलस्थलवासिनीं भगवतीं श्रीमातर भावये ॥ ७ ॥

कपूरागरुकुकुमाङ्कितकुचा कपूरवर्णस्थिता
 कृष्णत्कृष्णसुकृष्णकमदहना कामेश्वरीं कामिनीम् ।
 कामाक्षीं करुणारसाद्रहृदया कल्पान्तरस्थायिनीं
 श्रीशैलस्थलवासिनीं भगवतीं श्रीमातर भावये ॥ ८ ॥

गायत्रीं गरुडध्वजा गगनगा गान्धर्वगानप्रिया
 गम्भीरा गजगामिनीं गिरिसुता गन्धाक्षतालकृताम् ।
 गङ्गागौतमगर्गसनुतपदा गा गौतमीं गोमतीं
 श्रीशैलस्थलवासिनीं भगवतीं श्रीमातर भावये ॥ ९ ॥

इति श्रीमत्परमहसपरिव्राजकाचार्यस्य
 आगोविद्भगवत्पूज्यपादशिष्यस्य
 श्रीमच्छकरभगवत कृतौ
 भ्रमराम्बाष्टकं सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

॥ शिवपञ्चाक्षरनक्षत्रमालास्तोत्रम् ॥

—————*

श्रीमदात्मने गुणैकसिन्धवे नम शिवाय
धामलेशधूतकोकबन्धवे नम शिवाय ।
नामशेषितानमद्भवान्धवे नम शिवाय
पामरेतरप्रधानबन्धवे नम शिवाय ॥ १ ॥

काळभीतविप्रबालपाल ते नम शिवाय
शूलभिन्नदुष्टदक्षफाल ते नम शिवाय ।
मूलकारणाय कालकाल ते नम शिवाय
पालयाधुना दयालवाल ते नम शिवाय ॥ २ ॥

इष्टवस्तुमुख्यदानहेतवे नम शिवाय
दुष्टदैत्यवशधूमकेतवे नम शिवाय ।
सृष्टिरक्षणाय धर्मसेतवे नम शिवाय
अष्टमूर्तये वृषेन्द्रकेतवे नम शिवाय ॥ ३ ॥

शिवपञ्चाक्षरनक्षत्रमालास्तोत्रम् । १२३

आपद्विभेदटङ्गहस्त ते नम शिवाय
पापहारिदिव्यसिन्धुमस्त ते नम शिवाय ।
पापदारिणे लसञ्जमस्तते नम शिवाय
शापदोषखण्डनप्रशस्त ते नम शिवाय ॥ ४ ॥

ब्योमकेश दिव्यभव्यरूप ते नम शिवाय
हेममेदिनीधरेन्द्रचाप ते नम शिवाय ।
नाममात्रदग्धसर्वपाप ते नम शिवाय
कामनैकतानहुराप ते नम शिवाय ॥ ५ ॥

ब्रह्मस्तकावलीनिबद्ध ते नम शिवाय
जिद्धगेन्द्रकुण्डलप्रसिद्ध ते नम शिवाय ।
ब्रह्मणे प्रणीतवेदपद्धते नम शिवाय
जिह्वालदेहदत्तपद्धते नम शिवाय ॥ ६ ॥

कामनाशनाय शुद्धकर्मणे नम शिवाय
सामगानजायमानशर्मणे नम शिवाय ।
हेमकान्तिचाकचक्यर्वर्मणे नम शिवाय
सामजासुराङ्गलब्धचर्मणे नम शिवाय ॥ ७ ॥

१२४

शिवपञ्चाक्षरनक्षत्रमालास्तोत्रम् ।

जन्मभृत्युधोरदुखहारिणे नम शिवाय
चिन्मयैकरूपदेहधारिणे नम शिवाय ।
मन्मनोरथावपूर्तिकारिणे नम शिवाय
सन्मनोगताय कामपैरिणे नम शिवाय ॥ ८ ॥

यक्षराजबन्धवे दयालवे नम शिवाय
दक्षपाणिशोभिकाज्वनालवे नम शिवाय ।
पक्षिराजवाहृच्छयालवे नम शिवाय
अक्षिफाल वेदपूततालवे नम शिवाय ॥ ९ ॥

दक्षहस्तनिष्ठजातवेदसे नम शिवाय
अक्षरात्मने नमद्विष्टौजसे नम शिवाय ।
दीक्षितप्रकाशितात्मतेजसे नम शिवाय
उक्षराजवाह ते सता गते नम शिवाय ॥ १० ॥

राजताचलेन्द्रसानुवासिने नम शिवाय
राजमाननित्यमन्दहासिने नम शिवाय ।
राजकोरकावतसभासिने नम शिवाय
राजराजमित्रताप्रकाशिने नम शिवाय ॥ ११ ॥

शिवपञ्चाक्षरनक्षत्रमालास्तोत्रम् । १२५

दीनमानवालिकामधेनवे नम शिवाय
सूनबाणदाहकृत्कृशानवे नम शिवाय ।
स्वानुरागभक्तरत्नसानवे नम शिवाय
दानवान्धकारचण्डभानवे नम शिवाय ॥ १२ ॥

सर्वमङ्गलाकृष्णाग्रशायिने नम शिवाय
सबदेवतागणातिशायिन नम शिवाय
पूर्वदेवनाशसविधायिने नम शिवाय
सर्वमन्मनोजभङ्गदायिने नम शिवाय ॥ १३ ॥

स्तोकभक्तितोऽपि भक्तपोषिणे नम शिवाय
माकरन्दसारवर्धिभाषिणे नम शिवाय ।
एकविल्वदानतोऽपि तोषिणे नम शिवाय
नैकजन्मपापजालशोषिणे नम शिवाय ॥ १४ ॥

सर्वजीवरक्षणैकशीलिने नम शिवाय
पर्वतीप्रियाय भक्तपालिने नम शिवाय ।
दुर्विदर्घदैत्यसैन्यदारिण नम शिवाय
शर्वरीशधारिणे कपालिने नम शिवाय ॥ १५ ॥

१२६

शिवपञ्चाक्षरनक्षत्रमालास्तोत्रम् ।

पाहि मासुमामनोङ्गदेह ते नम शिवाय
 देहि मे वर सिताद्रिगेह ते नम शिवाय ।
 मोहितर्षिकामिनीसमूह ते नम शिवाय
 स्वेहितप्रसन्न कामदोह ते नम शिवाय ॥ १६ ॥

मङ्गलप्रदाय गोतुरग ते नम शिवाय
 गङ्गया तरङ्गितोत्तमाङ्ग ते नम शिवाय ।
 सङ्गरप्रवृत्तवैरिभङ्ग ते नम शिवाय
 अङ्गजारय करेकुरङ्ग ते नम शिवाय ॥ १७ ॥

ईहितक्षणप्रदानहेतवे नम शिवाय
 आहितामिपालकोऽध्यकेतवे नम शिवाय ।
 देहकान्तिधूतरौप्यधातवे नम शिवाय
 गेहदुखपुञ्जधूमकेतवे नम शिवाय ॥ १८ ॥

त्यक्ष दीनसत्कृपाकटाक्ष ते नम शिवाय
 दक्षसप्तन्तुनाशदक्ष ते नम शिवाय ।
 ऋक्षराजभानुपावकाक्ष ते नम शिवाय
 रक्ष मा प्रपञ्चमान्त्ररक्ष ते नम शिवाय ॥ १९ ॥

शिवपञ्चाक्षरनक्षत्रमालास्तोत्रम् । १२७

न्यङ्गुपाणये शिवकराय ते नम शिवाय
सकटाद्वितीर्णकिंकराय ते नम शिवाय ।
पङ्कभीषिताभयकराय ते नम शिवाय
पङ्कजाननाय शकराय ते नम शिवाय ॥ २० ॥

कर्मपाशनाश नीलकण्ठ ते नम शिवाय
शर्मदाय नर्यभस्मकण्ठ ते नम शिवाय ।
निर्ममर्थसेवितोपकण्ठ ते नम शिवाय
कुर्महे नरीर्नमद्विकुण्ठ ते नम शिवाय ॥ २१ ॥

विष्टुपाद्विपाय नन्नविष्णवे नम शिवाय
शिष्टविप्रहृद्गुहाचरिष्णवे नम शिवाय ।
इष्टवस्तुनित्यतुष्टजिष्णवे नम शिवाय
कष्टनाशनाय लोकजिष्णवे नम शिवाय ॥ २२ ॥

अप्रमेयदिव्यसुप्रभाव ते नम शिवाय
सत्प्रपन्नरक्षणस्त्रभाव ते नम शिवाय ।
स्वप्रकाश निस्तुलानुभाव ते नम शिवाय
विप्रद्विम्भदर्शिताद्र्द्वभाव ते नम शिवाय ॥ २३ ॥

१२८ शिवपञ्चाक्षरनक्षत्रमालास्तोत्रम् ।

सेवकाय मे मृड प्रसीद ते नम शिवाय
भावलभ्य तावकप्रसाद ते नम शिवाय ।
पावकाक्ष देवपूज्यपाद ते नम शिवाय
तावकाङ्गिभक्तदत्तमोद ते नम शिवाय ॥ २४ ॥

मुक्तिसुकिदिव्यभोगदायिने नम शिवाय
शक्तिकल्पितप्रपञ्चभागिने नम शिवाय ।
भक्तसकटापहारयोगिने नम शिवाय
युक्तसन्मन सरोजयोगिने नम शिवाय ॥ २५ ॥

अन्तकान्तकाय पापहारिण नम शिवाय
शान्तमायदन्तिचर्मधारिणे नम शिवाय ।
सतताश्रितव्यथाविदारिणे नम शिवाय
जन्तुजातनित्यसौख्यकारिणे नम शिवाय ॥ २६ ॥

शूलिने नमो नम कपालिने नम शिवाय
पालिने विरिञ्चितुण्डमालिने नम शिवाय ।
लीलिने विशेषरुण्डमालिने नम शिवाय
शीलिने नम प्रपुण्यशालिने नम शिवाय ॥ २७ ॥

शिवपञ्चाक्षरनक्षत्रमालास्तोत्रम् ।

१२९

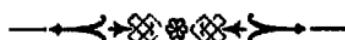
शिवपञ्चाक्षरमुद्रा
चतुष्पदोल्लासपद्मणिघटिताम् ।
नक्षत्रमालिकामिह
दधदुपकण्ठ नरो भवेत्सोम ॥ २८ ॥

इति श्रीमत्परमहसपरिव्राजकाचायस्य
श्रीगोविदभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य
श्रीमच्छकरभगवत् कृतौ
शिवपञ्चाक्षरनक्षत्रमालास्तोत्र सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

॥ द्वादशलिङ्गस्तोत्रम् ॥



सौराष्ट्रदेशे वसुधावकाशे
ज्योतिमय चन्द्रकलावतसम् ।
भक्तिप्रदानाय कृतावतार
त सोमनाथ शरण प्रपद्ये ॥ १ ॥

श्रीशैलशृङ्ग विविधप्रसङ्गे
शेषाद्रिशृङ्गेऽपि सदा वसन्तम् ।
तमर्जुन मल्लिकपूर्वमेन
नमामि ससारसमुद्रसेतुम् ॥ २ ॥

अवन्तिकाया विहितावतार
मुक्तिप्रदानाय च सज्जनानाम् ।
अकालमृत्यो परिरक्षणार्थ
बन्दे महाकालमह सुरेशम् ॥ ३ ॥

द्वादशलिङ्गस्तोत्रम् ।

१३१

कावेरिकानर्मदयो पवित्रे
समागमे सज्जनतारणाय ।
स्वदैव मान्धातृपुरे वसन्त
मोक्षारमीश शिवमेकमीढे ॥ ४ ॥

पूर्वोत्तरे पारलिकाभिधाने
सदाशिव त गिरिजासमेतम् ।
सुरासुराराधितपादपद्म
श्रीवैष्णवाथ सतत नमामि ॥ ५ ॥

आमर्दसज्जे नगरे च रस्ये
विभूषिताङ्ग विविधैश्च ओगै ।
सद्गुकिमुक्तिप्रदमीशमेक
श्रीवागनाथ शरण प्रपद्ये ॥ ६ ॥

सानन्दमानन्दवने वसन्त
मानन्दकन्द हत्यापवृन्दम् ।
वाराणसीनाथमनाथनाथ
श्रीविष्णवार्थ शरणं प्रपद्ये ॥ ७ ॥

१३२

द्वादशलिङ्गस्तोत्रम् ।

यो छाकिनीशाकिनिकासमाजे
 निषेव्यमाण पिशिताशनैश्च ।
 सदैव भीमादिपदप्रसिद्ध
 त शकर भक्तहित नमामि ॥ ८ ॥

श्रीताम्रपर्णजलराशियोगे
 निबद्धय सेतु निशि विल्वपत्रै ।
 श्रीरामचन्द्रेण समर्चित त
 रामेश्वराख्य सतत नमामि ॥ ९ ॥

सिंहाद्रिपार्श्वेऽपि तट रमन्त
 गोदावरीतीरपवित्रदेशे ।
 यदर्शनात्पातकजातनाश
 प्रजायते ऋयम्बकभीशमीडे ॥ १० ॥

हिमाद्रिपार्श्वेऽपि तटे रमन्त
 सपूज्यमान सतत मुनीन्द्रै ।
 सुरासुरैर्यक्षमहोरगाय
 केदारसङ्ग शिवभीशमीडे ॥ ११ ॥

द्वादशलिङ्गस्तोत्रम् ।

१३३

एलापुरीरम्यशिवालयेऽस्मि
न्समुल्लसन्त त्रिजगद्वरेण्यम् ।
वन्दे महोदारतरस्वभाव
सदाशिव त धिषणेश्वराख्यम् ॥ १३ ॥

एतानि लिङ्गानि सदैव मर्त्या
प्रात पठन्तोऽमलभानसाश्र |
ते पुत्रपौत्रैश्च धनैरुदारै
सत्कीर्तिभाज सुखिनो भवन्ति ॥ १३ ॥

इति श्रीमत्परमहसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्रीगोविदभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य
श्रीमच्छकरभगवत कृतौ
द्वादशलिङ्गस्तोत्र सपूर्णम् ।



॥ श्रो ॥

॥ अर्धनारीश्वरस्तोत्रम् ॥



चाम्पेयगौरार्धशरीरकायै
कर्पूरगौराधशरीरकाय ।
धम्मिलकायै च जटाधराय
नमः शिवायै च नम शिवाय ॥ १ ॥

करतूरिकाकुकुमचर्चितायै
चितारज पुञ्चविचर्चिताय ।
कृतस्मरायै विकृतस्मराय
नम शिवायै च नम शिवाय ॥ २ ॥

झणत्कणत्कङ्गणनुपुरायै
पादाब्जराजत्कणिनुपुराय ।
हेमाङ्गदायै भुजगाङ्गदाय
नम शिवायै च नम शिवाय ॥ ३ ॥

अर्धनारीश्वरस्तोत्रम् ।

१३५

विशालनीलोत्पललोचनायै
विकासिपङ्क्षेरहलोचनाय ।
समेक्षणायै विषमेक्षणाय
नम शिवायै च नम शिवाय ॥ ४ ॥

मन्दारमालाकलितालकायै
कपालमालाङ्कुतकन्धराय ।
दिव्याम्बरायै च दिग्म्बराय
नम शिवायै च नम शिवाय ॥ ५ ॥

अम्भोधरश्यामलकुन्तलायै
तटित्प्रभाताम्रजटाधराय ।
निरीश्वरायै निखिलेश्वराय
नम शिवायै च नम शिवाय ॥ ६ ॥

प्रपञ्चसृष्टचुन्मुखलास्यकायै
समस्तसहारकताण्डवाय ।
जगज्जनन्यै जगदेकपित्रे
नम शिवायै च नम शिवाय ॥ ७ ॥

१३६

अर्धनारीश्वरस्तोत्रम् ।

प्रदीपरब्रोज्ज्वलकुण्डलायै
 स्फुरन्महापश्चगभूषणाय ।
 शिवान्वितायै च शिवान्विताय
 नम शिवायै च नम शिवाय ॥ ८ ॥

एतत्पठेदष्टकमिष्टद या
 भक्त्या स मान्यो भुवि दधिजीवी ।
 प्राप्नोति सौभाग्यमनन्तकाल
 भूयात्सदा तस्य समस्तसिद्धि ॥ ९ ॥

इति शीमत्परमहसपरिव्राजकाचार्यस्य
 श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य
 श्रीमच्छकरभगवत कृतौ
 अर्धनारीश्वरस्तोत्रम् सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

॥ शारदाभुजंगप्रयाताष्टकम् ॥



सुवक्षोजकुम्भा सुधापूर्णकुम्भा
प्रसादावलम्बा प्रपुण्यावलम्बाम् ।
सदास्थेन्दुविम्बा सदानोष्टुविम्बा
भजे शारदाम्बामजस्त्र मदम्बाम् ॥ १ ॥

कटाक्षे दयार्दी करे ज्ञानमुद्रा
कलाभिर्विनिद्रा कलापै सुभद्राम् ।
पुरम्भी विनिद्रा पुरस्तुङ्गभद्रा
भजे शारदाम्बामजस्त्र मदम्बाम् ॥ २ ॥

ललामाङ्कफ़ाला लसद्वानलोला
स्वभक्तैकपाला यश श्रीकपोलाम् ।
करे त्वक्षमाला कन्तप्रब्रह्मलोला
भजे शारदाम्बामजस्त्र मदम्बाम् ॥ ३ ॥

सुसीमन्तवेणीं दृशा निर्जितैर्णि
 रमत्कीरवाणीं नमद्वजपाणीम् ।
 सुधामन्थरास्या मुदा चिन्त्यवेणीं
 भजे शारदाम्बामजस्य मदम्बाम् ॥ ४ ॥

सुशान्ता सुदेहा दृगन्ते कचान्ता
 लसत्सङ्गताङ्गीमनन्तामचिन्त्याम् ।
 स्मरेत्तापसै सङ्गपूर्वस्थिता ता
 भजे शारदाम्बामजस्य मदम्बाम् ॥ ५ ॥

कुरङ्गे तुरगे मृगेन्द्रे खगेन्द्रे
 मराले मदेभे महोक्षेऽधिरूढाम् ।
 महत्या नवम्या सदा सामरूपा
 भजे शारदाम्बामजस्य मदम्बाम् ॥ ६ ॥

खल्तकान्तिवहिं जगन्मोहनाङ्गी
 भजे मानसाम्भोजसुध्रान्तभृङ्गीम् ।
 निजस्तोत्रसगीतनृत्यप्रभाङ्गीं
 भजे शारदाम्बामजस्य मदम्बाम् ॥ ७ ॥

भवास्मोजनेत्राजसपूज्यमाना
 लसन्मन्दहासप्रभावकत्रचिह्नाम् ।
 चलश्वलाचारताटकणी
 भजे शारदास्मामजस्ता मदस्माम् ॥ ८ ॥

इति श्रीमत्परमहसपरिव्राजकाचार्यस्य
 श्रीगोविदभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य
 श्रीमच्छकरभगवत् कृतौ
 शारदाभुजगप्रयाताष्टक सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

॥ गुर्वष्टकम् ॥

—————*

शरीर सुरूप तथा वा कलन्न
यशश्वारु चित्र धन मेरुतुल्यम् ।
मनश्चेन लभ गुरोरङ्गिपद्म
तत किं तत किं तत किं तत किम् ॥ १ ॥

कलन्न धन पुत्रपौत्रादि सर्वे
गृह बान्धवा सर्वभेतद्धि जातम् ।
मनश्चेन लभ गुरोरङ्गिपद्म
तत किं तत किं तत किं तत किम् ॥ २ ॥

षडङ्गादिवेदो मुखे शास्त्रविद्या
कवित्वादि गद्य सुपद्य करोति ।
मनश्चेन लभ गुरोरङ्गिपद्म
तत किं तत किं तत किं तत किम् ॥ ३ ॥

विदेशेषु मान्य स्वदेशेषु धन्य
 सदाचारवृत्तेषु मतो न चान्य ।
 मनश्चेन्न लभ गुरोरङ्ग्रिपद्य
 तत किं तत किं तत किं तत किम् ॥ ४ ॥

क्षमामण्डले भूपभूपालवृन्दै
 सदा स्वेचित यस्य पादारविन्दम् ।
 मनश्चेन्न लभ गुरोरङ्ग्रिपद्य
 तत किं तत किं तत किं तत किम् ॥ ५ ॥

यज्ञो मे गत दिक्षु दानप्रतापा
 जगद्वस्तु सर्वं करे यत्प्रसादात् ।
 मनश्चेन्न लभ गुरोरङ्ग्रिपद्य
 तत किं तत किं तत किं तत किम् ॥ ६ ॥

न भोगे न योगे न वा वाजिराजौ
 न कान्तामुखे नैव वित्तेषु चित्तम् ।
 मनश्चेन्न लभ गुरोरङ्ग्रिपद्य
 तत किं तत किं तत किं तत किम् ॥ ७ ॥

१४२

गुर्वष्टकम् ।

अरण्ये न वा स्वस्य गेहे न कार्ये
 न देहे मनो वर्तते मे त्वनच्चये ।
 मनश्चेन लभ गुरोरङ्गिपद्मे
 तत किं तत किं तत किं तत किम् ॥ ८ ॥

गुरोरष्टक य पठेत्पुण्यदेही
 यतिर्भूपतिर्ब्रह्मचारी च गेही ।
 लभेद्वान्विष्टतार्थं पद ब्रह्मसङ्ग
 गुरोरक्तवाक्ये मनो यस्य लभम् ॥ ९ ॥

इति श्रीमत्परमहसपरिव्राजकाचार्यस्य
 श्रीगोविदभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य
 श्रीमच्छकरभगवत कृतौ
 गुर्वष्टक सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

॥ काशीपञ्चकम् ॥



मनो निवृत्ति परमोपशान्ति
सा तीर्थवर्या मणिकार्णिका च ।
ज्ञानप्रवाहा विमलादिगङ्गा
सा काशिकाह निजबोधरूपा ॥ १ ॥

यस्यामिद् कलिपतभिन्द्रजाल
चराचर भावि मनोविलासम् ।
सञ्चित्सुखैका परमात्मरूपा
सा काशिकाह निजबोधरूपा ॥ २ ॥

कोशेषु पञ्चस्त्वधिराजमाना
बुद्धिर्भवानी प्रतिदेहगेहम् ।
साक्षी शिव सर्वगतोऽन्तरात्मा
सा काशिकाह निजबोधरूपा ॥ ३ ॥

काशया हि काशत काशी
 काशी सर्वप्रकाशिका ।
 सा काशी विदिता येन
 तेन प्राप्ता हि काशिका ॥ ४ ॥

काशीक्षेत्रं शरीरं त्रिभुवनजननी व्यापिनी ज्ञानगङ्गा
 भक्ति श्रद्धा गयेय निजगुरुचरणध्यानयोगं प्रयाग ।
 अविश्वेशोऽयं तुरीयं सकलजनमनं साक्षिभूतोऽन्तरात्मा
 देहे सर्वं मदीये यदि वसति पुनस्तीर्थमन्यतिकमस्ति ॥

इति श्रीमत्परमहसपरिव्राजकाचार्यस्य
 आगोविदभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य
 श्रीमच्छकरभगवत् कृतौ
 काशीपञ्चकं संपूर्णम् ॥





श्लोकानुक्रमणिका

॥ श्रीः ॥

॥ श्लोकानुक्रमणिका ॥

—४—

	पृष्ठम्	पृष्ठम्	
अ	अनादिकल्प	१०८	
अखण्डे सच्चिदानन्दे	१०७	अनेकवासनामिश्र	१०९
अगोरनेत्रै	८७	अतकातकाय	१२८
अग्ने वहि	६६	अ धस्य मे हृतविवेक	१६
अङ्ग गलित	६५	अजपूर्णे सदापूर्णे	७७
अङ्ग हरे पुलक	७०	अपारकारुण्य	८५
अन्युत केशव राम	३९	अग्रमेयदिय	१२७
अन्युत केशव सत्य	३९	अभ्योधरश्यामल	१३५
अच्युतस्याष्टक य	४१	अयमेकोऽवशिष्टो	१०८
अज रुक्मणीप्राण	३८	अथि मधुरे	९८
अज्ञानध्वान्त	११	अरण्ये न वा स्वस्य	१४२
अज्ञानोच्छिष्टकरस्य	११०	अर्थमनर्थ	६९
अद्वासाभिन्न	९०	उल्लक्षलक्ष	९३
अतिविपदाम्बुधि	९९	अलक्ष्यलक्ष	९३
अद्राक्षमक्षीण	८४	अवन्तिकाया	१४३

	पृष्ठम्		पृष्ठम्
अविनयमणनय	११७	आहुयस्य स्वरूप	२२
अवीरासनस्थै०	९	इ	
अव्याक्रिर्धात	२२	इद तु नमदाष्टक	१४
असि-धुप्रकोपै०	९	इ-द्राच्यालिदशा	१०४
असीतासमेतै०	८	इष्टवस्तुमुरय	१२२
असूनायम्यादौ	४२	इष्टाविशिष्टमतयो०	७२
अहो धृत स्वन	१४	ई	
आ		ईश्वरो गुरुरात्मेति	१०९
आकृतिसाम्याच्छालम०	११	ईहितक्षणप्रदान	१२६
आक्रामद्वया त्रिलोकी	२५	उ	
आचार्यभ्यो लड्ड	४६	उद्भृतनग	११८
आत्मन सत्क्रिया	११०	उद्यद्वानुसहस्र	७९
आदावादिपितामहस्य	१०२	उन्नम्र कम्रमुचै०	२७
आदिक्षान्त	७६	उपासकाना त्व०	८८
आदौ कल्पस्य	२८	उपासकाना य०	८४
आपदद्विभेद	१२३	उपासते य	८७
आपादादा च शीर्षात्	३४	उर्बासिर्वज्जनेश्वरी	७६
आमर्दसज्जे	१३१	ए	
आमीलिताक्ष०	७१	एकीकृत्यानेक	५२
आराधयामि	१०८	एकेन चक्रमपरेण	१६
आलेपन्नत्व	८६	एकेन मुद्रा	८६

शोकानुक्रमणिका ।

१४९

	पृष्ठम्		पृष्ठम्
एको वेणुधरो	१०५	कलाभिरदो०	८५
एतत्पठेदृष्टकभिष्टद	१३६	कस्तूरिकाकुङ्कम	१३४
एतत्पवनसुतस्य	२	कस्तूरीतिलका०	११९
एतानि लिङ्गानि	१३३	कस्त्व कोऽह	६७
एलापुरीरम्य	१३३	का ते कान्ता क०	६४
एव वेदान्त०	१११	का ते काताध०	६५
ओ		कात कारणकारण	५७
ओत प्रोत	५४	का त वक्षो नितान्त	२९
क		कान्त्यभ्य पूरपूरे	२८
कटाक्षे दयाद्री	१३७	कान्त्या निदित	८७
कण्ठाकल्पोद्वत्तैर्य	३०	काम क्रोध	६८
कदाचित्कालिदी	११४	कामनाशनाथ	१२३
कफःयाहतोष्ण	२१	कालभीतविग्र	१२२
कमले कमलाक्ष	७४	कालभैरवाष्टक	९१
कम्प्राकारा	२३	कालाम्बुदालिलितो०	७१
करिवरमौक्तिक	९९	कावेरिकानमदयो	१३१
कर्णस्थस्वर्णकम्भो०	३१	काशीक्षेत्र शरीर	१४४
कर्पूरागरुकुङ्कुमा०	१२१	काशी धन्यतमा	१०४
कर्मपाशनाश	१२७	काश्या हि काशते	१४४
कलत्र धन	१४०	किरीटोज्ज्वलत्सर्व	३७
कलरवन्दपुर	१००	कुञ्जितै कुन्तलै	४१

	पृष्ठम्		पृष्ठम्
कुतो वीची	१०२	ग-ध्वामर	८२
कुरङ्गे तुरगे	१३८	गायत्रीं गरुडध्वजा	१२१
कुरुते गङ्गा	६६	गायते श्रुतिभि	१०८
कुच्छै कोटिशतै	१०६	गीदेवतति	७२
कृपापारावार	११५	गुह्यवरणाम्बुज	६९
कृपापारावारा	९८	गुरोरष्टक य	१४२
कृष्ण गोविंद हे	४०	गेय गीतानाम	६८
कैलासाच्चल	७६	गोपाल प्रभुलाला	५७
कोटीराङ्गदरक्ष	८१	गोपीमण्डलगोष्ठी	५७
कोडय देहे देव	५३	गोविंदाष्टकमेतत्	५८
कोशानेता पञ्च	५०	च	
कोशेषु पञ्चस्वधिं	१४३	चक्रस्थेऽचपले	८१
को होवा यादात्मनि	५३	च द्राक्षनल	७७
कण्ड्रलमङ्गीर	४	चाञ्चल्यारुण	११९
क्षत्रियाणकरी	७७	चाम्पेयगौरार्ध	१३४
क्षमामण्डले	१४१	चावस्थित सोम	८६
क्षेत्रक्षत्वं ग्राप्य	५१	चिदशे विभु	१८
ग		ज	
गङ्गातीरमनुक्तम	१०५	जटिली मुण्डी	६५
गङ्गाष्टकमिद पुण्य	१०३	जन्ममृत्युघोर	१२४
गत तदैव	९३	जरेय पिशाचीव	२०

	पृष्ठम्		पृष्ठम्
जलच्छुताच्छुता०	९६	त्वदभ्युलीन	९२
जलान्तकेलि	९६	त्वमाचामोपेद्र	५९
जाग्रहृष्टा स्थूल	४९	त्वमेवासि दैव पर	५
जीमूतश्यामभासा	२३	त्वयि मयि चा०	६८
ज्वलत्कान्तिवहिं	१३८	द	
श		दद्याद्यानुपवनो	७२
शणत्कणत्कङ्कण	१३४	दशग्रीवसुग्र	८
त		दशाङ्ग धूप	६०
तटिद्वाणे वस्त्रे	६०	दक्षहस्तनिष्ठ	१२४
तटिद्वासस नील	३६	दामोदर गुणमदिर	११८
तत्त्वार्थमतेवस०	८६	दिक्कालौ वेदयतौ	३२
तरङ्गसङ्ग	९६	दिघस्तिभि	७४
तरुणारुणमुखकमल	१	दिनयामियौ	६५
तव हितमेक वचन	१२	दियध्युनीमकरद	११७
तावत्सव सत्य	५५	दीनमानवालि०	१२५
त्रिगुणात्माशेष	१०९	दु खाम्भोधिगतो	१०५
त्रैविष्टपरिपुरीरघ्न	५६	दूरीकृतसीतार्ति	२
न्यक्ष दीनसत्कृपा०	१२६	दृश्यादृश्य०	७६
त्वत्तीरे मणिकर्णिके	१०४	दृष्टा गीतास्वक्षरतत्व	५१
त्वत्तीरे मरण	१०५	देवराजसे यमान	८९
त्वत्प्रभुजीवप्रिय०	११	देवी सर्वविचित्र	७७

	पृष्ठम्		पृष्ठम्
देवो भीति विधातु	२७	नादे नारद०	८२
दैवतानि कति	८७	नानायोगिमुनीद्र	८०
द्वौद्वैकत्वं यच्च	५२	नानारकविचित्र	७५
ध		नाभीनालीकमूलात्	२८
घन्या सोमविभावनीय	१२०	नारायण करुणामय	११८
घर्मसेतुपालक	९०	नारीस्तनभर	६२
घेनुकारिष्टहा०	४०	नाह प्राणो नैव	५४
ध्यातायाभाव	१११	निजे मानसे मदिदे	५
ज		नित्य स्नेहातिरेकात्	३१
न भोगे न योगे	१४१	नित्यान दकरी	७५
नम सच्चिदानन्द	६	निरञ्जनस्य किं	१०७
नमस्कारोऽशाङ्का०	६१	निरावरणचैताय	१०९
नमस्ते नमस्ते	६	निर्मलस्य कुत	१०७
नमस्ते सुभित्रासुपुत्रा०	९	निर्लेपस्य कुतो	१०७
नमो भक्तियुक्तानुरक्ताय	६	नैवेद्यमात्मलिङ्गस्य	१०९
नमो विश्वकर्मे	६	न्यकुपाणये	१२७
नमोऽस्तु नालीक	७३	प	
नरातङ्गोद्धङ्ग	४३	पद्मानादप्रदाता	३०
नलिनीदलगत	६३	पयोम्भोधेद्वीपात्	५९
नवजलदद्युति	९९	परब्रह्मापीड	११५
न वै प्रार्थ्ये	११५	परिभ्रमन्ति ब्रह्मा०	११०

શ્રોકાનુક્રમણિકા ।

૧૫૩

	પૃષ્ઠમ्		પૃષ્ઠમ्
પવિત્ર ચરિત્ર	૭	પ્રહાદનારદપરાજાર	૧૭
પદ્યબ્લૂડોડ્વ્યક્ષર	૪૯	પ્રાણાનાયમ્યોમિતિ	૪૬
પદ્યબ્લૂષ્રૂપન્ગત્ર	૪૮	પ્રાણાયામ	૬૯
પાતાત્પાતાલપાતાત્	૩૨	પ્રાણો વાહ વાક્	૫૩
પાતાલ યસ્ય નાલ	૨૮	પ્રાત સ્મરામિ	૧૧૨
પાદામ્ભોજમસેવા	૨૬	પ્રાતર્નેમામિ	૧૧૨
પાયાદ્વક્ત સ્વાત્મનિ	૫૫	પ્રાતર્ભેજામિ	૧૧૨
પાહિ માસુમામનોશ	૧૨૬	પ્રાસ પદ પ્રથમત	૭૧
પીઠીભૂતાલકાન્ત	૩૩		૩
પીતેન દ્વોતતે	૨૭	બદ્ધા ગલે યમભટા	૧૬
પુણ્યપાપરજ સહો	૧૦૮	બાલસ્તાવત्	૬૩
પુનરાપિ જનન	૬૭	બાહુતરે મધુજિત	૭૧
પુર પ્રાઞ્ચલીનાઞ્ચનેયા૦	૪	બૃદ્ધાવનભુવિ	૫૮
પૂર્ણસ્યાવાહન	૧૦૭	બ્રહ્મન્બ્રહ્માણ્યજિસ્થા	૩૧
પૂર્વોત્તરે પારલિકા૦	૧૩૧	બ્રહ્મમસ્તકાવલી	૧૨૩
પૃથિવ્યા તિષ્ઠ્યો	૪૩	બ્રહ્માણ ખણ્ણયન્તી	૧૦૧
પ્રચંડપ્રતાપપ્રભાવા૦	૭	બ્રહ્માન દાજલેનૈવ	૧૦૯
પ્રદીપસરકોર્જવલ	૧૩૬	બ્રહ્માન દાખિધ	૧૦૮
પ્રમદ્બસુષ્પુન્મુખ	૧૩૫	બ્રહ્મા વિષ્ણુ રુદ્ર	૪૯
પ્રમાણ ભવાબ્ધે૦	૩૬	બ્રહ્મેન્દ્રરુદ્રમરુદક	૧૩
પ્રસીદ પ્રસીદ પ્રચંડ	૧૦	બ્રહ્મેશાન્યુત	૮૨

	पृष्ठम्		पृष्ठम्
भ		मध्याह्न मणि०	
भगवति तव	१०२	मनोनिवृत्ति	१०६
भगवति भवलीला	१०१	मदारमाला	१३५
भगवद्ग्राता	६७	ममाच्यदेवो	८५
भज गोवि द	६२	मलापहारि	९५
भवाम्भोजनेत्रा०	१३९	महागभीर	९२
भवोत्तापाम्भोधौ	१००	महाम्भोघेस्तीरे	११४
भानुकोटिभास्वर	८९	महायोगपीठे तटे	२६
भुक्तिमुक्तिदायक	९०	महायोगपीठ परि०	१८
सुक्तिमुक्तिदिय	१२८	महारक्षपीठ	४
सुजगप्रयात पठ०	२१	महेद्रादिर्देवो	४३
सुजगप्रयात पर	१०	मा कुरु धनजन	६४
सुज स ये वेणु	११४	मातर्जाह्नवि	१०३
भूतसङ्घनायक	५१	माता च पार्वती	७८
भूत्वा भूत्वा यदन्त०	३४	मात्रातीत स्वात्म०	४७
म		मालालीवालिधाम्भ	३३
मङ्गलप्रदाय	१२९	मुक्ताहारलसत्कि०	७९
मञ्जन्मातञ्ज	१०१	मुग्धा मुहुर्विदधती	७०
मत्स्य कूर्मै वराहो	३४	मुदिताय मुग्ध०	८८
मत्स्यादिभिरवतारै	११८	मुरारिकाय कालिमा	९५
मधुवनचारिणि	९८	मूढं जहाहि	६२

श्लोकानुक्रमणिका ।

१५५

	पृष्ठम्		पृष्ठम्
मूर्तीमूर्ते पूर्व०	५४	यस्यातकथे स्वात्म०	५१
मृत्जामत्सीहेति	५६	यस्या दास्त्रा	२७
मोदात्पादादिकेश य	३५	यस्यामिदं कल्पित०	१४३
		यस्यैकाशादित्थ०	४५
य ब्रह्मारथ	४६	यावत्पवनो	६३
य विज्ञानज्योतिष	५५	यावद्वित्तोपार्जन०	६३
यक्षराजबाधवे	१२४	या वायावानुकूल्यात्	२९
यत् सर्वं जात	४२	या सूते सत्त्वजाल	२४
यत्कटाक्षसमुपासना०	७३	युक्त्यालोच्य व्यास	५२
यत्र प्रत्युपरद	३३	येनाविष्टा यस्य	५०
यदा घमग्लानि	४४	येऽयो वर्णश्चतुर्थ	२५
यदा मत्समीप	५	येऽयोऽसूयन्दिरुचै	२४
यदावणयत्कर्णमूले	३	योगरतो वा	६६
यद्यद्वेद्य तत्तदह	४७	योगान दकरी	७५
यद्यद्वेद्य वस्तु	४७	यो डाकिनीशाकिनि०	१३२
यशो मे गत	१४१	योऽय देहे चेष्टयिता०	५२
यस्ते प्रसन्ना०	८८	यो विश्वप्राणभूत०	२३
यसादयन्नास्त्यपि	४६		८
यस्यादाकामतो द्या	२५	रज सत्त्वतमो०	१०९
यस्याद्वाचो निवृत्ता	३४	रत्नपादुकाप्रभा०	९०
यस्या दृष्टामलाया	२६	रथारुदो	११५

	पृष्ठम्		पृष्ठम्
सथ्याकर्पट	६७	वयसि गते	६४
रागादिगुणशून्यस्य	११०	वाग्भूगौर्यादिभेदै	२४
रागामुक्त	५५	वानरनिकराध्यक्ष	२
राजताचलेऽद्र	१२४	विजातीयै पुष्टै	६१
राजन्मत्तभराल	११९	विज्ञानाशो यस्य	५३
राक्षसक्षोभित	४०	विदेशेषु मान्य	१४१
रुक्षस्मारेक्षुचाप	३२	विशुद्धुद्वौतवत्स्य०	४०
रेखा लेखादिवाद्या	२४	विद्राविताशेष	८४
ल		विना यस्य ध्यान	४३
लक्ष्माकारालकालि०	३२	विभु वेणुनाद	३७
लक्ष्मीनृसिंहचरणाव्य	१७	विविधब्रह्म	११०
लक्ष्मीपते कमलनाथ	१६	विशालनीलोत्पल	१३५
लक्ष्मीभर्तुर्मुजाग्रे	२२	विशुद्ध पर सचिदा०	३
लपच्छन्युतानन्त	२१	विशुद्ध शिव	१८
लसत्तद्रिकास्मेर	४	विश्वाणैकदीक्षा०	३०
लसत्कुण्डलामृष्ट	१९	विश्ववन्द्योऽह०	११०
लसत्तरङ्ग	९५	विश्वानन्दयितु	१०७
ललामाङ्कफाला	१३७	विश्वामरेद्र	७०
लावण्याधिक	१२०	विष्णवे जिष्णवे	३९
व		विष्णों पादद्वयाग्रे	२५
वक्काम्भोजे लसात	३१	विष्णोंविंश्वश्वरस्य	२३

श्लोकानुक्रमणिका ।

१५७

	पृष्ठम्		पृष्ठम्
विष्टपाधिपाय	१२७	शुलिने नमो नम	१२८
विहाररासखेद	१६	शैलेद्वादवतारिणी	१०२
बीणानादनिमीलिता०	८२	श्रद्धाभक्तिध्यान	५१
बीताखिलविषयेच्छ	१	श्रवण तस्य देवस्य	११०
बेदवाचामवेद्यस्य	१०८	श्रिया शातकुम्भद्वाति	२०
बेदात्मैश्चाध्यात्मिक	५०	श्रियालिष्टो विष्णु	४२
व्यालम्बिनीभि	८८	श्रीताम्नपर्णी	१३२
व्योमकेश दिव्य	१२३	श्रीनाथादत	१२०
श		श्रीमत्पयोनिधिनिकेतन	१३
शत्रौ मित्रे	६८	श्रीमत्यौ चारुवृत्ते	२६
शब्दवहामयी	१३	श्रीमत्सुदरनायकी	८०
शम्भरवैरिशारातिग०	१	श्रीमदात्मने	१२२
शारच्च द्रविम्बानन	३७	श्रीविद्या शिववाम०	७९
शरीर कलन्त्र	२०	श्रीविद्या शिववाम०	८१
शरीर सुरूप	१४०	श्रीशैलशृङ्गे	१३०
शिलापि त्वदङ्ग्रिक्षमा	७	श्रुत्ये नमोऽस्तु	७२
शिव नित्यमेक	३	श्लोकत्रयमिद	११३
शिवपञ्चाक्षरसुद्रा	१२९	ष	
शुक्लौ रजतप्रतिमा	११	षट्तारा गणदीपिका	१२०
शुभमुलिने	११	षडङ्गादिवेदो	१५०
शूलठङ्गपाश	८९	स	

	पृष्ठम्		पृष्ठम्
सपत्करणि सकले०	७३	सदा से य कृष्ण	६४
सभूयाम्भोविमध्यात्	२	सदैव नन्दिन द०	९७
ससारदूपमतिघोर	१४	सनत्कुमार	९३
ससारघोरगहने	१५	स पुण्य स गम्य	७
ससारजालपतितस्य	१४	सविदुसिष्टु	९२
ससारदावदहना०	१३	समस्तबासनात्याग	१०९
ससारभीकरकरीद्र	१४	समाधिरात्मनो	१११
ससारदृक्षमखबीज	१५	समानोदितानेक	१९
ससारसर्पविषदिग्ध	१४	सम्यक्साहा	२६
ससारसागरनिमञ्जन	१५	सरसिजनिलये	७३
ससारसागरविशाल	१५	सव दृष्टा स्वात्मनि	४८
सस्तीर्ण कौस्तुभाशु	२९	सर्वजीवरक्षणैक	१२५
सन्धूं ताम्बूल	६	सवशो यो यश	१४५
सन्तामात्र केवल	७४	सर्वत्रास्ते सर्वशरीरी	४८
सत्य ज्ञान शुद्ध	४९	सर्वत्रैक पश्यति	४८
सत्य ज्ञानमनात	५६	सर्वदुर्वासमाजाल	१११
सत्यपि भेदापगमे	११७	सर्वमङ्गलाकुचा०	१२५
सत्सङ्गत्वे	६४	सानादमानदवने	१३१
सदा वृत्तान्न	६०	सिंहाद्रिपार्श्वेऽपि	१३२
सदा राम	पिबत०	सुखत क्रियते	६९
सदा राम	पिबन०	सुनासापुट सुदर०	१९

श्लोकानुकमणिका ।

१५९

	पृष्ठम्		पृष्ठम्
सुताकारा प्रसुते	३३	स्नानव्याकुलयोषित्	५७
सुरदाङ्गदैरवित	१९	सुरत्कौत्सुभालकृत	३७
सुरमदिरतरु	६६	स्वकच्च दनवनितादीन्	१२
सुवक्षोजकुम्भा	१३७	स्वदक्षजानु०	८५
सुशा ता सुदेहा	१३८	स्वभक्ताग्रगण्यै	८
सुसीमतवेणी	१३८	स्वभक्तेषु सदर्शिताकार	२
सृष्टा सर्वं स्वात्म०	५		ह
सेवकाय मे	१२८	हर त्वं ससार	११६
सौराष्ट्रदेशे	१३०	हरे राम सीतापते	९
स्तवं पाण्डुरङ्गस्य	३८	हारस्योहप्रभाभि	३०
स्तुवति य	७४	हित्वा हित्वा	४७
स्तोकभक्तिओऽपि	१२७	हिमाद्रिग्राञ्छेऽपि	१३२
स्तोष्ये भक्त्या	४५	हृदम्भोज कृष्ण	५९

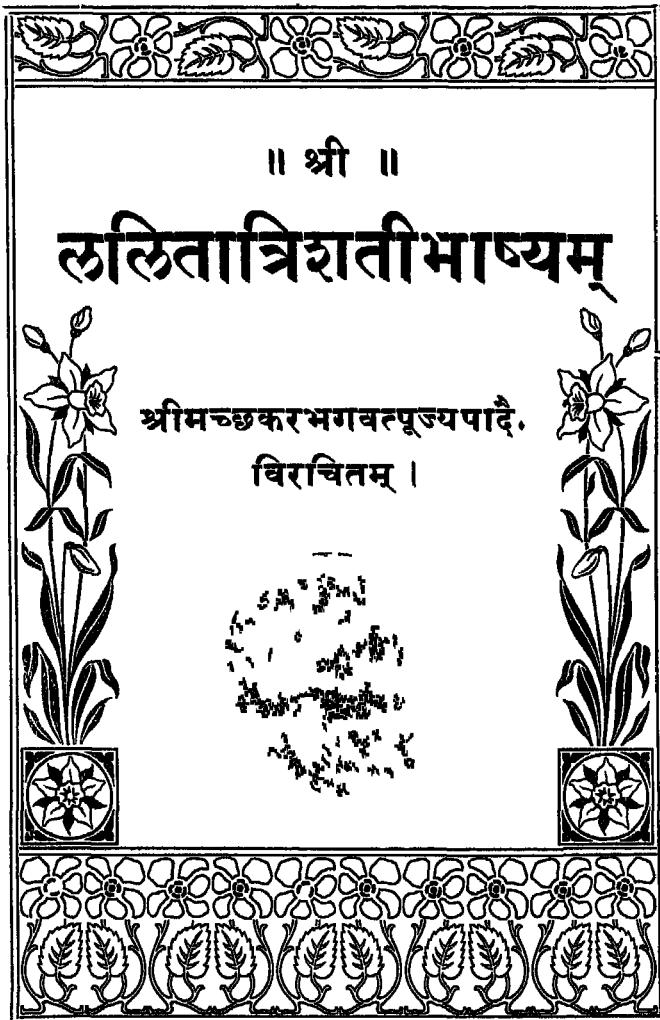


॥ श्री ॥

ललितात्रिशतीभाष्यम्

श्रीमच्छकरभगवत्पूज्यपादे ।

विरचितम् ।



॥ श्री ॥

॥लिलात्रिशतीभाष्यम्॥



वन्दे विद्वेश्वर दत्त सर्वसिद्धिप्रदायिनम् ।
वामाङ्गारुदवामाक्षीकरपल्लवपूजितम् ॥ १ ॥

पश्चाञ्छ्रेष्ठसुमराजितपञ्चशास्त्रा
पाटल्यशालिसुषुमाजितगात्रवल्लीम् ।
प्राचीनवाक्स्तुतपदा परदत्ता त्वा
पञ्चायुधार्चितपदा प्रणमामि देवम् ॥ २ ॥

लोपामुद्रापतिं नत्वा हयशीवमधीश्वरम् ।
श्रीविद्याराजससिद्धिकारिपक्जवीक्षणम् ॥ ३ ॥

विस्तारिता बहुविधा बहुभि कृता च
टीकां विलोकयितुमक्षमता जनानाम् ।
तत्त्वसवपदथोगविवक्भानु
तुष्ट्यं करामि लिलापदभक्तियोगात् ॥ ४ ॥

भगस्त्य उचाच—

हयग्रीव दयासिन्धो भगवन् शिष्यवत्सल ।

त्वत् श्रुतमशेषेण ओतव्य यददस्ति तत् ॥

रहस्यनामसाहस्रमपि त्वत् श्रुत मया ।

इत् पर मे नास्त्येव ओतव्यमिति निश्चय ॥

तथापि मम चित्तस्य पर्यासिनैव जायते ।

कात्स्नर्यार्थं प्राप्य इत्येव शोचयिष्याम्यह प्रभो ॥

किमिद कारण ब्रूहि ज्ञातव्याशोऽस्ति वा पुन ।

अस्ति चेन्मम तद्वृहि ब्रूहीत्युक्त्वा प्रणम्य तम् ॥

सूत उचाच—

समाललम्बे तत्पादयुगल कलशोद्धव ।

हयाननो भीतभीत किमिद किमिद त्विति ॥

मुञ्च मुञ्चेति त चोक्त्वा चिन्ताक्रान्तो बभूव सः ।

चिर चिचार्य निश्चिन्वन्वत्कृच्य न मयेत्यसौ ॥

तूष्णीं स्थित स्मरन्नाज्ञां ललिताम्बाकृता पुरा ।

प्रणस्य विप्र स मुनिस्तत्पादावत्यजन्स्थित ॥७॥

वर्षन्नयावधि तथा गुरुशिष्यौ तथा स्थितौ ।
तच्छृणवन्तश्च पद्धयन्त सर्वे लोकांसुविस्मिताः॥

तत् श्रीललितादेवी कामेश्वरसमन्विता ।

प्रादुर्भूय हयग्रीव रहस्येवमचोदयत् ॥९॥

श्रीदेव्युवाच—

अश्वाननावयोः प्रीति शास्त्रविश्वासिनि त्वयि ।
राज्य देय शिरो देय न देया षोडशाक्षरी ॥१०॥

स्वमातृजारवद्गोप्या विद्यैषेत्यागमा जगुः ।

ततोऽतिगोपनीया मे सर्वपूर्तिकरी स्तुति ॥

मया कामेश्वरेणापि कृता सगोपिता भृशम् ।

मदाज्ञया वचो देव्यश्चकुर्नामसहस्रकम् ॥१२॥

आवाभ्या कथिता मुख्या सर्वपूर्तिकरी स्तुतिः ।

सर्वक्रियाणा वैकल्यपूर्तिर्यज्ञपतो भवेत् ॥१३॥

सर्वपूर्तिकर तस्मादिद नाम कृत मया ।

तदूहि त्वमगस्त्याय पात्रमेव न सशाय ॥ १४ ॥

पत्न्यस्य लोपामुद्राख्या मामुपास्तेऽतिभक्तिः ।

अय च नितरा भक्तस्तस्मादख्य वदस्व तत् ॥

अमुश्चमानस्त्वत्पादौ वर्षन्नयमसौ स्थित ।

एतज्जातुमतो भक्त्या हीदमेव निर्दर्शनम् ॥

चित्तपर्यासिरेतस्य नान्यथा सभविष्यति ।

सर्वपूर्तिकर तस्मादनुज्ञातो मया वद ॥ १७ ॥

सूत उवाच—

इत्युक्त्वान्नरधादम्बा कामेश्वरसमन्विता ।

अथोत्थाप्य हयग्रीवं पाणिभ्या कुम्भसभवम् ॥

सस्थाप्य निकटे वाचमुवाच भृशविस्मित ।

हयग्रीव उवाच—

कृतार्थोऽसि कृतार्थोऽसि कृतार्थोऽसि घटोङ्गव ॥

त्वत्समो ललिताभक्तो नास्ति नास्ति जगच्छये ।

येनागस्त्य स्वय देवी तथ वर्तव्यमन्वशात् ॥

सच्छिद्येण त्वया चाह द्रष्टवानस्मि ता शिवाम् ।
यतन्ते दर्शनार्थीय ब्रह्मविष्णवीशपूर्वका' ॥

अत पर ते वक्ष्यामि सर्वपूर्तिकर स्तवम् ।
यस्य स्मरणमात्रेण पर्यासिस्ते भवेहृदि ॥ २२ ॥

रहस्यनामसाहस्रादपि गुह्यतम मुने ।
आवश्यक ततोऽप्येतल्ललिता समुपासितुम् ॥

तदह सप्रवक्ष्यामि ललिताम्बानुशासनात् ।
श्रीमत्पञ्चदशाक्षर्या कादिवर्णान्कमान्मुने ॥

पृथग्विशतिनामानि कथितानि घटोद्भव ।
आहत्य नाम्ना त्रिशती सर्वसपूर्तिकारिणी ॥

रहस्यातिरहस्यैषा गोपनीया प्रथलत ।
ता शृणुष्व महाभाग सावधानेन चेतसा ॥

केवल नामबुद्धिस्ते न कार्या तेषु कुम्भज ।
मन्त्रात्मकत्वमेतेषा नाम्ना नामात्मतापि च ॥

तस्मादेकाग्रमनसा श्रोतव्य च त्वया सदा ।

सूत उवाच—

इत्युक्त्वा त हयग्रीवं प्रोचे नामशतत्रयम् ॥

बहुकालं सुभक्तिमहिन्ना गुरुपादाम्बुजमवलम्ब्य स्थिताय
कुम्भयोनिमुनये शिवदपतिकृतनामशतत्रयोकत्या प्रेरितो हय
ग्रीवं उवाच—

ककाररूपा कल्याणी कल्याणगुणशालिनी ।

कल्याणशैलनिलया कमनीया कलावती ॥

ककाररूपेति । ककार कवर्णं रूपं ज्ञापकविशेषणं
यस्या सा, कादिविद्याविग्रहत्यर्थं । अथवा ककार रूपं
वाचकं येषा त ककाररूपा हिरण्यगर्भं उदकम् उत्तमाङ्गं
सुखादयश्च । हिरण्यगर्भनिष्ठजगद्वारकजगत्कर्तृत्वाविगुणं
वस्त्रं ककारस्य व्यञ्जनादिमवर्णत्वेन वतत इति तद्वाच्यं
तथा तथा । उदकनिष्ठाआदिद्वारा जगत्सजीवनहेतुत्वमपि
ककारस्य विद्याग्रिमवर्णतयास्तीति तद्वूपा वा । सर्वेषां
प्राणिना शिरस्यमृतमस्तीति योगमार्गेण कुण्डलिनीगमने
तत्रत्यतत्प्रवाहापुत्रयोगिनामीश्वरसाम्यं जायत इति योगशा
खेषु प्रसिद्धम् । तद्वृत् कवर्णं मन्त्रादिमभागस्थं तत्पु-

रश्चर्यापरायणाना शिवभावमेव यच्छतीति वा तद्रूपत्वर्थ ,
 ‘क ब्रह्म स्व ब्रह्म’ इति श्रुते । दहराकाशस्य सुखस्वरूप
 त्वेन परमप्रेमास्पदतया अभिलाषविषयत्ववत् ककारोऽप्य
 तिप्रीतिविषयमूलमन्त्रादिमाक्षरतया अभ्यर्हितत्वाद्वा तद्रूपे
 त्वर्थ ॥ ३५ ककाररूपायै नम ॥

कल्याणी । कल्याणानि सुखानि । युवसार्वभौमानन्दादारभ्य ब्रह्मानन्दपर्यन्त तैत्तिरीयकादौ प्रतिपादितानि ।
 तत्तदुपाधिभेदेष्ववक्षित्रस्वरूपतया तानि कल्याणशब्दवा
 च्यानि, ‘एतस्यैवानन्दस्य अन्यानि भूतानि मात्रामुपजी
 वन्ति’ इति श्रुते । समष्टिव्यष्टिवस्त्रमुपहितस्वरूपेण सभ
 वतीति मतुप्रसमामोपपत्ति । तथा च राहो शिर इतिवत्
 समासान्तर्गतषष्ठ्यर्थभेदस्याविवक्षिततया आनन्दैकविग्रहव
 तीत्वर्थ , ‘विज्ञानमानन्द ब्रह्म’ इति श्रुत्युक्तब्रह्मस्वरूपल
 क्षणवतीत्वर्थ ॥ ३५ कल्याण्यै नम ॥

कल्याणगुणशालिनी । कल्याणा सुखकर्ता र ये गुणा
 सत्यकामसत्यसकल्पसर्वाधिपत्यसर्वेशानत्ववामनीत्वसयद्वाम-
 त्वादय , ते अस्या शालयन्त इति, तथा एना शोभयन्ती
 ति वा, तै शालयत इति वा कल्याणगुणशालिनी । तथा
 च कल्याणाश्च ते गुणाश्च कल्याणगुणा शालयन्त्येनाभिति

कल्याणगुणशालिनी, अस्मिन् समासे देवताया पराधीन गुणवत्त्वं स्वतः शुद्धचैतन्यत्वं च मुकुरितम् । कल्याणगुणौ शास्यत इत्यत्र गुणवत्त्वमात्रं देवताया द्योत्यते । तस्यौपा विकृत्वं वैदकमपि स्तुतौ तदप्रकटनं न दोषाय । यदि गुणानामारोपितत्वेन तत्सकीर्तनस्य भेदबुद्धिसमये तत्कृपा प्राप्तिहेतुत्वेनावश्यकत्वम्, तथापि तदपवादपुर सर्ग शुद्ध चैतन्याभेदध्यानरूपमुख्यभजनं मुख्यमवति सपादयितु स्व-गुरुरूपदिष्टमार्गेण सुकरमेवेति नातिविस्तार्यते ॥ ॐ कल्या-णगुणशालिन्यै नम ॥

कल्याणशैलनिलया । शिलाना विकार शैल शिलाधन इत्यर्थं, कल्याणं सुखमेव शैलं धनीभूत इत्यर्थं, तस्मिन् कल्याणशैले स्वस्वरूप आनन्दघने निलयति तिष्ठतीति कल्याणशैलनिलया, ‘स भगवं कस्मिन् प्रतिष्ठित इति स्वे महिन्नीति होवाच’ इति श्रुते, देवदत्तं म्वस्मिन्नेव स्वयं वर्तते इति लौकिकप्रथागाच्च, देवताया स्वस्वरूपे स्वावस्थानं युज्यत इति । कल्याणमेव शैलवत् धनीभूत कल्याणशैल आनन्दमयकोशं कल्याणशैलो निलय यस्या सा इति बहु ब्रीहिसमाप्तं न विहङ्गं, ‘ब्रह्म पुच्छं प्रतिष्ठा’ इति उक्तं श्रुतिप्रामाण्यात् । अथवा कल्याणशैलं महामेरु निलयं गृह-

यस्या सा तथा , सुमेरुमध्यशृङ्खस्थेत्यर्थ ॥ ॐ कल्या
णशैलनिलयायै नम ॥

कमनीया । परमानन्दस्वरूपत्वन् परमप्रेमास्पदा , ‘को
हेवान्यात्क प्राण्यात् । यदष आकाश आनन्दो न स्यात्’ इति
श्रुते । सुखस्य मनोहरत्वेन सर्वेषांविषयत्ववत् मायावृता-
ना सुखप्रापकत्वेन स्वस्वेष्टदेवतामु प्रीत्यतिशयेन तत्पूजादौ
प्रवर्तता तत्फलदानेन मनोहरत्वाद्वा कमनीया । ज्ञानिनामा
नन्दघनीभावात्मकसुन्दरमूतिमत्तया वा कमनीया ॥ ॐ
कमनीयायै नम ॥

कलावती । कला शिर पाण्याद्यवयवा , चतु षाष्ठकला
विद्यारूपा वा , चन्द्रकला वा , भक्तध्यानाय अस्या सन्ती-
ति कलावती ॥ ॐ कलावत्यै नम ॥

कमलाक्षी कलमष्ट्री करुणामृतसागरा ।

कदम्बकाननावामा कदम्बकुसुमप्रिया ॥

कमलाक्षी । कमले इव अक्षिणी यस्या सा तथा ।
कमलाया लक्ष्म्या अभिशब्देन तन्निमित्तक ज्ञान लक्ष्यते
विषयतासब धेन तद्वतीति वा । कमलाया ऐहिकामुष्मि
कश्रिय हेतुभूते अक्षिणी यस्या सा— इति स्वकीयेक्षणमा

त्रेण महदैश्वयप्रापिकेति भाव ॥ ॐ कमलाक्ष्यै नम ॥

कल्मषघ्नी । कल्मषाणि पापानि हन्ति नाशयतीति कल्मषघ्नी, ‘अह त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि’ इति भगवद्वचनात् । अथवा वेदान्तमहावाक्यजन्यसाक्षात्काररूप-ब्रह्मविद्या ‘ज्ञानामि सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा’ इति स्मृते, ‘न स पापः लोकः शृणोति’ इति श्रुतेश्च ॥ ॐ कल्मषध्न्यै नम ॥

करुणामृतसागरा । करुणया कृपया जात यदमृत मोक्षरूप तस्य सागर इव सागरा । यथा अमृतसमुद्र स्वयममृतस्वरूप सन् अन्यानपि लोकान् अमृतपायिमेघाद्विमुक्तामृतेन सजीवयति, तथा ‘ब्रह्म वेद ब्रह्मैव भवति’ ‘ब्रह्मविदाप्रोति परम्’ इत्यादिश्रुत्या स्वयममृतस्वरूपा सती । ‘लभते च तत कामान्मयैव विहितान्हितान्’ इति भगवद्वचनेन तत्तदधिकारिकृतकर्मोपासनादिफलस्य देवताप्रापणीयस्य सप्राप्नौ तत्तदधिकारिणा तत्तत्कल स्थितमिति सभान्यत इति सागरोपमा । अमृतवत्सर्वमजीवनी करुणामृतस्य अभिज्ञाश्रयत्वात् सागरा, करुणा च भक्तविषयकपरिपाल्यताबुद्धि । यद्वा, करुणया कृपया अमृता शाश्वतकीर्तिमन्वेन ब्रह्मादिलोक गता सागरा सगरराजवैश्या यस्या सा तथा, यद्वा,

करुणया दयया हेतुना अमृताय प्राप्त सागर समुद्रो यथा
सा भागीरथी, करुणामृतसागरा ॥ ॐ करुणामृतसाग-
रायै नम ॥

कदम्बकाननावासा । कदम्बनामककल्पवृक्षयुक्त यत्का-
नन वन तत्रावासो गृह यस्या सा तथा ॥ ॐ कदम्बकान-
नावासायै नम ॥

कदम्बकुसुमप्रिया । कदम्बाना कुसुमानि कदम्बकुसुमानि
तेषु प्रिया प्रीतिमतीति यावत् । यद्यपि प्रियशब्द प्रीतिवि-
षयवाचक, तथापि कुसुमजन्यप्रीतरभावेन तद्विषयताया
वक्तमशक्यत्वात् तथोक्तम ॥ ॐ कदम्बकुसुमप्रियायै नम ॥

कदर्पविद्या कदर्पजनकापाङ्गवीक्षणा ।

कर्पूरवीटीसौरभ्यकल्पोलितकुसटा ॥ ३ ॥

कदर्पविद्या । कदर्पस्य विद्या तत्रिष्ठप्रत्यग्रहैक्यज्ञान-
मित्यर्थ । अथवा विद्याप्रापकत्वात्तदृष्टमूलमन्त्रवर्णमसुत्तायो
विद्येत्युच्यते वेदवाक्येषु उपनिषद्पदवत् । तद्वान्यार्थत्वात्
तथा देवी सून्यते ॥ ॐ कदर्पविद्यायै नम ॥

कदर्पजनकापाङ्गवीक्षणा । अपाङ्गाभ्या वीक्षणमपाङ्गवी
क्षणम्, ईषद्वर्णनभिति यावत् । कदर्पस्य जनक अपाङ्ग

वीक्षण यस्या सा । अनेन नाम्ना येषा जडानामपि कुरु-
पिणा जनाना उपरि सकृदीषद्वीक्षणमभिजायते, ते कदर्प-
वद्रूपयौवनसामध्यलक्ष्मीभाजो भवन्तीति ध्वनितम् । यद्वा
कदर्पस्य जनक श्रीनारायण स यस्या अपाङ्गवीक्षणे
ईषद्वालिचलन वर्तते, यस्या आङ्गामात्रवश्यतया महा
विष्णु जगद्रक्षादिकार्थं करोतीति सा तथा इति । अथवा,
कदर्पजनका महालक्ष्मी यस्या अपाङ्गवीक्षणे प्रर्यतया व
र्तते सा तथा । कदपस्य मन्मथस्य जनका उत्पादका
स्त्रकृचन्दनादिभोग्यविषया ते यस्या अपाङ्गवीक्षणात् भ-
वन्ति मा तथा । अथवा, चन्द्रस्य वामनेत्रतया अपाङ्ग
वीक्षण चन्द्रिकोच्यते । कदपजनक अपाङ्गवीक्षण यस्या
सा तथा । कदर्पजनकाशब्देन लक्ष्मीनिवासकमल ल
क्षयते, तद्वत् अपाङ्ग कमलाक्षीत्यथ तत्रिरूपितवीक्षण
लोकसज्जिवन यस्या सा तथा ॥ ॐ कदर्पजनकापाङ्ग
वीक्षणायै नम ॥

कर्पूरवीटीसौरभ्यकङ्गोलितककुमटा । कर्पूरयुक्ताश्च ता
वीटयश्च ताम्बूलकबलानि तासा सौरभ्य सौगन्ध्य तै
कङ्गोलितानि असकृत्परिमलितानि ककुभा दिशा तटानि
प्रदेशा यस्या मा । मुखवासितपरिमलेन जगन्मात्र सुर-

भीकृतमिति स्वरूपातिशयोक्ति अस्मिन्नास्मि व्यञ्जयत , महा
राजभोगवतीत्यर्थ । ॐ कर्पूरवीटीसौरभ्यकल्पोलितककुम
द्यायै नम ॥

कलिदोषहरा कजलोचना कम्बविग्रहा ।
कर्मादिसाक्षिणी कारयित्री कर्मफलप्रदा ॥ ४ ॥

कलिदोषहरा । कले निन्द्या जायमानाना पुरुषाणा
जन्ममात्रण ये दोषा पापानि आयाति, तान हृष्टा प्रुता
कीर्तिता सस्तुता पूजिता ध्याता सती हरतीति तथा । कले
अन्योन्यवादिना कलहात्तत्त्वमताभिनिवेशवशाज्ञायमाना ये
दोषा परब्रह्मविधये अस्तित्वनास्तित्वदेहादिव्यतिरिक्तवभि
अत्वाभिन्नत्वगुणित्वादिसाधकयुक्त्याभासतदत्तुगुणसमत्याभा
सश्रुतितात्पर्यविघटनान्यथाकरणदुराग्रहजन्यकामकोघपरुष
परवशक्रियमाणनिन्दासहनादिरूपा बहुविधा दोषा , तान-
द्वैतब्रह्माज्ञानसाधनमुक्तिरूपेण हरतीति कलिदोषहरा ॥ ३०
कलिदोषहरायै नम ॥

कजलोचना । केभ्य जायन्त इति कजानि, कजशब्द
न अरविन्दनीलोत्पलानि लक्ष्यन्ते तद्वज्ञाचने यस्या सा तथा ।
अथवा कज ब्रह्माण्डम् । ‘अय पूर्वमप सृष्टा तासु वीर्यम

पासुजत् तदण्डमभवद्वैमम्' इति वचनात् कजानि अनेक
कोटिब्रह्माण्डानि लोचनयो लोचनकृतवीक्षणात् यस्या
सा तथा, 'सेय देवतैक्षत' इति श्रुते ॥ ॐ कजलोच
नायै नम ॥

कम्रविग्रहा । कम्र अतिमनोङ्ग , गाम्भीर्यधैर्यमाधुर्यादि-
बहुगुणोदितत्वात्, विग्रह मूर्ति यस्या मा तथा, 'आ
नन्दरूपमसृत यद्विभाति' इति श्रुते । आनन्दस्वरूपत्वाद्वा
कम्रविग्रहा , ललितारूपेत्यर्थ ॥ ॐ कम्रविग्रहायै नम ॥

कर्मादिसाक्षिणी । कर्म आदिर्येषा तानि कर्मादीनि
उपासनायोगश्रवणमनननिदिध्यासनानि । तेषा साक्षिणी अ-
सबन्धी द्रष्ट्री, 'साक्षी चेता' इति श्रुते । अथवा कर्मा
द्य साक्षिभूता जीवनिष्ठा तदनाश्रयतया आत्मदर्शन
साधनानि सृज्यमानजगदुपादानभूतानि यस्या सा तथा ॥
ॐ कर्मादिसाक्षिण्यै नमः ॥

कारयित्री कारयितृत्व नाम कुर्वित्याङ्गापयितृत्व जाय
मानकार्यगोचरकृत्युत्पत्तिहेतुकर्मोद्भवकत्वरूपलिङ्गलोट्टव्य
प्रत्ययाना धर्म विधिनिष्ठभावनेत्युच्यते । तेषा शब्दा
त्मकतया जडाना तथात्वासभवात्तदधिष्ठानचैतन्यरूपतया

‘सर्वे वेदा यत्रैक भवन्ति’ इति श्रुत्या वेदस्यात्माभेदेन स्व प्रकाशकतया अर्थप्रकाशनद्वारा प्रामाण्यविधीनामपि वेदैक देशतया प्रेरणरूपत्वात् तदधिष्ठानचैतन्यात्मनाकारयतीति तथा, ‘एष हेव साधु कर्म कारयति’ इति श्रुते ॥ ॐ कारयित्यै नम ॥

कर्मफलप्रदा । कृताना कर्मणा कालान्तरभाविफलप्रदाने अहृष्ट कारणमित्यनीश्वरमीमासकादिमतम्, तत्र । जडाना सूक्ष्माणामहृष्टाना चतनधर्मकर्मफलप्रदानसामर्थ्या योगात् कृताना कर्मणा फलावश्यभावे ‘कर्माध्यक्ष’ इति श्रुते, ‘मयैव विहितान्हितान्’ इति स्मृतेश्च, ‘फलमत उप पते’ इति न्यायाच्च परदेवता कर्मफलप्रदा ॥ ॐ कर्म फलप्रदायै नम ॥

एकाररूपा चैकाक्षर्येकानेकाक्षराकृतिः ।
एतत्तदित्यनिर्देश्या चैकानन्दचिदाकृनि ॥

एकाररूपा । एकार रूप मन्त्रद्वितीयावयवसङ्गापक यस्या सा तथा ॥ ॐ एकाररूपायै नम ॥

एकाक्षरी । एक मुख्यम् ईश्वरोपाधित्वेन । न क्षरति आत्मज्ञानेन विनामुक्ते न नश्यतीति अक्षर कृटस्थशब्दवाच्य

माया । तत्प्रतिविम्बनिष्ठसर्वज्ञत्वाद्याधायकविशेषणत्वेन अस्या अस्तीति एकाक्षरी । एकम् अक्षर सबप्रकृतित्वात्परापरज्ञाप्रतीकतया तदुपासनया तदुभयप्राप्तिसाधनत्वेन शब्दब्रह्मरूपलक्षितलक्षकशब्द प्रणव अस्या अस्तीति वा । एक अखण्डैकचैतन्यरूप अक्षर अनश्वर अविनाशी परमश्वर अर्धशरीरित्वन अस्यामस्तीति वा । एकान्यक्षराणि मायाबीजादीनि तदुपासनाप्रतीकित्वेन अस्या सन्तीति वा । ‘अथ परा यया तदक्षरमधिगम्यते’ इति श्रुत अखण्डाकारवृत्तिप्रतिफलनयोग्यचैतन्यरूपतया तद्वृत्तिद्याप्ति मात्रेण अक्षरपदलक्ष्यचैतन्य विषयतासबन्धेन अस्या अस्तीति एकाक्षरी । चकार निर्गुणब्रह्माणोऽपि सगुणब्रह्मविशेषणसद्ग्रावसमुच्चयपर सर्वत्रापि द्रष्टव्य । ‘सच्चिन्मय शिव सा क्षात्स्यानन्दमयी शिवा’ इति वचनेन, ‘खीरूपा चिन्त येहेवीं पुरुपामथेश्वरीं । अथवा निष्कल ध्यायत्सच्चिदानन्दविग्रहाम्’ इति स्मृत्या च, ‘त्वं खी त्वं पुमान्’ इति श्वेताश्वतरोपनिषदि उपाधिकृतनानारूपसभवोक्तेश्व । अत एव ‘सेय देवतैक्षत’ इत्यादौ ‘तत्सत्य स आत्मा’ इत्यन्ते च श्रुतौ खीलिङ्गान्तदेवतादिपदाना तत्सत्यमिति नपुसकान्तस्य स आत्मेति पुँलिङ्गात्मशब्दस्य एकार्थत्वम् अविवक्षि-

तापाधिमत्तया तत्त्वपदलक्ष्यार्थस्यैकत्वात् । तस्मान् तत्त्व पदलक्ष्यार्थे सर्वेऽपि गुणा वर्णितु सभवन्तीति हय ग्रीवेण अस्या त्रिशत्या बहव चकारा उपाच्चा । तेन वय सर्वेषा सर्वत्र न पार्थक्यन प्रयोजनान्तर पश्याम ॥
ॐ एकाक्षर्यै नमः ॥

एकानेकाक्षराकृति । एकम् ईश्वरप्रतिबिम्बोपाधितया शुद्धसत्त्वप्रधानम् अक्षरमज्ञानम् । अनेकानि मलिनसत्त्वप्रधान तया जीवोपाधिभूतान्यक्षराणि अज्ञानानि, ‘माया चाचिदा च स्वयमेव भवति’ इति श्रुते । एक चानेकानि च एकानकानि तानि च अक्षराणि च तानि तथा ‘माया तु प्रकृतिम्’ इति श्रुते । तेष्वाकृतय प्रतिबिम्बान्यवच्छिन्नानि वा चैतन्यानि घटस्थोदकावच्छिन्नप्रतिबिम्बिताकाशवद्यस्या सा तथा । अथवा एकानि च प्रणवाद्यानि अनेकानि च अकारादि क्षकारान्तानि अक्षराणि वर्णा आकृति स्वरूप यस्या सा, मातृकास्वरूपत्वेन वा । ‘अकारादिक्षकारान्ता मा तृकेत्यभिधीयते’ इति वचनात् । अथवा एच कश्च एकारककारौ तौ चेतराण्यनेकाक्षराणि च सर्वं मिलित्वा पञ्चदशवर्णात्मिका मूलविद्या आकृति स्वरूप यस्या सा । साक्षितया एकीभूता अनेकाक्षरेषु अनेकाज्ञानेषु आकृति स्वरूप

शोधिततत्त्वपदार्थसामरस्यात्मक यन्या सा तथा ॥ ॐ
एकानेकाक्षराकृतये नम ॥

एतत्तदित्यनिर्देश्या । एतत् एतत्कालेऽपि इयत्तापरिच्छेदवद्धस्तु तत् परोक्षमनिश्चितस्वरूपम् । एतत् तत् एतत्तत् । इतिकार इत्थभावेतत्तीयार्थे । तथा च एतस्वतस्वाभ्यामि त्यर्थे । एतत्तदित्यनेन निर्देष्टु निर्वक्तु योग्या निर्देश्या सा न भवतीति अनिर्देश्या । लोके सविशेषो हि पदार्थं परोक्षत्वापरोक्षत्वादिधर्मविशेषण तद्रोतेन निर्वक्तु शक्य । शब्दप्रवृत्तिनिमित्तजातिगुणक्रियाषष्ठ्यर्थाना यत्र सबन्धो नास्ति, ‘अशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययम्’, ‘निर्गुण निष्कलम्’ इत्यादिश्रुत्या, तादृग्वस्तु केन करणेन केन वा वचनेन निर्देष्टु शक्यम् । ‘यद्वाचानभ्युदितम्’ इति श्रुते । अत एतत्तदित्यनिर्देश्या वाच्चनसातीतेत्यर्थे । अथवा, एतत् प्रत्यक्षादिप्रमाणसिद्धं कार्यं पश्चाद्वावि । तत् परोक्षत्वादिविशिष्टं पूर्वकालसबन्धं व्यवहितं कारणगुच्यते । इति-शब्दः उभयत्र सबन्धनीय । कार्यमिति कारणमित्यपि शुद्धैतन्यरूपा अनिर्देश्या, कार्यत्वकारणत्वघटकोपाधिविरहितत्वेन कार्यकारणभावाभावे तद्वाचकशब्दैर्विषयीकर्तुमशक्यत्वात् । अथवा, एतत् अपरोक्षतया अहमिति प्रती

यमान जीवचैतन्य त्वपदवाच्यार्थ । तत् परोक्षतया प्रती
यमानमीश्वरचैतन्य त्वपदवाच्यार्थ । इति शब्द एव
कारार्थ । तथा च वादिभेदसिद्धान्त अनूदित । सा
स्वयमते प्रकृतिर्जगत्कर्त्री, जीवो नानाचतन भोक्ता इत्यत
ईश्वर एव नास्तीत्यज्ञीकृतम् । भागवतमते तु ‘गुणी
सववित्’ इति श्रुत नित्यगुणविशिष्टात् परमेश्वराद्विष्णो
जीवानामुत्पत्तिविनाशवत्त्वेन अनित्यत्वात् स एव भगवान्
पारमार्थिक एक इत्यज्ञीकृतम् । तदुभयवादिसिद्धान्त
स्य औपनिषदमते निरस्तत्वात् तदुभयविधया अनिर्देह
इया । परमार्थसच्चिदानन्दरूपतया छान्दाग्यगतवेता
शब्दार्थस्य प्रतिपादनादिति भाव । अथवा, तटस्थे
श्वरवादिकाणादादिसिद्धान्तवत् व्यवस्थितभद्रवज्जीवेश्वररू
पतया अनिर्देहया । भेदव्यवस्थाया एव साधितुगण-
क्यत्वादिति एतत्तदित्यनिर्देहया ॥ ॐ एतत्तदित्यनिर्देह-
यायै नम ॥

एकानन्दचिदाकृति । एका मुख्या मोक्षरूपत्वेन प्रापि
त्विता । आनन्द मुख्यम् । चिन् चैतन्य प्रकाशक्वानम् ।
आनन्दश्वासौ चिच्च आनन्दचित् एका चासावानन्दचिच्च
एकानन्दचित् आकृति स्वरूप यस्या सा । सच्चिदानन्द

ब्रह्मरूपलक्षणवतीत्यर्थ । ‘विज्ञानमानन्द ब्रह्म’ ‘आनन्दो
ब्रह्मेति व्यजानात्’ इति श्रुते ‘आनन्दाद्य प्रधानस्य’ इति
न्यायाच्च दीप्तिस्वरूपप्रकाशात्मकपरमानन्दस्वरूपस्य जीव
न्मुक्त्यवस्थाया परमात्मज्ञानवत् पुरुषानुभवरूपप्रत्यक्षप्रमा-
णगोचरत्वमस्या इति वा तथा । अथवा, एकेषा आनुभा-
विकाना योगिनामानन्दसाक्षात्काररूपा आकृति निरावर-
णप्रकाशरूपा यस्या सा तथा । अथवा, आनन्द शिवा,
चित् परमेश्वर, एके मूर्तिभेदरहिते आनन्दचितौ आकृति
यस्या सा तथा ॥ ॐ एकानन्दचिदाकृतये नमः ॥

एवमित्यागमाबोध्या चैकभक्तिमदर्चिता ।
एकाग्रचित्तनिधर्याता चैषणारहिताद्वता ॥

एवमित्यागमाबोध्या । ननु आनन्दशब्दस्य लक्षणया
आनन्दमयो वाच्य । ‘य एको जालवानीशत इशनीभि’
इति श्रुत्युक्तैकत्वमपि जीवे सिद्धति । तथा च एकश्चासा-
वानन्दश्च तस्य चिन् अधिष्ठानप्रकाशकचैतन्यमाकृति यस्या
सेति विग्रह सम्भवति । ‘ब्रह्म पुच्छ प्रतिष्ठा’ इति तत्प्रका-
शकचैतन्यस्य पुच्छशब्देन परामर्शात् । एव च सति प्रका-
शकनित्यत्वस्य प्रकाश्यनित्यत्वापेक्षत्वात् । ‘सत्य ज्ञानम-

नन्त ब्रह्म' इत्यादिब्रह्मस्वरूपलक्षणवाक्येषु वाच्यार्थप्राधा
न्येन विधिसुखेनैव ब्रह्मप्रतिपादने अतब्राहृत्तिरूपनिषेधम्
स्वेन लक्षणार्थप्राधान्येन ब्रह्मस्वरूपलक्षणप्रतिपादनायोगेन
तत्त्वमसिवाक्ये वैशिष्ट्य वाक्यार्थ सभवतीति चेत्, नेत्या-
ह—एवमित्यागमाबोधयेति । एवविशिष्टतया—इति प्रत्यक्ष
सिद्धत्वेन आगमैवेदै ज्ञापनीया न भवति । आनन्द
शब्दस्यानन्दमात्रवाचकस्य तत्प्रचुरे सभावितेष्वु ख जीवे
लक्षणाया त्रयो दोषा । पारमार्थिकभिन्नसत्ताकवस्त्व
न्तराभावेन तत्त्वपदबाच्यार्थनिष्ठविशेषणद्वयस्य अन्योन्य
विरोधवत्तया तम प्रकाशवद्वैशिष्ट्यायोगे अखण्डार्थो वा
क्यारथ सप्द्यते । तथा च स्वरूपलक्षणवाक्येषु वाच्यार्थस्य
'अतोऽन्यदार्तम्' इति श्रुत्या मिथ्यात्वप्रतिपादनात् निषेध
मुखेनैव अतब्राहृत्तिस्वरूपप्रतिपादनेन लक्षणवाक्यानि सम
ज्ञसानि भव तीति भाव ॥ ॐ एवमित्यागमाबोध्यार्थं
नम् ॥

एकभक्तिभद्रचिता । एकस्मिन्नभेदे जीवब्रह्माणो भक्ति
भजनीयत्वबुद्धि तत्परिजिज्ञासा येषा सन्ति, तैरर्चिता
पूजिता इत्येतदुपलक्षण स्तुता भ्याता नमम्बृतेत्येवमादी
नाम्, 'यन्मनसा ध्यायति तद्वाचा बदति तत्कर्मणा कराति'

इति श्रुते मानसिकव्यापारपूर्वकानि हि इतरेन्द्रिय कर्मणि भवन्तीत्यभिप्राय । अथवा, अस्मिन् सप्तारमण्डले तत्स्वरूपपरिज्ञातार ये केचन, तेषा भजनीयत्वाध्यवसायो भक्ति तदेकप्रबणता सगुणब्रह्मविषया अष्टविधा, तैरेकभ किमद्विरचिता अन्तर्यांगबहिर्यांगमहायागप्रकारै पूजिता इत्यर्थ ॥ ॐ एकभक्तिमदर्चितायै नम ॥

एकाग्रधित्तनिर्धार्ता । एकम् ऐक्यरूपम् अग्रम् आ लम्बन विषय विजातीयप्रत्ययतिरस्कारपूर्वकसजातीयवृत्ति काभि निरन्तरव्याप्तिविषयीकृतचैतन्य यस्य तत्त्वाहश चित्तमन्त करण येषा तै । यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहा रधारणाध्यानसमाधीना परिपाकातिशयेन पश्चात्सपद्यमाना सप्रज्ञातसमाधे त्रिविधा भूमिका— क्रतभरा, प्रज्ञालोका, प्रशान्तवर्गाहृता चेति । ऊरु यथाभूत सञ्चिदानन्दलक्षण ब्रह्म भरति वृत्तिव्याप्त्या विषयीकरोतीति प्रथमा तथा, ‘आत्मन्येव वश नयेत्’ इति भगवद्वचनात् । प्रज्ञालोका । प्रज्ञाया अखण्डाकारवृत्तौ नित्यनिरन्तराध्यासेन परिपाक नीताया ब्रह्मविषयिण्या आवरणाभिभव कुर्वन्त्या सत्याम् , ‘प्रज्ञा प्रतिष्ठा’ इत्यादिश्रुते , प्रज्ञाया ब्रह्मस्वरूपाया आलोक अभिव्यक्ति साक्षात्कार यस्या सपद्यत सा का

रणविज्ञानम् । यस्मिन्विज्ञाते सर्वमिदं विज्ञात भवतीत्येकं
विज्ञानेन सर्वविज्ञानरूपम् । प्रारब्धवशात्तदा चित्तं तदध्य
स्तु सर्वजगद्गृष्णभिच्छति यदि, तदानीं चैतन्यप्रकाशेनैव
प्रकाशितं जगत्स्वाप्रपदार्थवदशेषं भासते । इदं च भरद्वाजा
दीनामस्तीति पुराणादिप्रमाणवेद्यमस्माकम् । तथा च तस्या
भूमिकाया निरुद्धसामर्थ्यं सदन्तं करणं साकारस्वरूपं नि
र्वासनं यदा नश्यति, तदा प्रशान्तवाहिता भवति । वह
प्रवाह सततवृत्तिं धारा अस्य अस्तीति वाही, वाहिनो
भावं वाहिता प्रशान्ता च सा वाहिता च प्रशान्तवाहिता ।
अथवा, प्रशान्तं वाह अस्य अस्तीति प्रशान्तवाही ।
प्रशान्तवाहिनो भावं प्रशान्तवाहिता, ‘मनसो वृत्तिशून्यम्य
ब्रह्माकारतया स्थितिः । असप्रज्ञातनामेति समाधिर्थोऽग्निना
प्रिय’ इति वचनात्, ‘प्रशान्तमनसं ह्येनम्’ इति भगव
द्वचनात्, ‘पृथग्यमेजाऽनिलखे समुत्थितं पञ्चात्मके याग
गुणं प्रवृत्ते । न तस्य रागो न जरा न मृत्युं प्राप्तस्य
योगाग्निमयं शरीरम्’ इति श्रुत्या उक्तलभणसाधनपरिपाकव
शाङ्खवति । तैर्निर्ध्याता, ध्यानस्य निर्गतत्वात् । भेदास्फूर्तौं
ध्यानविषयो न भवति ध्यातुं स्वरूपमेव प्रकाशते, ‘ब्रह्म
वेदं ब्रह्मैव भवति’ इति श्रुते । निध्याता इति पाठं नितरा

श्रवणमनननिदिध्यासनेन साक्षात्कृता इत्यर्थ ॥ ॐ एका
ग्रचित्तनिर्धातायै नम ॥

एषणारहिताद्वता । एषणा इच्छा । मा त्रिविधा । एत
लोकजयाय पुत्रैषणा । पितॄलोकजयसाधनकर्मसपादनाय
वित्तैषणा । उपासनादिना जयसाधन देवलोक , तस्मिन्ने
षणा लोकैषणा । आमि रहितै अनाकृष्टचित्तै , ‘ते ह
स्म पुत्रैषणायाश्च वित्तैषणायाश्च लोकैषणायाश्च व्युत्थायाथ
भिक्षाचर्यं चरन्ति’ इति श्रुते । एषणारहिता ये परमहस
परिब्राजका सन्यासिन तै आदरेण अतिशयप्रेमणा भवस्व
रूपेण आदृता अङ्गीकृता निरन्तरध्यानेन साक्षात्कृता सती
मोक्षरूपतया प्राप्तर्थ ॥ ॐ एषणारहिताद्वतायै नम ॥

एलासुगन्धिचिकुरा चैन कूटविनाशिनी ।
एकभोगा चैकरसा चैकैश्वर्यप्रदायिनी ॥ ७ ॥

एलासुगन्धिचिकुरा । एलावदिति दृष्टान्तप्रदर्शन सौग
न्धमात्रसद्वावप्रदर्शनेनाकलिपतदिव्यपरिमलसद्वावे हेतु ,
न तु प्राकृतत्वदग्नपरम् , ब्रह्मण स्वाधीनमायत्वात् । तद्व
सुगन्ध इति साजात्यमात्र व्यञ्यते, गुणमात्रादानेन
सर्वत्र पदार्थान्तरस्य दृष्टान्तीकरणात् । सुगन्धा येषा

सन्तीति सुगन्धिन तादृशा चिकुरा कुन्तला यम्या
सा तथा । स्वभावसिद्धदिव्यपरिमलशालिसर्वाङ्गसौरभ्य
वती, चिकुरपदस्य उपलक्षणत्वादिति भाव ॥ ॐ एला
सुगन्धिचिकुरायै नम ॥

एन कूटविनाशिनी । एनसा पापाना कूट समुदाय ।
आगामिसचितप्रारब्धभेदेन समष्टिरूपेण हृष्टतर तत्त्वज्ञा
नेन विना अन्यस्य भोगमात्रस्य तद्विनाशकत्वावगमात्
तेषा च कल्पकोटिकालं क्रमिकभोगप्रदानं विनोपायान्तं
रेण क्षयेष्यमात्मब्रह्माभेदज्ञानविषयतया चैतन्य नाशय
तीति तथा । एवविदि पाप कर्म न श्रिष्यते, ‘अशरीर
वाव सन्त प्रियाप्रिये न स्पृशत’ इत्यादिश्रुते, ‘अह
त्वा मर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि’ इति स्मृतेश्च । अथवा
एनासि च तत्कारणीभूत कूट कपटवचनाभिधानं च त
त्कारण माया च नाशयतीति तथा ॥ ॐ एन कूटविना
शिन्यै नम ॥

एकभोगा । एकेन कामेश्वरेण साक भोग भुक्ति । भोग
स्वस्वरूपानन्दानुभव यम्या मा तथा । अथवा, एकम्य अ-
ज्ञानतत्कार्यस्य कार्यकारणरूपेण अभिग्रहस्य तदधिष्ठानतया
स्वमत्ताधायकत्वेन भोग परिपालन यम्या सा । प्रपञ्चो

त्पत्तिरिथतिनाशहतुमायोपाधिकचैतन्यमित्यर्थ । ‘एकाकी न रमते तत पवित्रं पढीश्चाभवताम्’ इति पुरुषविधब्राह्मणवच्च नात्, दृपत्येरैक्षिकभेदकत्वावगमेन परमार्थत एतस्वरूप स्यैकचैतन्यरूपतावगमात्, तदुभयभोगस्यापि एकभोगत्वात् तद्वतीति वा ॥ ॐ एकभोगायै नमः ॥

एकरसा । एक अभिन्न रस सामरस्य यस्या सा, ‘रसऽह्यवाय लब्ध्वानन्दी भवति’ इति श्रुते । एक नव रसषु मुरुय शृङ्गाररस यस्या सा तथा । अथवा, एकेन परमेश्वरेण अस्या क्रियमाण प्रीत्यतिजयरूप रस एतद्विषयक यस्या सा । अथवा एकस्मिन्नेव स्वभर्तरि रमनिरतिशयप्रीति अनुरागमज्ञा यस्या सा । अथवा, षड्सेषु मुख्य मधुररस प्रियत्वेन यस्या सा, सत्त्वगुणप्रधानमायापाधिकचैतन्यस्वरूपत्वात् । ‘रस्या स्तिर्घास्तिरा हृष्या आहारा सात्त्विकप्रिया इति भगवद्वच्चनात् ॥ ॐ एकरसायै नमः ॥

एकैश्वर्यप्रदायिनी । ईष्टे प्ररथति अन्तर्यामित्वेन सवा णीति ईश्वर । ‘य सर्वेषु भूतषु तिष्ठन्य सर्वाणि भूता न्यन्तरो यमयति’ इति श्रुते । तत्प्रेर्यमाणाना जीवाना भूतशब्दवाक्याना अज्ञानतत्कार्यान्तं करणोपहितप्रतिबिम्ब

चैतन्यरूपाणा जाग्रदाद्यवस्थाभिमानिना अखण्डब्रह्मसाक्षा
त्कारवेलायाम् अभेदानुभवात्, 'तत्त्वमसि' इति श्रुतेश्च 'ए
कमेवाद्वितीयम्' इति विशेषितत्वाच्च, एकश्चासावीश्वरश्च ए
केश्वर तस्य भाव तदैक्यं तत् प्रददातीति तथा । बहुषु वि
द्याधनवत्सु तेष्वेको विद्याधनवानित्युक्ते, तत्रत्यजननिष्ठविद्या
भावे तदतिशयप्रतीतिवन् एक च निरतिशयमणिमादिकमैश्व
र्यं नि श्रेयस प्रददातीति वा । यद्वा एक मानुष सर्वोत्कृष्ट
सर्वभौमत्वादिलक्षणमध्युदयसामान्यमैश्वर्यं प्रददातीति वा
तथा ॥ ॐ एकेश्वर्यप्रदायिन्यै नम ॥

एकानपत्रसाम्राज्यप्रदा चैकान्तपूजिना ।

एधमानप्रभा चैजदनकजगदीश्वरी ॥ ८ ॥

एकातपत्रसाम्राज्यप्रदा । आतपान् आ समन्तान् अध्या
त्माधिदैवताधिभूतानि आ शब्दार्थं । तभ्या जाता तापा
आतपा । तपन्ति शाश्वयन्तीति तपा, आतपन्य त्रायति
रक्षतीति आतपत्र सर्वससारदु खोपशमात्मकमात्मज्ञानम् ।
'यज्ञात्वा न पुनर्मोहमेव यास्यसि इति भगवद्वचनान् ।
अखिलदुखनिदानाज्ञाननिवर्तक एक लक्षणया अभिनन्दन
विषयकमित्यर्थं । एक च तत् आतपत्र च अखण्डकार
ज्ञानम्, तेन जायमान यत्साम्राज्य सम्राजो भाव सर्वोत्तम

त्वं तत्प्रददातीति । अथवा, एकातपत्रसाम्राज्यं चक्रवर्तिं त्वं तस्प्रददातीनि वा ॥ ॐ एकातपत्रसाम्राज्यप्रदायै नमः ॥

एकान्तपूजिता । एकस्य अद्वितीयस्य शोधितत्वपदार्थस्य अन्ते उपाधौ हृदि परिच्छेदकत्वात् पूजिता अहमित्य परोक्षीकृता, ‘यत्साक्षादपरोक्षाद्ब्रह्म’ इति श्रुते । एकस्य ब्रह्मणं अन्ते उप पूजिता षट् गत्वसानार्थयोरिति धातुपाठात् उपनिषद्ब्रह्ममात्रतया पर्यवस्थतीत्यर्थ । एकान्तपूजितति नामोपनिषदित्यर्थ । अथवा, एकान्ते ‘गुहानिवाता श्रयेण प्रयोजयेत्’ इति श्रुते एकान्तस्थलं ध्यानादिना योगिभिर्विषयीकृतेर्थर्थ । अथवा, कामेश्वरेण एकान्ते खीलिङ्गे पूजिता । सप्रदायप्रवृत्त्यर्थमादौ ईश्वरेण बहिर्यागक्रमण आदिमसाधनेन सर्गाश्यकाले पूजादिना सतोषितत्वात् भूतार्थव्यपदेश । एकान्ते मवप्रविलापनसमये पूजिता ध्यानादिना भपादिता साक्षत्कृतेर्थर्थ । ‘कश्चिद्द्वीर प्रत्यगात्मानमैक्षदावृत्तचक्षुरमृतत्वमिच्छन्’ इति श्रुतेरिति वा ॥ ॐ एकान्तपूजितायै नमः ॥

एधमानप्रभा । एधमाना विवर्धमाना सर्वातिशायिनी प्रभा कान्तिर्यम्या सा, ‘तसेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति’ इति श्रुते । ॐ एधमानप्रभायै नमः ॥

एजदनकजगदीश्वरी । एजन्ति कम्पमानानि चष्टमाना
नि प्राणवन्ति जीवन्ति अनेकानि नानोपाधिकानि जगन्ति
जङ्गमानि विचरत्प्राणिन् इत्यथ । ईषे प्रेरथतीति ईश्वरी ।
स्थावरणा सुखदुखप्राप्तिरिहारोपायानभिङ्गत्वेऽपि स्वजी
वनहेतुभूतोदकपानादिप्रवृत्तिदर्शनादेष्टावत्वं तत्राप्यस्तीति
जगच्छब्दो निर्विशेषप्रपञ्चमात्रपरो वक्तव्य , अन्यथा ‘सर्वे
षु भूतेषु’ इति श्रुतौ चरप्राणिमात्रपरत्वे सकोचापत्ते । अस
ति विराधे सामान्यवाचकस्य शब्दस्य विशेषलक्षणाङ्गीका
रस्य न्यायत्वात् । अन्यथा ब्रह्मण प्रपञ्चमात्रोत्पत्त्यादिहे
तुत्वं सकुचित भवेत् । अत एव आकरे एजत्पद उपात्तम् ।
यथाकथचित क्रियाश्रयत्वेन प्राणवत्वमात्रस्य समष्टिहिर
ण्यगर्भाश्रयत्वेन सर्वेषां प्रेर्यत्वं सभवतीति भाव ॥ ॐ एज
दनेकजगदीश्वरै नम ॥

एकवीरादिससेव्या चैकप्राभवशालिनी ।
ईकाररूपा चेशित्री चेप्सितार्थप्रदायिनी ॥ ९ ॥

एकवीरादिससेव्या । एक अनितरसाधारण वीर
पुरश्चर्यादिना कृतमन्त्रदेवतासाक्षात्कारलब्धपुरुषार्थं पुमान्
विजयप्राप्ताभ्युदयशाली । राजराजनिष्ठैर्यगाम्भीर्यादिगुण
वत्वेन तत्तदेवतोपासका पुरुषा वीरा इत्युच्यन्ते । यासा

शक्तीनामादयो यषा प्राणिकोटीना ता एकवीरादय तासा
कदम्बै ससेव्या ससेवितु योग्या । यदा इश्वरी भक्तान-
नुगृह्णाति सगुणविग्रहवती स्यात् तदा अनेकपरिवारदेवताप
रिसेविता मन्त्रदेवतात्वेनोपासनीयेर्थर्थ । अथवा, एकवीरा
रेणुका, तदादय शक्तय इयामलाप्रसुखा, ताभिस्तत्काल-
प्रपञ्चे स्वस्वपीठे स्थिता सत्य उपासकानामभीष्टवरप्रदा-
दयो हृश्यन्ते । ता अस्या परिसेवकत्वेन स्वयमभीष्टवर
कामा इत्यस्या प्रकृताया महिमातिशयोक्ति ॥ ३० एक-
वीरादिसंसेव्यायै नमः ॥

एकप्राभवशालिनी । प्रभोर्भाव प्राभव रक्षकत्व एक-
मनितरसाधारण च तत्प्राभव च तच्छालक इति तथा ।
अथवा, प्राभवस्य सापेक्षकधमत्वादेकपदस्य चानन्यगमित्वा
र्थस्य सामानाधिकरण्येन स्वारस्येन पर्यालोच्यमानेन अय
मर्थ सूच्यत । प्राभव च नियम्यलोकोद्भव विना अनुपपद्य
मान तदन्तर्गतत्कार्यमर्थीपस्या सिध्यति । तथा च वटबीजव
स्तवन्तर्गतपश्चाद्भाविकार्यवकूटस्थचैतन्यमिति भाव । अथवा,
प्राभव नामश्वरत्व तदाकल्पनियम्यजगद्भोपलक्षणविधया य
स्यैकस्याखण्डचैतन्यस्य तदेकप्राभवम् । ‘पादोऽस्य सर्वा भू
तानि’ ‘एकाशन स्थितो जगत्’ इति श्रुतिस्मृतिभ्या भूतपूर्व

गत्या प्राभवोपलक्षितमेक सच्चिदैतन्यरूप शालते आविष्करोति तथा । अथवा एक च तत् प्राभव च एकप्राभव मुख्यसार्वभौमत्वमिति यावत् । प्रभुत्वपरपराया सविशेषाया कुगचिन् पर्यवमानावश्यभावे ‘एष सर्वेश्वर एष भूताधिपतिरेष भूतपाल’ इति श्रुत्या अन्तर्यामितया साक्षात्कृत्युत्पादकत्वयुक्त्या च इतरवागाद्यवयवप्रेरणातिशयाना पर्याप्तिरौप्त्वास्तीत्यभिप्राय । तथा च निरङ्गशस्वतन्त्रजगत्कारणत्वरूपतटस्थलक्षणलक्षितवेदान्तसमन्वयविषयीभूता अखण्डसच्चिदानन्दस्वरूपा परदेवता अवश्य स्वस्वरूपेणैव ध्यातव्येति निष्कृष्टार्थं ॥ ॐ एकप्राभवशालिन्यै नमः ॥

ईकाररूपा । इकार रूप तृतीयावयव यद्वाचकमन्त्रस्य यस्या सा तथा ॥ ॐ ईकाररूपायै नमः ॥

ईशित्री । इच्छति ईष्टे इति ईशित्री सर्वप्रेरिका इत्यर्थं ॥ ॐ ईशित्रीयै नमः ॥

ईप्सितार्थप्रदायिनी । अर्थन्ते प्रार्थन्ते इत्यर्था अभ्युदयनि श्रेयसरूपा , आमु गन्तु प्रामु इच्छाविषयीभूता ईप्सिता , ते च ते अर्थाश्चेति कर्मधारय , ईप्सितार्थान् प्रददातीति तथा । केवलकर्मणामहृष्टद्वारा कालान्तरभावि

फलदातृत्वमचेतनत्वाभापपद्यते । तादृशाना कस्मिन्नप्यर्थे सामर्थ्यादर्शनात् । चेतनाधिष्ठिताना तु कर्मणा भूत्यकृ तपराक्रमादितुष्टराजवत्तदाराधितपरमेश्वर कर्माध्यक्ष , इति श्रुत्या सर्वज्ञस्य तत्त्वाधिकारिकृतपुण्यापुण्यानुरूपतया फल प्रदाने समर्थस्य सत्त्वकल्पने तदन्यस्य चेतनस्य जीवादेस्तत्र सामर्थ्यविरहात् स एव तत्तदनुगुणविषयेच्छोत्पादनेन तत्साधनानुष्टापयिता सन् तत्फलकामना पूरयतीत्यनीश्वरमीमासकमतनिरासो द्रष्टव्य । अथवा, ईप्सिता जिज्ञासिता, तथा च स्वस्वरूपप्रतिपादकवेदान्तश्रवणमनननिदिष्यासनविषयीकृता सती अर्थं प्रार्थ्यमान सर्वाभ्यर्हितमोक्षरूप पुरुषार्थं प्रददातीति तथा ॥ ॐ ईप्सितार्थपदा यिन्यै नम ॥

ईदृगित्यविनिर्देश्या चेश्वरत्वविधायिनी ।

ईशानादिब्रह्ममयी चेशित्वाद्यष्टसिद्धिदा ॥

ईदृगित्यविनिर्देश्या । ईदृक् एतलक्षणलक्षित एतादृशपरिमाण एवस्वरूप एतादृशधर्मवानिति प्रत्यक्षसिद्धार्थोविनिर्देशु शक्यते । ‘यच्छ्रुत्या न पश्यति’ इत्यादिश्रुत्या सर्वेन्द्रियगोचरत्वनिराकरणात् विनिर्देश्या न भवति । औपनिषदाना मते तु उपनिषदा वेदैकदेशत्वेन इतरप्रमाणा

नपेक्षतया अङ्गातार्थज्ञापकत्वेन प्रामाण्यमुररीकृतम् । इदं
मेव एताहृगेवेति प्रत्यक्षसिद्धार्थज्ञापने तासामनुवादकत्वेन
सापेक्षत्वरूपमप्रामाण्यं प्रसञ्ज्येतेत्यभिप्राय । ॐ ईश्वर्गि
त्यविनिर्देश्यायै नम ॥

ईश्वरत्वविधायिनी । ईश्वरस्य भाव तस्यैक्यं विदधाति,
आवरणविक्षेपणक्तिमठ्ठाननिवर्तकाखण्डाकारचैतन्यस्वरूपा
सती भेदबुद्धिमात्रसपादितैश्वर्यैक्यायोगभ्रमं निवर्तयती
र्यथ , ‘स्वेन रूपेणाभिनिष्पद्यते’ इति श्रुते । अथवा,
ईश्वरत्वं नाम नानादेशविद्याधनोत्कर्षादिमस्त्रवं तत्त्वप्राणिनि
कायपुण्यप्रारब्धानुसारेण कर्मफलं प्रयच्छतीति वा । ॐ
ईश्वरत्वविधायिन्यै नमः ॥

ईशानादिब्रह्मामयी । ईशानतपुरुषाधोरवामदेवसद्योजाता-
रूपानि पञ्च ब्रह्माणि, तानि मय स्वरूपमस्या अस्तीति सा
तथा । अथवा, ईशान आदिर्येषा ते तथा अधिकारिपुरुषा
विष्णुब्रह्मोन्द्रादय , तेषामपि तत्त्वामरूपविशिष्टानाम् अहबु
द्धिभताम् अन्तर्यामिस्वरूपेण बुद्धिप्रेरकसचिदानन्दस्वरूप-
परब्रह्मानन्दप्रकाशात्मना स्फुरतीति तथा । ॐ ईशानादि
ब्रह्ममयै नमः ॥

ईशित्वाद्यष्टसिद्धिदा । ईशेत्वमादिर्योसा तास्तथा । ‘अ-

णिमा महिमा लघ्वी गरिमा प्राप्तिरीशिता । प्राकास्य च
वशित्वं च यत्र कामा परागता' इति वचनात् । ता
सिद्धीरष्टौ ददातीति तथा । अणिमा क्षणमात्रेण असिसू
क्षमभाव । महिमा महतो भाव । लघ्वी लाघव । गरिमा
गुरोर्भाव , जडतरपवतादिवत् भारवशेनाप्रकम्पित्वमित्य
र्थ । क्षणमात्रेण विराङ्गाकृतिमत्त्वं प्राप्ति । हस्तेन चन्द्र-
मण्डलादिस्पर्शं इशिता, इन्द्रादीनामपि प्ररकता । प्रा-
कास्य अप्रतिहतकामनावस्त्वम्, वाक्त्वार्थफलप्राप्तिरित्यर्थ ।
वशित्वं सर्वलोकवशीकरणमामर्थ्यम् । यत्र कामा परा-
गता , कास्यन्त इति कामा विषया यत्र यस्मिन् एश्वर्ये
सति परागता बहिर्भूता भवन्ति , विषयाणामनुभवाभावे
उपि तज्जन्यसुखवत्त्वं आप्नकामत्वमित्यर्थ । एता अष्ट
सिद्धय । ॐ ईशित्वाच्छसिद्धिदायै नम ॥

ईक्षित्रीक्षणसृष्टाण्डकोटिरीश्वरवल्लभा ।
• ईडिता चेश्वराधीङ्गशारीरेश्वाधिदेवता ॥

ईक्षित्री । उदासीनद्रष्ट्री साक्षिणी असगोदासीनज्ञानस्व-
रूपेत्यर्थं , 'साक्षी चेता' इति श्रुते , 'आवि सनिहित
गुहायाम्' इति श्रुते । ॐ ईक्षित्र्यै नम ॥

ईक्षणसूष्टाण्डकोटि । अण्डाना ब्रह्माण्डाना कोटय
असख्याता , भूतभाविकालभेदेन बहुवचन कोटिशब्दस्य,
अनादित्वात् ससारमण्डलस्य, ईक्षणेन भाविकार्यालोचनेन
सृष्टा अण्डकोटयो यथा सा तथा, ‘तदैक्षत बहु स्या प्र
जायेयेति’ ‘स ईक्षाचक्रे’ ‘आत्मा वा इदमेकमग्र आ
सीत् नान्यत्किञ्चन मिष्टत् स ईक्षत लोकानु सृजा इति स
इमाल्लोकानसृजत्’ इत्यादिश्रुते , बाह्यकारणमनपेक्ष्य ऊर्ण
नाभ्यादिदृष्टान्तप्रदर्शनेन चेतनस्याभिनन्दिमित्तोपादानप्र-
दर्शनयुक्ते , ‘प्रकृतिश्च प्रतिज्ञादृष्टान्तानुपरोधात्’ इत्यादे-
श्रेति भाव । ॐ ईक्षणसूष्टाण्डकोटये नम ॥

ईश्वरवल्लभा । ईश्वर कामेश्वर वल्लभ पति यस्या
सा तथा । ईश्वराणा ब्रह्मविष्णुरुद्रादीना तत्त्विष्टमहिमो
त्कर्षरूपेण प्रीत्यतिशयविषयत्वेन अभ्यहितेत्यर्थो वा । ॐ
ईश्वरवल्लभायै नमः ॥

ईडिता । ईड स्तुताविति धातुपाठात् स्तुतिभि विषयी
कृता, वेदान्तैरिति शेष , ‘एष नित्यो महिमा ब्राह्मणस्य’
इत्यादिश्रुते । ॐ ईडितायै नम ॥

ईश्वरार्धाङ्गशरीरा । ईश्वरस्य सच्चिदानन्दालकस्थ शिव
स्य अर्धं च तत् अङ्गं च अर्धाङ्गम् । आनन्दस्वरूपता शरीर

शरीरवत्स्वरूपलक्षण यस्या सा तथा । ‘सच्चिन्मय शिव साक्षात्तस्यानदमयी शिवा’ इति स्मृते । अथवा, ईश्वरस्याधार्ज्ञ वामभाग शरीर मूर्तिर्थस्या सा । अथवा, ईश्वरस्य हकारस्य अर्धाङ्ग शक्तिकीज शरीर मन्त्रात्मिका मूर्तिर्थस्या सा तथा । ॐ ईश्वराधार्ज्ञशरीरायै नम ॥

ईशाधिदेवता । ईशस्येत्युपलक्षण जीवस्यापि, ईशस्य तत्पदवाच्यार्थस्य मायोपाधिकस्य विशिष्टस्य अधि उपरि विशेषणद्वयस्य परित्यागे देवता द्योतमाना क्लूटस्थचिन्मात्रशोधिततत्त्वपदार्थरूपेत्यर्थ । अथवा, ईश कामेश्वर अधि देवता पूज्या यस्या सा तथा । परमपतित्रतेत्यर्थ ॥
ॐ ईशाधिदेवतायै नमः ॥

ईश्वरप्रेरणकरी चेत्ताण्डवसाक्षिणी ।
ईश्वरोत्सङ्घनिलया चेतिबाधाविनाशिनी ॥

ईश्वरप्रेरणकरी । ईश्वरस्य विम्बचैतन्यस्य स्वरूपा सती जगत्सर्जनादिकार्यप्रेरयित्री प्रेरणकरी आज्ञापकेत्यर्थ । इच्छाज्ञानकियाशक्त्यावरणविक्षेपशक्तिप्रतिफलितचित्स्वरूपा भाविकार्यानुकूलप्रारब्धाभ्यक्षपरमेश्वरेक्षणनामधेयप्रकाशात्मि का भवतीति भाव । ईश्वरप्रेरण तदाज्ञामनुलङ्घनेन क-

रोतीति वा, तदीयभार्यात्वेन नितरा तद्वद्येति यावत् ॥
ॐ ईश्वरप्रेरणकै नमः ॥

ईशताण्डवसाक्षिणी । ईशस्य तत्पदवाच्यार्थस्य ताण्डव
नर्तनवदप्रयन्नसपाद्य लीलामात्रमित्यर्थ , जगत्सर्जनादिरूपा
क्रिया चलनरूपकर्मत्वसामान्यात , तस्य साक्षिणी अस
सर्गप्रकाशरूपिणीत्यथ , ‘असगो न हि सल्लोते’ इति श्रुते ।
अथवा, ईशताण्डवस्य परमेश्वरनृत्यनाळ्याभिव्यञ्जितचतुष
ष्टिकलोपदेशस्य साक्षिणी । तदुक्तम—‘नर्तनाद्वि परेशस्य
चतुषष्टिकलाजनि’ इति प्रदोषस्तोत्रे ईशताण्डवनर्तनवर्णन
मतिस्फुटमिति नेह लिख्यते ॥ ॐ ईशताण्डवसाक्षिणै
नम ॥

ईश्वरोत्सगनिलया । ईश्वरस्य स्वभर्तु उत्सग ऊरु तौ
निलय यस्या सा तथा ॥ ॐ ईश्वरोत्सगनिलयै
नम ॥

इतिबाधाविनाशिणी । ईतिबाधा दैवाचुपद्रव , क्षुद्र
जन्तुपीडा वा, ता विनाशयतीति तथा ॥ ॐ ईतिबाधा
विनाशिणै नम ॥

ईहाविरहिता चेशाशक्तिरीषत्स्मतानना ।
लकाररूपा ललिता लक्ष्मीद्याणीनिषेविता ।

ईहाविरहिता । अप्राप्तप्राप्ति प्रति इच्छा ईहा, तथा विरहिता, आप्तकामत्वात् तद्विरहितेत्यर्थ ॥ ॐ ईहाविरहितायै नमः ॥

ईशशक्ति । ईशम्य शक्ति सर्वज्ञत्वादिस्वरूपसामर्थ्यं यस्या सा तथा, 'देवात्मशक्तिम्' इति श्रुते ॥ ॐ ईशशक्तये नम ॥

ईषत्स्मितानना । इषत् स्मित मन्दहास यस्य तन् तथा, ताहगानन यस्या सा तथा, पर्याप्तकामत्वेन सर्वदा प्रसन्न मुखीत्यर्थ । दुखास्पर्शीपरमानन्दरूपतया वा तथा ॥ ॐ ईषत्स्मिताननायै नम ॥

लकाररूपा । रूप्यत इति रूप मन्त्रस्य चतुर्थवर्णत्वेन ज्ञापक यस्या सा तथा ॥ ॐ लकाररूपायै नम ॥

ललिता 'ललित त्रिषु सुन्दरम् इति वचनात् अत्यन्तसौन्दर्यवतीत्यर्थ । अनुपमसौन्दर्या वा ॥ ॐ ललितायै नम ॥

लक्ष्मीवाणीनिषेविता । लक्ष्मी रमा सर्वैश्वर्यशक्ति, वाणी सरस्वती सर्वज्ञानशक्ति, ताभ्या नितरा अकृत्रिमप्रेम्णा अनन्यभूता सती सेविता । सेवानाम उन्मीलिताज्ञाप्रतीक्षा, तद्वित्त्वादित्यर्थ ॥ ॐ लक्ष्मीवाणीनिषेवितायै नम ॥

लाकिनी ललनारूपा लसद्वाढिमपाटला ।
ललन्तिकालसत्फाला ललाटनयनार्चिता ॥

लाकिनी । क सुखम्, ‘क ब्रह्म इति श्रुते, तज्ज
भवतीत्यक ब्रह्मभिन्नतया प्रतीयमान दुखात्मक जगत्
अकम्, लीयत इति लम्, उपलक्षणमुत्पन्नयादे, लमक
मस्यास्तीति लाकिनी, अनृतजडु खरूपजगत्कारणतत्त्वा-
त्तस्वरूपब्रह्मभूता इत्यर्थ ॥ ॐ लाकिन्यै नम ॥

ललनारूपा । रूप्यते ज्ञाप्यते अनेनेति रूप ज्ञापक तत्त्वा
प्यलिङ्गं चिह्नमिति वा, ललनाना खीणा रूप वेष आभर
णाद्यलक्कारो वा आकृतिर्वा यस्या सा तथा, ललना
खिय रूपाणि भूतय यस्या सा तथा, ‘लिङ्गाङ्कितमिद
पश्य जगदेतद्वाङ्कितम्’ इति पुराणवचनात् ॥ ॐ लल
नारूपायै नम ॥

लसद्वाढिमपाटला । दाढिमशब्दन विकसित तत्पुण्य
लक्ष्यते, लसत् सद्या विकसनप्रकाश च तद्वाढिम च,
इद उपलक्षण बन्धूकादीनाम्, तद्वत्पाटला श्वेतमिश्ररक्तवर्ण
प्रधानमूर्तिमतीत्यथ, ‘श्वेतरक्त तु पाटलम्’ इति वचनात् ।
ॐ लसद्वाढिमपाटलायै नम ॥

ललन्तिकालसत्काला । ललन्तिकया परित मुक्ताफल
खचितनवरद्वयमध्यया ललाटमध्यदेशभूषया, इदमुपलक्षण
ललाटपट्टादीनाम्, लसत् फाल यस्या सा तथा ॥ ३४
ललन्तिकालसत्कालायै नमः ॥

ललाटनयनार्चिता । ललाटे नयन थेषा ते, अत्र लला
टशब्देन भ्रूमध्य लक्ष्यते, नयनशब्देन ज्ञानमपि, तथा
चोर्ध्वहस्तिभि खेचरीमुद्रया विलीनचित्ते असिवरुणयोर्म
ध्यदेशाभिधानाविमुक्तकृतपरमेश्वराराधनपरपुरुषप्राप्यत्वाभि
धायकात्रिप्रभोत्तरजावालश्रुतिगतयाज्ञवल्क्योत्तरवाक्यनिर्दि
ष्टभूमिकाजयसिद्धिमपुरुषै अर्चिता साक्षात्कृतेत्यर्थ । अथ
वा, वृत्तीयनेत्रवता शिवेन तत्स्वरूपहृदैर्वा पूजितेत्यर्थ ।
३५ ललाटनयनार्चितायै नमः ॥

लक्षणोज्जवलदिव्याङ्गी लक्षकोष्ठण्डनायिका ।
लक्ष्यार्था लक्षणागम्या लब्धकामा लतातनु ॥

लक्षणोज्जवलदिव्याङ्गी । दीप्यसे प्रकाशत इति दिव्य
लक्षणै स्वरूपतटस्थनामकै उज्ज्वल शोभित शुद्धम् अङ्ग
स्वरूप विग्रहो वा । घृताकठिन्यन्यायेन ‘तदात्मान स्वय
मकुरुत’ इति श्रुत सच्चिदानन्दघनीभूतजीवात्मको विग्रहो

यस्या सा तथा । अथवा, सामुद्रिकशास्त्रोक्तदिव्यलक्षणै
रुज्ज्वलानि मपूर्णानि दिव्यानि यानि अङ्गान्यवयवा शिर
पाण्यादय अस्या सन्तीति वा तथा ॥ ॐ लक्षणोज्ज्वल
दिव्याङ्गै नमः ॥

लक्षकोट्यण्डनायिका । लक्षानि च कोट्यश्च असख्या
तापरिमितानीयर्थ , ससारस्यानादित्वेन भूतभविष्यदा
दिभेदेन बहुसख्यावत्त्वमण्डानाम्, तानि च तान्यण्डानि च
हिरण्यगर्भविराङ्गुपाणि समष्टिव्यष्ट्यचात्मना विश्वतैजसापा
धिभूतानि , लेषाम् अधिष्ठानविम्बचैतन्यात्मना नयति स्वस
तामापादयतीति नायिका ॥ ॐ लक्षकोट्यण्डनायिकायै
नम ॥

लक्ष्यार्थी । लक्षणया शोधनया जहदजहलक्षणया वा
प्रतिपाद्यते वेदान्तमहावाक्याना योऽर्थं तत्स्वरूपा । अथ
वा, योगशास्त्रप्रसिद्धबहिरन्तरूपर्वाध प्रदेशविशेषरूपभूमिका
सु स्वस्वमनोवाङ्छाविषयविशेषणत्वन निर्णुणत्वन वा मना
विलयरूपहठराजयोगादिसाधनपरिपाकवशेन साक्षात्कृत चै
तन्य लक्ष्य इत्युच्यते, अर्थर्थते याच्यते गुरु प्रति इति अर्थ ,
लक्ष्ये योऽर्थं चित्स्वरूपपरमानन्दरूप सोऽपि सैवेति
तथा, ‘ब्रह्मवेदममृत पुरस्ताद्ब्रह्म पश्चाद्ब्रह्म दक्षिणतश्चोत्त

रेण' इति श्रुते ॥ ॐ लक्ष्यार्थायै नम ॥

लक्षणागम्या । लक्षणानाम शक्यार्थे वाचकस्य पदस्य
अन्वयाद्यनुपपत्त्या तत्सबन्धपदार्थान्तरज्ञानहेतु शक्य
सबन्धादिपदजन्यपदार्थान्तरज्ञानहेतु शब्दवृत्तिरित्युच्यते,
तस्या वाच्यवाचकतत्सबन्धादिभेदज्ञानपूर्विकाया परिच्छि
भ्रसावयवपदार्थसबन्धज्ञानहेतो केवलचिन्मात्रे निरूपाधि
के वस्तुनि षष्ठीजात्यादीना लक्ष्यतावच्छदकधर्माणामभावे
प्रवृत्त्योगात् तथा अगम्या, गन्तु ज्ञातु योग्य गम्य तथा
भवतीत्यगम्या । वेदान्तमते जहदजहलक्षणया विशेषण-
मात्रपरित्यागस्य अन्यान्यतादात्म्यानुपपत्त्या बोधितत्वात्
तदर्थे सा अवश्यमङ्गीकर्तव्या । विशेष्यम्य ज्ञानस्वरूप
त्वेन नित्यतया लक्षणाजन्यत्वात् तदर्थे सा न अपेक्ष्यत
इति भाव । तथा च प्रकृताया देवताया शुद्धचैत
न्यमात्रस्वरूपतया स्य प्रकाशत्वेन लक्षणागोचरत्वात्
लक्षणागम्येति नाम युक्तमिति भाव ॥ ॐ लक्षणा-
गम्यायै नम ॥

लब्धकामा । लब्धा काम्यन्त इति कामा ऐहिकामु-
ष्मिकसुखसाधनानि, लक्षणया तत्त्वान्यसुखानि वा
तथाभूता कामा यथा सा तथा पर्याप्तकामेत्यर्थ ,

‘ पर्याप्तकामस्य कृतात्मनस्तु इदैव सर्वे प्रविलीयन्ति कामा ।
इति श्रुते ॥ ॐ लब्धकामायै नम ॥

लतातनु । लता इव लता कल्पादिवलय सकलपुरु-
षाथप्रदत्तेन जगति प्रसिद्धा , ता इव सुकुमारत्वाद्याश्रया
तनु मूर्ति यस्या सा तथा ॥ ॐ लतातनवे नम ॥

ललामराजदलिका लम्बिसुक्तालताञ्चिता ।
लम्बोदरप्रसूर्लभ्या लज्जाद्या लयवर्जिता ॥

ललामराजदलिका । ललामा कस्तूरीतिलकेन कस्तूरी
पत्रण वा राजत् विभ्राजत् परमशाभि अलिक ललाट
यस्या सा तथा ॥ ॐ ललामराजदलिकायै नम ॥

लम्बिसुक्तालताञ्चिता । लम्बिन्य लम्बमाना अध-
प्रसूता सुक्तालता हारा मुक्ताफलानि वा यस्या सा
तथा । नवरत्नखचित्सुवर्णमुक्तागुन्छै सर्वाङ्गेषु प्रलम्ब
मानै ललाटपर्यन्त लम्बमानकिरीटप्रथमभागललाटपट्टना-
साग्रताटङ्गाध कर्णदेशकण्ठप्रदेशहस्तचतुष्पथाङ्गदसमानप्रदेश-
कूर्पासपरित पदकाग्रदेशकटिनिबद्धकाङ्गयादिषु परिलम्बमा
नैरित्यर्थ ॥ ॐ लम्बिसुक्तालताञ्चितायै नम ॥

लम्बोदरप्रसू । लम्बोदरस्य महागणेशस्य प्रसू जन-
यिकी मातेत्यर्थ । लम्बोदर प्रसूत इति वा ॥ ॐ लम्बो-
दरप्रसूवे नम ॥

लभ्या । ससारदशायामावारकाङ्गानेन स्फुटमप्रकाशमा-
ना सती श्रवणादिसस्कृतान्त करणवृत्तावत्वण्डाकारङ्गानभू-
मिकाया प्रतिफलितस्वरूपेण विस्मृतकण्ठगतकनकभूषणवत्
प्राप्तप्राप्तिरूपतया लब्धु योग्येति तथा ॥ ॐ लभ्यायै
नम ॥

लज्जाद्वया । उपलक्षणमन्त करणधर्माणा सर्वे-
षाम्, आद्या तद्वत्वेन आकारवतीत्यर्थ । तिरोधानादिना
अन्तर्हिता सती वरादि प्रयच्छतीति लज्जाद्वया भवतीति
च उपचर्यते ॥ ॐ लज्जाद्वयायै नम ॥

लयवर्जिता । ‘अविनाशी वा अरेऽयमात्मा अनुच्छि
तिधर्मी’ इत्यादिश्रुत, लयो विनाश, तेन रहिता
वर्जितेत्यर्थ । इदमुपलक्षण षड्भावविकाराणाम्, सत्य
ङ्गानमनन्त ब्रह्म’ इत्यादिश्रुते ॥ ॐ लयवर्जितायै नमः ॥

ह्रींकाररूपा ह्रींकारनिलया ह्रींपदप्रिया ।

ह्रींकारबीजा ह्रींकारमन्त्रा ह्रींकारलक्षणा ॥

हींकाररूपा । हींकार रूप्यते निरूप्यते निर्देश्यते इति
रूप मन्त्रपञ्चमावयव यस्या सा तथा । ॐ हींकार
रूपायै नम ॥

हींकारनिलया । हीमध्यर निलय गृहवद्वच्छेदक यस्या
सा तथा । स्वीयवाचकत्वारोपितवाच्यतावच्छेदकधर्माव-
चिक्षेतादिसपादनेन गृहवर्तिपुरुषवत् व्यावृत्तस्वरूपेण ज्ञा-
पक भवति । अन्यथा, नाम्नो वाच्यार्थे प्रवृत्त्ययोगादिति
भाव । ॐ हींकारनिलयायै नमः ॥

हींपदप्रिया । पद्यते गम्यते ज्ञायते अनेनेति पदम्, पद्यते
गम्यते प्राप्यते इति वा पदम्, हींकारस्य मन्त्रावयवतया
तदेवताप्रकाशकत्वेन तस्या शक्त्वात्—‘शक्त पदम्’ इति
तद्वक्षणत्वात् तथा प्रथम व्याख्यानम् । हकाररेकेकारानुस्वारा
णा वर्णाना समष्टिस्वरूपेण समुदायात्मकत्वात् ‘वर्णसमुदाय
पदम्’ इत्यपि पदलक्षणवस्तुमस्य घटते । पुरश्चर्यावता स्वदेव
तासाक्षात्कारद्वारा सबलपुरुषार्थप्रापकत्वात् द्वितीयव्याख्यान
तथा कृतम् । तस्मिन् प्रिया प्रीतिमतीत्यर्थ ॥ ॐ हींपदप्रि-
यायै नमः ॥

हींकारबीजा । हींकार एव बीज स्ववाचकमन्त्रभाग,
'ज्ञापक देवताना यत् बीजमध्यरमुच्यते' इति वचनात् हीं-

कारस्य मायाप्रकाशकत्वेन, वटधानादि स्वनिष्ठवृक्षाभिव्य
ञ्जकत्वेन कारणतया यथा बीजमित्युच्यते— सत्कार्यवादिना-
मव्यक्तनामरूपकारण बीजम्, अभिव्यक्तनामरूपात्मक पश्चा।
इति कार्यमित्यहीकार, सकलकारणसमवधाने विशेषनाम-
रूपवत्तया कारणस्याभिव्यक्तिरूपत्ति, तथा चोक्तबीजस्य
मायावन्धुञ्जैतन्याभिव्यञ्जकत्वेनापि बीजत्वम्, ताहश
हींकारबीज यस्या सा तथा ॥ ॐ ह्रींकारबीजायै नमः ॥

हींकारमन्त्रा । हींकारस्य मननात् द्रायत रक्षति वाच्य-
वाचकयोरभेदादिति तथा । हींकारघटितो मन्त्रो वा यस्या
सा इति वा तथा ॥ ॐ ह्रींकारमन्त्रायै नमः ॥

हींकारलक्षणा । हकार शिव, आकाशबीजत्वादाकाश-
वन्निर्लेप, रेफ वहिबीज कार्योत्पादसनिहितशक्तिमदी
श्वरवाचकम्, तथा च हकारयुक्तरेफ शुद्धचैतन्यमेव
कारणतावन्धुञ्जयम्— इति वदति । हृकार मन्मथबीज
तत्कारणलक्षकतया श्खितिहेतु विष्णुरूपचैतन्यमभिदधाति ।
अनुस्वारस्तस्मिन्नेव पदार्थे अभिन्ननिमिसोपादाने लय वक्ति ।
तथा च ह्रींमित्युक्ते जगदुत्पत्तिस्थितिलयकारण चैतन्य
शक्त्या वाच्यार्थं प्रतीयते । तस्यैवोपाधिपरित्यागरूपलक्षण
यस्या सा तथा । ह्रींकार लक्षण तटस्थलक्षण यस्या

सेति वा तथा ॥ अँ ह्रींकारलक्षणायै नम ॥

ह्रींकारजपसुप्रीता ह्रींमती ह्रींविभूषणा ।

ह्रींशीला ह्रींपदाराध्या ह्रींगर्भा ह्रींपदाभिधा ॥

ह्रींकारजपसुप्रीता । ह्रींकारस्य जप ह्रींकारजप , तेन सुप्रीता ॥ अँ ह्रींकारजपसुप्रीतायै नम ॥

ह्रींमती । वाचकत्वेन लक्षकत्वेन वा लक्ष्यपदार्थरूपेण वा वाच्यवाच्यक्योरभेदेन वा अस्या अस्तीति ह्रींमती ॥
अँ ह्रींमत्यै नम ॥

ह्रींविभूषणा । केवलजडमायावाचक ह्रींकार , तथा हि— हकार श्वेतवाचक , रेफ रोहिताथक , ईकार नीला थक , तथा च विशिष्टस्य शुक्लरक्तनीलवत्पदार्थवाचक तया सत्त्वरजस्तमोगुणवत्प्रकृतिवाचकत्वेन परिच्छिङ्गानृत जडदु खस्वरूपवाच्यार्थकतया प्रकाशराहित्येन अनुपादेय ताया सत्या तदवच्छिङ्गस्वप्रकाशचैतन्याकारतया विशिष्टार्थस्य आपादमस्तकभूषिततरुणीविदानन्दस्वरूपतया तद्वाचकह्रींपदस्य अष्टैश्वर्यसिद्धिप्रदानशक्त्याधायकतया शोभायमान भूषणवत् , ‘कुण्डली पुरुष’ इत्यत्र कुण्डलस्योपलक्षणतया इतरसजातीयादिव्यावर्तकत्वम् , तथास्यापि बीजस्येतरव्यावृत्तवाच्यार्थगोचरप्रमाजनकत्वेन भूषणवत् यस्या सा

तथा ॥ ॐ ह्रीं चिभूषणायै नम ॥

ह्रीशीला । ह्रीभित्यनन तद्वाच्यार्थं ब्रह्मविष्णुरुद्रा
लक्ष्यन्ते, तेषा शील स्वभाव पारमार्थिक रूप सच्चिदान
न्दात्मकता यस्या सा तथा, तत्रिष्टुधर्मा सत्त्वरजस्तमा
गुणादयो वा यस्या सा तथा, ‘शील स्वभावे धर्मे च’
इति वचनात् ॥ ॐ ह्रीं शीलायै नमः ॥

ह्रींपदाराध्या । ह्रीपदन एकाक्षरबीजमन्त्रेण आराधितु
योग्या तथा । ‘ह्रींकारेरणैव ससिद्धो मुक्ति मुक्ति च विन्द
ति’ इति भुवनेश्वरीकल्पवचनादिति यावत् ॥ ॐ ह्रींप
दाराध्यायै नम ॥

ह्रींगर्भा । ह्रींशब्दार्था सगुणमूर्तयस्तिस्त गर्भे स्वस्व
रूपे सशक्तिका अविनाभावसबन्धेन यस्या सा तथा, ‘मम
योनिर्महद्ब्रह्म तस्मिन् गर्भे दधाम्यहम्’ इति वचनात् ॥ ॐ
ह्रींगर्भायै नम ॥

ह्रींपदाभिधा । ह्रींकार अभिधा नाम यस्या सा तथा ।
समष्टिरूपाया समष्टिशब्दवाच्यत्वनियमादित्यभिसधि ॥
ॐ ह्रींपदाभिधायै नम ॥

ह्रींकारवाच्या ह्रींकारपूज्या ह्रींकारपीठिका ।
ह्रींकारवेद्या ह्रींकारचिन्त्या ह्रीं ह्रींशरीरिणी ॥

ह्रीकारवाच्या । मायोपाधिकब्रह्मणि कस्तिपतधर्मेण
शब्दप्रवृत्त्युपपत्त ह्रींपदस्य वाच्या रूढयेत्यर्थ ॥ ३५ ह्रीं
कारवाच्यायै नम ॥

ह्रींकारपूजया । 'मूलमन्त्रेण पूजयेत्' इति पूजाङ्कत्वन मू
लमनोर्धनियोग श्रूयते । मूलमनुश्व देवताया स्वक नामेति
वचनात् । अन्तमुखानामेव मन्त्रशास्त्रेषु तत्त्वान्ना व्युत्पन्नत्वा
न् । ह्रींकार नमोऽन्तमुखार्य यथागुरुमप्रदाय श्रीचकादौ
मूलदेवता पूजनीयेत्यागमरहस्यात् ह्रींवीजेनैव पूजयितु यो
ग्या । अतिप्रियबीजनामत्वादित्यभिप्राय ॥ ३६ ह्रींकार
पूज्यायै नम ॥

ह्रींकारपीठका । अत्र पीठशब्द आधारलक्षक । वा
च्यार्थो हि वाचकशब्दस्य सत्ताप्रदत्वेन आधारो भवति ।
मन्त्रदेवतयारभेदेऽपि अर्थनिष्ठमहिन्न तद्वाचकपदेऽदृश्यमा-
नत्वात् कस्तिपतभेद सपाद्येदमुच्यते । ह्रींकारस्य पीठिका
वृत्तिस्थान शक्त्या गोचरतया विषयीभूतत्वर्थ ॥ ३७ ह्रींका
रपीठिकायै नम ॥

ह्रींकारवेद्या । स्वरूपत निगुणब्रह्मतया अज्ञानविषयत्वा-
श्रयत्वाभ्यामप्राप्तपुरुषार्थरूपतया समागदशाया प्रतीयमान-
त्वात् गुरुपसदनश्रवणादिरूपविध्यग्रामाण्यनिरासाय लक्ष-

णया शुद्धस्वरूपपरमानन्दतया प्रेप्सितत्वात् श्रवणादिजन्य-
वृत्तिभ्याप्यत्वरूपवेदनाविषयत्वम् । ‘ब्रह्मण्यज्ञाननाशाय वृत्ति
व्याप्तिरितीर्थते’ ‘मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेताम्’ इत्यादि
वचनात् भगवताप्यङ्गीकृतमिति । ह्रींकारेण शुद्धस्वरूपतेन
वेद्या वेदितु योग्या । तत्स्वरूपपरिज्ञानद्वारा तत्प्राप्तिरूपपु
रुषार्थहेतुत्वादिति तात्पर्यम् ॥ ॐ ह्रींकारवेद्यायै नमः ॥

ह्रींकारचिन्त्या । अस्य बीजस्य पञ्चप्रणवान्तर्गतत्वेन
उँकारभेदे ब्रह्मप्रतीकत्वाविशेषात् । प्रणवे यथा परापरज्ञ-
ज्ञापासनहेतुवदस्मिन् वा प्रतीके तद्वतीति विकल्प । यदा
भक्तिपार्थक्येन मन्त्रविशेषेषु भवतीति योगवेदमार्गरहस्य न
वादजल्पाद्यवकाश । ह्रींकारे उभयविधब्रह्मस्वरूपतया चि-
न्तितु योग्या । ध्यानस्य साक्षात्कार प्रत्यारादुपकारकत्वेन
ध्यातव्येत्यर्थ ॥ ॐ ह्रींकारचिन्त्यायै नमः ॥

ह्रीं । हृष्ट हरण इति धातुपाठात् समस्तविद्यैश्वर्यप्रदा
नादिशक्त्यारोपाधिष्ठानत्वे सत्यपवादावशेषितपरमानन्दरूप
मुक्तिरित्यथ ॥ ॐ ह्रीं नमः ॥

ह्रींशरीरिणी । मूलमन्त्रात्मिकेति यावत् ह्रीमेव शरीर
मूर्तिरस्या अस्तीति ह्रींशरीरिणी ॥ ॐ ह्रींशरीरिणै नम ॥

हकाररूपा हलधृक्पूजिता हरिणेक्षणा ।

हरप्रिया हराराध्या हरिब्रह्मेन्द्रवन्दिता ॥

हकाररूपा । हकार रूप वष्टावयव यस्या सा,
मूलविद्यावाच्यार्थवाच्क यस्या सा, तथा ॥ ॐ हकार-
रूपायै नम ॥

हलधृक्पूजिता । हल युग धरति इति हलधृक् बल
राम, तेन पूजिता ध्यानादिभिराराधितेत्यर्थ ॥ ॐ ह
लधृक्पूजितायै नम ॥

हरिणेक्षणा । हरिण्या एण्या ईक्षणमिव ईक्षण यस्या
सा तथा, अतिसतोषेण कातराक्षीति भाव । सर्वत्र स-
र्वदा सर्वद्रष्ट्रीति वा । भक्तेष्वादरहेतुदर्शनवतीति भाव ॥
ॐ हरिणेक्षणायै नम ॥

हरप्रिया । हरस्य प्रिया शिववल्लभेत्यर्थ । हर प्रियो
यस्या सा इति वा ॥ ॐ हरप्रियायै नम ॥

हराराध्या । हरेण स्वभर्त्रा आराधितु योग्या, केवलस-
विदानन्दस्वरूपत्वात् ॥ ॐ हराराध्यायै नमः ॥

हरिब्रह्मेन्द्रवन्दिता । हरि रमेश । ब्रह्मा वाणीश ।

इन्द्रो देवश उपलक्षण सर्वदेवभेदानाम् । तैर्वन्दिता नम
स्कृता ॥ ॐ हरिब्रह्मेन्द्रवन्दितायै नम ॥

**हयारुद्धासेविताङ्गधिर्हयमेधसमर्चिता ।
हर्यक्षवाहना हसवाहना हतदानवा ॥**

हयारुद्धासेविताङ्गि । हयारुद्धानाम् अश्वमात्रसेनानी
शक्ति वश्यकरी । तथा सेवितौ अहूँ यस्या सा तथा ॥
ॐ हयारुद्धासेविताङ्गूचै नम ॥

हयमेधसमर्चिता । हयमेधेन अश्वमेधेन समर्चिता पू
जिता । पुरुषत्वादिप्राप्त्यै इलादिभिरित्यर्थ ॥ ॐ हयमेध
समर्चितायै नम ॥

हर्यक्षवाहना । वाहयतीति वाहनम् , हयक्ष केसरी वाहन
यस्या सा तथा । महालक्ष्मीरूपदुर्गेत्यर्थ ॥ ॐ हर्यक्षवा-
हनायै नम ॥

हसवाहना । हन्ति गच्छतीति हस सूर्य प्राणो वा,
वाहनवत् आधारभूतप्रतीकमित्यर्थ , अभिव्यक्तिस्थानमिति
यावत् , 'म यश्चाय पुरुषे । यश्चासाचादित्ये । स एक ' इति
श्रुते । अथवा, हसवाहना ब्राह्मीरूपेणत्यर्थ ॥ ॐ हंस
वाहनायै नम ॥

हतदानवा । हता दानवा अनेकप्रकारशक्तिरूपधरया
भण्डासुरादय यथा सा तथा ॥ ॐ हतदानवायै नमः ॥

हत्यादिपापशमनी हरिदश्वादिसेविता ।

हस्तिकुम्भोचुड़कुचा हस्तिकृत्तिप्रियाङ्गना ॥

हत्यादिपापशमनी । हत्या ब्रह्महत्या आदियेषा तानि
तथा पापानि शमयतीति तथा, ‘हरिहरति पापानि’ इति
बचनात् ॥ ॐ हत्यादिपापशमन्यै नमः ॥

हरिदश्वादिसेविता । हरित् हरिद्वर्ण मरकत इव अश्वो
यस्येन्द्रस्य स तथा आदियेषा । दक्षपतीना तै सविता चर
णारविन्दसनिधि किंकरतयाश्रितेत्यथ ॥ ॐ हरिदश्वा
दिसेवितायै नमः ॥

हस्तिकुम्भोचुड़कुचा । हस्त अख्यास्तीति हस्ती, तस्य
कुम्भौ तद्वदुन्नतौ कुचौ सान्द्रौ यस्या सा तथा ॥ ॐ ह
स्तिकुम्भोचुड़कुचायै नमः ॥

हस्तिकृत्तिप्रियाङ्गना । हस्तिन कुत्तौ चर्मणि प्रिय
प्रीतिमान् शिव, तस्याङ्गना भास्मिनीत्यथ ॥ ॐ हस्तिकृ
त्तिप्रियाङ्गनायै नमः ॥

हरिद्राकुङ्कुमादिग्धा हर्यश्वाद्यमराचिता ।

हरिकेशसखी हादिविद्या हालामदोल्सा ॥

हरिद्राकुङ्कुमादिग्धा । हरिद्राकुङ्कुमाभ्या उपलक्षण कस्तु-
रीपत्रादीनाम् । दिग्धा लिपेत्यर्थ ॥ ॐ हरिद्राकुङ्कुमादि-
ग्धायै नम ॥

हर्यश्वाद्यमराचिता । हर्यश्व सुरेश आदिर्येषाम् अम-
राणा तैरचिता किंकरतया नियामकत्वेन पूजितेत्यर्थ ॥
ॐ हर्यश्वाद्यमराचितायै नमः ॥

हरिकेशसखी । हरय हरिद्वार्णी केशा शिरोरुहा यथा,
'हिरण्यश्मशुर्हिरण्यकेश' इति श्रुते । तस्य सखी प्रयोज
नमनपेक्ष्योपकारिणीत्यर्थ । यद्वा वर्णेन नीलेन हरिणा विष्णु-
ना समा केशा अस्य सन्तीति सर्वाङ्गसुन्दरनित्ययौवनचि-
द्रूपसहितकामेश्वर , तस्य सखी ॥ ॐ हरिकेशसख्यै नमः ॥

हादिविद्या । लोपामुद्रापासितमनुरूपत्यर्थ ॥ ॐ हादि-
विद्यायै नम ॥

हालामदाल्सा । हालाया अमृतमथनादूतवाहण्या
मवेन उल्लासेन अल्सा आरक्षनेत्रान्तरोमाभ्यादिचिह्नवती
त्यर्थ ॥ ॐ हालामदाल्सायै नमः ॥

सकाररूपा सर्वज्ञा सर्वेशी सर्वमङ्गला ।

सर्वकर्त्री सर्वभर्त्री सर्वहन्त्री सनातना ॥

सकाररूपा । द्वितीयखण्डद्वितीयावयवत्वेन ज्ञापक य-
स्या सा तथा ॥ ॐ सकाररूपायै नमः ॥

सर्वज्ञा । अलुपनियज्ञानन्वरूपेण सामान्यरूपेण सर्व
जानातीति सर्वज्ञा, ‘य सर्वज्ञ सर्ववित्’ इति श्रुते ॥
ॐ सर्वज्ञायै नम ॥

सर्वेशी । सर्वस्य कार्यस्य अन्तर्यामिरूपेण ईष्टे प्रेरयती
ति तथा ॥ ॐ सर्वेशै नम ॥

सर्वमङ्गला । सर्वप्रकारेण शुद्धविशिष्टचैतन्यरूपेण मङ्ग
ला परमानन्दस्वरूपा । अत्र बहुग्रीहेरविवक्षितत्वात् विव-
क्षिताच्च वा सुन्दरकायो राजत्यादिवत् समासार्थ । अथवा,
सर्वेषां मङ्गल यस्या सा तथा । सर्वे प्रकारै ध्यानकार्त्ते
नपूजानमस्काराद्यर्चनभक्तिजन्यकैङ्कुर्यं जडानामपि मङ्गल
सुख यस्या जायते सा तथा । सर्वेषामात्मरूपतया प्रतीय
मान मङ्गल सुखस्वरूप यस्या नेति वा । सर्वशब्दवाच्य
सर्वकारण शिव, तस्य मङ्गल सुख यस्या जायते सा तथा,
सर्विन्मय शिव साक्षात्तस्यानन्दमयी शिवा’ इति ३

चनान् । अथवा, मङ्गलशब्दन् मङ्गलहतुभूता स्त्रियो
लक्ष्यन्ते । सर्वेषा प्राणिना मङ्गल मङ्गलसाधनभूता योषा
स्वाभिन्नसच्चिदानन्दवच्चेन यस्या सा तथा, ‘एतस्यैवान-
न्दस्यान्यानि भूतानि मात्रामुपजीवन्ति’ इति श्रुतेरित्यर्थ ।
‘अशुभानि निराचष्टे तनोति शुभसततिम् । स्मृतिमात्रेण
यत्पुसा ब्रह्म तन्मङ्गल विदु । अतिकल्याणरूपत्वान् निय-
कल्याणसश्यान् । स्मृतूणा वरदत्वाच्च ब्रह्म तन्मङ्गल विदु’
इत्यादिवचनात् ॥ ॐ सर्वमङ्गलायै नमः ॥

सर्वकर्त्री । सर्वे समस्त स्वशक्त्या मायारूपया करा-
तीति तथा, ‘ईशत ईशनीभि’ इति श्रुत ॥ ॐ सर्वकर्त्रैं
नमः ॥

सर्वभर्त्री । सर्वे चिभर्तीति तथा, ‘एष विघृतिरेषा
लाकानाम्’ इति श्रुत ॥ ॐ सर्वभर्त्रैं नमः ॥

सर्वहन्त्री । सर्वे हरतीति तथा । एवमिन्नमत्रयै ‘यतो
वा’ इत्यादिश्रुत्युक्ततटस्थलक्षणत्रयमभिहितमिति वेदित
व्यम् । ॐ सर्वहन्त्रै नमः ॥

सनातना । ‘अजो नित्य शाश्वताऽय पुराण’ इति
श्रुत नित्यसिद्धरूपत्यर्थ ॥ ॐ सनातनायै नमः ॥

सर्वानवद्या सर्वाङ्गसुन्दरी सर्वसाक्षिणी ।
सर्वात्मिका सर्वसौख्यदात्री सर्वचिमोहिनी ॥

सर्वानवद्या । सर्वेषांनैश्वर्यादिगुणैरनवद्या । अवद्यानाम
विद्यया हीना जडप्रकृति मिथ्या बाध्यमानत्वात् । तद्विलक्षणा
सत्यज्ञानानन्दरूपत्वादनवद्या । सर्वेषा सर्वाभीष्टप्रापकत्वेन
स्फुल्या वा ॥ ॐ सर्वानवद्यायै नमः ॥

सर्वाङ्गसुन्दरी । सर्वाणि च तानि अङ्गानि च अवद्यवा
शिर पाण्यादय , तेष्वन्यूनातिरिक्तभाववस्त्वात् यथासामुद्रि
कलक्षण तद्वस्त्वन सर्वाङ्गसुन्दरी । अथवा, सर्वेषामङ्गेषु
गरीरेषु ब्रह्मस्वरूपतया अत्यन्तप्रेमविषयत्वेन सुन्दरपदार्थ
वदविनाभाववाक्षाविषयत्वात् तथा ॥ ४५ सर्वाङ्गसुन्दर्यै
नमः ॥

सर्वसाक्षिणी । सर्वेषा जडाना कार्याणा स्फूल्याधायक-
त्वेन प्रकाशकर्त्री तथा , सर्व साक्षादीक्षत इति वा तथा ॥
ॐ सर्वसाक्षिण्यै नमः ॥

सर्वात्मिका । सर्वेषामात्मस्वरूपत्वान् । ‘यच्चाप्नोति यदा
दत्ते यच्चात्ति विषयानिह । यच्चास्य सनता भावस्तम्मादात्मेति
गीयते’ इनि वचनात्तथा ॥ ॐ सर्वात्मिकायै नमः ॥

सर्वसौख्यदात्री । सुखिन भाव सौख्यम्, सर्वाणि च
तानि वियमोदप्रमोदानन्दशब्दवाच्यानि । इष्टदर्शनजन्य
सुख प्रिय । तल्लाभजन्य मोद । तदनुभवजन्य प्रमोद ।
आनन्द समष्टि । जीव भोक्ता । तानि ददातीति तथा ।
सर्वप्रकारै स्मरणादिभि सौख्य ददातीति वा । सर्वेषां
मात्रास्तम्बपर्यन्ताना यथाकर्मोपासन प्रत्यक्षेण हृदयमान
ज्ञानैश्वर्यादिसहित सुख ददातीति वा तथा । ‘एष ह्यानन्द
याति’ इति श्रुते ॥ ॐ सर्वसौख्यदात्र्यै नम ॥

सर्वविमाहिनी । सर्वान विमोहयतीति अन्यथा ग्राहय
तीति वा तथा । ‘अज्ञानेनावृत ज्ञान तन मुहूर्नित जन्त
व ‘अनृतेन हि पत्यूढा’ इति श्रुतिस्मृतिभ्या अज्ञाना
वरणशक्तिकार्यं मोहनादिसत्ताप्रकाशादिप्रधानाधिष्ठानत्वेन
उपचारात् सर्व माहयतीत्युच्यत । अयो दहतीतिवत् ॥ ॐ
सर्वविमोहिन्यै नम ॥

**सर्वाधारा सर्वगता सर्वावशुणवर्जिता ।
सर्वारुणा सर्वमाता सर्वभूषणभूषिता ॥**

सर्वाधारा । सर्वस्याधारा ‘ब्रह्म पुच्छ प्रतिष्ठा’ इति
श्रुते । सर्वेषा हृदयानि आधार अभिव्यक्तिस्थान उपासनाय

यस्या सेति तथा ॥ ॐ सर्वाधारायै नम ॥

सर्वगता । सर्वं गच्छतीति तथा । ‘अनेन जीवेनात्म नानुप्रविश्य’ इति श्रुते ॥ ॐ सर्वगतायै नम ॥

मर्वावगुणवर्जिता । अवमानहतवश्च ते गुणाश्च तथा, आध्यात्मिकसबन्धन आरोपिता सत्त्वादय समष्टौ, अन्त करणधर्मा कामादय व्यष्टौ, सर्वे च ते अवगुणाश्च तथा । सर्वान्तर्यामित्वेन मवानुस्यूतत्वेऽपि तत्तदुपाधिनिष्ठोत्तमाधम धर्मैः न सदध्यत— घटादिनिष्ठाकाशवत् कोशान्तर्गतखङ्गवद्वा, ‘सूर्यो यथा सर्वलोकस्य चम्पु न लिप्यते चाक्षुषैर्बास्य दोषै । एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा न लिप्यते लोकदुखेन बाह्य ’ इति श्रुते ॥ ॐ सर्वावगुणवर्जितायै नम ॥

मर्वारुणा । सर्वेष्वङ्गेष्वरुणा आरक्षती, ‘असौ यस्ता ओ अहण ’ इति श्रुते ॥ ॐ सर्वारुणायै नम ॥

सर्वमाता । सर्वेण कार्येण मीयते अनुमीयतेऽभद्रनेति तथा । तथा हि— इदं जगत् ब्रह्माभिन्न तत्सत्त्वास्फूर्तिनिय तसत्त्वाप्रकाशज्ञानविषयत्वात्, यन् यश्चियतसत्त्वाप्रकाशवान् स तदभिन्न — यथा तन्तुकार्थं पट इति । सर्वान् मिनाति स्वाभेदेन जानातीति तथा ॥ ॐ सर्वमात्रे नमः ॥

सर्वभूषणभूषिता । सर्वात्मकत्वन ये ये प्राणिन यानि
यानि भूषणालकारभोजनादीन भाग्यवस्तुन्यात्मार्थं सपा
दयनित, तेषा सर्वेषा प्रत्यक्तया तै सर्वैभूषिता उपकृतेत्यर्थं,
'आत्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति' इति श्रुते । अथवा,
सर्वदेवात्मकत्वेन सर्वभक्तजनस्य स्वस्वेष्टदेवताप्रीत्यर्थं भूष
णभूषितत्वेन तथा । अथवा सर्वैर्भक्तजनै तत्तदवयवेषु
भूषणैरारोपिता, स्वस्या महाराज्ञीत्वेन असगोदासीनस्व
भावत्वादिति भाव । यद्वा, सर्वदेशकाललोकेषु भूषणै
तत्र तत्र भवै उच्चावचैभूषणैरारोपिता, हस्तश्चादिदहोपा-
धिका सती तत्तदीयालकारादिषु जुगुप्मारहितेत्यर्थं । भूष
यन्ति सर्वोत्तमत्वेन प्रतिपादयन्ताति भूषणानि वेदान्तम
हावाक्यानि, सर्वै समस्तै गतिसामान्यात् एकतात्पर्येण
भूषिता लक्षणया पर्यवसिता समन्विता वेत्यर्थं ॥ ॐ
सर्वभूषणभूषितायै नम ॥

ककारार्था कालहङ्कारी कामेशी कामितार्थदा ।
कामसजीवनी कल्या कठिनस्तनमण्डला ॥

ककारार्था । 'क ब्रह्म' इति श्रुत्या ककारस्य ब्रह्मार्थक
त्वेन तद्यतिरिक्तस्यातदर्थस्य बाधितत्वात् ॥ ॐ ककारा
र्थयै नम ॥

कालहन्त्री । अजपारूपेण प्राणापाननामकचन्द्रसूर्यनियमन पुरुषाणा नियमितपरिमितायु स्वरूपैकविशतिषटशताधिकसहस्रमरुद्याकनिर्गमनरूपण क्षपयन्ति अवशेषायुषो युगकल्पाद्यविशिष्टस्य वृद्धौ पुन सयमने तथा तथा वृद्धौ सयुज्जानस्य सर्वप्राणेन्द्रियस्य वृत्तिलये मनोन्मन्यवस्था निष्पद्यते । तथा च श्रुति — ‘पृथिव्यप्रेजोऽनिलखे समुत्थिते पञ्चात्मक यागगुणे प्रवृत्ते । न तस्य रोगो न जरा न मृत्यु प्राप्तस्य योगाभिमय शरीरम्’ इति ‘अध्यात्मयागा धिगमेन देव मत्वा धीरा हर्षशोकौ जहाति’ इति च । तथा च तदानीमाविभूतब्रह्मस्वरूपेण ‘तत सवत्सरोऽजायत’ इति श्रुत्या क्रियाग्रकर्त्तात्मककालोत्पत्तिश्रवणात् तस्मिन ब्रह्मण्येव लये काल हन्ति नाशयतीति तथा नामनिर्वचन युक्त वक्तुमिति भाव ॥ ॐ कालहन्त्रै नम ॥

कामेश्वी । कामाना भोग्यपदार्थाना यथावृष्ट ईषे प्रेरयतीति तथा ॥ ॐ कामेश्वै नम ॥

कामितार्थदा । कामितानर्थान् ददातीति तथा, ‘आप काम’ इति श्रुते । ससारदशायामावृतानन्दस्य अनापवद वभासमानस्य आत्यन्तकसुखात्मिका मुक्तिर्मे स्यादिति का

स्थमानत्वादात्मन कामितत्वम् । कामितश्चासावर्थश्चेति तस्यैव
ज्ञानस्यावरणाभिभावकत्वेन प्राप्तप्राप्तिरूपतया तदाति प्रय-
च्छतीति प्रकाशस्वरूपण अनुभावयतीत्यर्थ ॥ ॐ कामि
तार्थदायै नमः ॥

कामसजीवनी । काम मन्मथ परमेश्वरनेत्राभिविष्टुष्ट
मण्डासुरात्मना अनेककालदेवलोकविष्णु कामशाखप्रयोग
समये रतिदेवीप्रार्थनसमीचीनितदीयपूर्वकाय तपश्चर्यादिप-
रिपाकफलभूत करुणारसपूरितापाङ्गावलोकनेन सजीवयति
सप्राण कृत्वा तस्मै वरादि प्रयच्छति तेन त हर्षयतीति
तथा ॥ ॐ कामसजीवन्यै नम ॥

कल्या । कलयितु ध्यातु योग्या । अथवा, सर्वोत्तमदेव-
त्वेन ध्यातु याग्या कल्या । कले कामधेनुत्वेन यथा वा-
क्षितार्थकारणम् ॥ ॐ कल्यायै नमः ॥

कठिनस्तनमण्डला । स्तनयो मण्डले आदिमभागौ सा-
न्त प्रदेशौ कठिने अप्रकम्पे अतिस्थिरे वा यस्या तथा ॥
ॐ कठिनस्तनमण्डलायै नमः ॥

करभोरुं कलानाथसुखी कच्जिताम्बुदा ।
कटाक्षस्यन्दिकरुणा कपालिप्राणनायिका ॥

करभोरु । करभ इव ऊरु यस्या सा तथा । ‘मणि
बन्धादाकनिष्ठ करस्य करभो बहि’ इति प्रमाणादिति भा-
व ॥ ॐ करभोरवे नमः ॥

कलानाथमुखी । कला चतु षष्ठिकला नाथयति प्रेर-
यतीति कलानाथ , ‘निश्चसितमेतहग्वेदो यजुर्वेदं साम-
वेद’ इत्यादिश्रुते , ‘शास्त्रायानित्वात्’ इति न्यायाच्च ।
ताहश्शमुख वदन यस्या सेति तथा । कलानाथश्चन्द्र इव
मुख यस्या सेति वा ॥ ॐ कलानाथमुख्यै नम ॥

कच्चजिताम्बुदा । कचेन कशभारेण कवरेण वेत्यर्थ ।
जिता अधरीकृता अम्बुदा मेघा यथा सा तथा , मेघम-
ण्डलापेक्ष्या ऊर्ध्वगामिशिरोहभारा व्योमकेशीति भाव ।
अथवा, केशवृत्तिनीलकूरेण सादृश्यासहत्वेन घिककृता
मेघा यथा सा तथा ॥ ॐ कच्चजिताम्बुदायै नम ॥

कटाक्षस्यनिदिकरुणा । यद्यपि दीनेषु परिपाल्यतामुद्धि-
देवाना महता करुणेत्युच्यते, तथापि तस्या आन्तरत्वेन
अक्षायमानतया तेषु भक्त्यतिशयेन प्रवृत्त्यर्थं सेवादौ तदृत्ता
क्षानस्यावश्यकफलप्रदानादिहेतुतया निश्चयेन तदनुरूपकसा
निवक्त्वीक्षणस्मेरसभाषणादिसत्त्वं तत्रावश्य भवतीति का-
र्यसत्त्वप्रसंजितकारणमत्त्ववत्त्वात्, करुणाया नवरसेष्व-

न्तर्भावात् , रसशब्दस्य मधुरादौ रुद्धत्वात् तेषामनिवचनी यत्वऽपि अनुभवगोचरतायामिक्षादिसारद्रव्यपदार्थनिष्ठुत्वा-पलङ्घे तत्मवन्धवशात् परपरया द्रवद्रव्यवृत्तिस्थन्दनरूप-क्रियाश्रयत्वमुपचर्यते । तथा च कटाक्षस्यनिदनी करुणा परिपाल्यतामुद्धिरूपा यस्या सा तथा ॥ ॐ कटाक्षस्य-निदकरुणायै नम ॥

कपालिप्राणनायिका । कपालमस्य अस्तीति कपाली आनन्दभैरव , तस्य प्राणनायिका प्राणस्येत्युपलक्षणं पञ्चानाम । नायिका अधिष्ठानत्वेन प्रेरका । ‘न प्राणेन नापानेन मर्यो जीवति कश्चन । इतरेण तु जीवन्ति यस्मिन्नेतामुपाश्रितो’ इति श्रुते । तस्यापि हृदयान्तर्बर्तिपरमश्वररूपेति यावत् । प्राणवल्लभेति वा , प्रियेति भाव । ॐ कपालिप्राणनायिकायै नमः ॥

**कारुण्यविग्रहा कान्ता कान्तिधूतजपावलि ।
कलालापा कम्बुकण्ठी करनिर्जितपल्लवा ॥**

कारुण्यविग्रहा । कारुण्यं पूर्वोक्तकुपा, करुणस्य भाव , तत् विग्रह मूर्तिर्थस्या सति तथा । कारुण्यस्यान्त करणपरिणाममुद्धिरूपत्वेन नन्नान्तवीक्ष्यासस्मितभाषादि नानुमीथमानत्वेऽपि साक्षात्जन्यमनोवाङ्छितवरप्रदाना

दीना शरीरावयवविशेषजन्यतया कारुण्य विग्रहो यस्या
सेति समासोपपत्ति । मायोपाधिकस्य ब्रह्मण जगत्सृष्ट्य
नुकरणहेतुभूतस्वेच्छामात्रनिमित्तककर्मानधीनसचिदानन्दघ
नीभूतात्मकभक्तानुग्राहकविग्रहवत्ता विना देवताया बुद्धा
वनारोपेण सगुणोपासनमनुपपद्यमान स्यात्, तदर्थं
देवताधिकरण मन्त्रप्रकाशिता देवा ‘वज्रहस्त पुर
न्दर’ इत्यादिस्वत प्रमाणवेदवाक्यवशात् बाधकाभावे
विग्रहवन्त अङ्गीकर्तव्या इति प्रतिष्ठापितम् । तथा ‘बहु
शोभमानामुमा हैमवतीम्’ इति केनोपनिषद्भाष्ये हैमानि
हैमविकाराणि भूषणानि यस्या सेति वा तथा, हिमवत्
अपल्य खीति च तथेति परदेवताया दिव्यविग्रहवत्त्वं प्रति
ष्ठापितम् । तथा च महानुभावाना स्वप्रकाशचैतन्यरूपाणा
मेवभूताना सर्वात्मना सर्वोत्तमाना मूर्तित्रयदेवाना ध्याना
कुपकाराय तादृशमूर्तिमत्त्वम् अस्तीति न किंचिदनीश्व
रवादप्रसङ्गावकाश इति आस्ता विस्तर ॥ उँ कारु
ण्यविग्रहायै नम ॥

कान्ता । ‘कन दीप्तौ’ इति धातो अत्यन्तमनोहरतमे
त्यर्थ । मदनगोपालविग्रहा वा । ‘कदाचिदाद्या ललिता पु
रुपा कृष्णविग्रहा । वशनादविनोदेन करोति विवश जगत्’

इति त्रिपुरतापनीये ॥ ॐ कान्तायै नमः ॥

कान्तिधूतजपावलि । जपाना जपापुष्पाणाम्, उपलक्षणम्
अन्येषामारक्तवर्णानाम्, आवलि पञ्च दृष्टान्तत्वेन कविभि
रुत्प्रेक्षिता । कान्त्या अप्राकृतस्वच्छपरमानन्दचिद्ग्रासा धूता
परित्यक्ता प्राकृतत्वेन अल्पकान्तिमत्त्वया उपमायोग्यतया
यथा सा, ‘न हि महान्तो नीचैरुपमीयन्ते’ इति न्याया
दिति भाव ॥ ॐ कान्तिधूतजपावल्यै नम ॥

कलालापा । कला चतुषष्ठिकला आलापो व्यावहा-
रिकशब्द यस्या सा तथा, ‘वेदशास्त्रमयी वाणी यस्या
सा परदेवता’ इति वचनात् । कल अव्यक्तमधुर सप्रथो
जन आलाप सलापो यस्या सेति वा तथा, ‘अव्यक्ता
भारती तथा’ इति महापुरुषसामुद्रिकवचनात् ॥ ॐ
कलालापायै नमः ॥

कम्बुकण्ठी । कम्बुशब्दन अत्र शङ्खनिष्ठेरेखान्त्रय लक्ष्य
ते । तद्वान्कण्ठो यस्या सेति तथा गुणनामेदम् ॥ ॐ
कम्बुकण्ठै नम ॥

करनिर्जितपल्लवा । करशब्देन करतल लक्ष्यते । पल्ल
वशब्देन तन्निष्ठपादल्य क्षिग्धता लक्षणया इत्यर्थ । तथा

च अन्योन्यगुणयोर्जयपराजये, अर्थात्तद्वतोरपि तौ सिद्धाविति तन्मोपपत्ति । ‘विवाहश्च विवादश्च समयोरेव शोभते’ इति वचनात् करतल तत्साम्यध्वनिरनेन नामा कृत । करेण निर्जिता पलुवा यस्या सा तथा ॥ ३५ करनिर्जित पलुवायै नम ॥

कल्पवल्लीसमभुजा कस्तूरीतिलकाश्चिता ।
हकारार्था हसगतिर्हाटकाभरणोज्ज्वला ॥

कल्पवल्लीसमभुजा । यथा दिव्यवृक्षा नन्दनोद्याने प्रसिद्धा तथा तदलकाराय वल्ल्यादयोऽपि कल्पयन्ति सपादयन्तीति कल्पा , कल्पाश्च ता वल्ल्यश्च ब्रतत्य , ताभि समा भुजा हस्ता यस्या सा तथा । कविसप्रदायप्राप्त्या खीभुजाना वल्लीसाम्योक्तिरिति मन्त्रव्यम् । अत्र समपद स्वारस्येन तेषामपि तदवच्छिन्नचैतन्यद्वारा यथाप्रारब्धं चेतनवल्लोकवाक्तिभृतफलकतृत्वमिति ध्वनितम् । ‘एकस्था सर्वभूतान्तरात्मा रूप रूप प्रतिरूपो बहिश्च’ इति श्रुते , ‘तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोश्चासभवम्’ इति स्मृतौ च भगवता स्वकीयसञ्चिदानन्दस्वरूपावस्थितिरेवोक्ता । अत एव परदेवीभुजाना नैव साम्योक्तिरिति शङ्का निरस्ता वेदि

तव्या, औपाधिकचैतन्येन तथाभूतचैतन्यस्य साम्योपपत्ते ॥
ॐ कल्पवल्लीसमसुजायै नम ॥

कस्तूरीतिलकाञ्जिता । कस्तूरीतिलकेन ललाटदेशस्था
पितविन्द्वाकारमृगनामिना अञ्जिता चिह्निता अलक्ष्यतेर्यर्थ ॥
ॐ कस्तूरीतिलकाञ्जितायै नमः ॥

हकारार्था । हकारस्य आकाशबीजस्य अर्था, अर्थं स्व
रूपचैतन्यम् आकाशविग्रहेत्यर्थ , ‘आकाशो ह वै नाम ना
मरूपयोर्निर्वदिता ते यदन्तरा तद्वद्य’ इति श्रुते ॥ ॐ
हकारार्थायै नम ॥

हसगति । हन्ति गच्छतीति हस प्राण आदित्यो वा ।
हसस्य प्राणस्य गति गमनागमन लक्षणया तज्जाप्याजपा
मन्त्ररूपा यस्या सा तथा, ‘हकारेण बहिर्याति सकारेण
पुनर्विशेषत्’ इति वचनात् । यद्वा, तदभिमानिदेवतारूपा
मीषोमात्मकसूर्यचन्द्रगती अहोरात्रात्मककालस्वरूपाया य
स्या सा । अथवा, हन्ति देहादेहान्तर गच्छति स्वक
र्मवशेनेति हसा जीव , तस्य गति प्राप्यस्थान मुक्ति
रित्यर्थ , ‘ब्रह्मविदाप्नोति परम्’ ‘यद्रत्वा न निवर्तन्ते’
इति श्रुतिसमृतिवचनात् । अथवा हन्ति स्वकार्यभूत
जगत्रविशतीति हस । ‘हसस्तु परमेश्वर ’ इति नृसिंहता

पनीये । गम्यते प्राप्यते शरणत्वेन प्रपद्यते चतुर्विधभक्तैरि
ति गति । हसश्चासौ गतिश्चेति सामानाधिकरण्यसमाप्तं ,
'हृस शुचिष्टत्' इति श्रुते । आहोस्त्वित् , हसस्य ब्रह्मवाह
नस्य गतिरिव गमन यस्या सा तथा । उताहो, हसशब्देन
नामैकदेशेन हसक पादकटकमुच्यते, गम्यते अनेनेति
गति चरणम्, हसयुक्ते गती पादारविन्दे यस्या सा
तथा । यद्वा, हसशब्देन नित्यानित्यसारासारजडाजडादिव
स्तुविवेकसमर्था , हन्ति गच्छन्ति प्रतिप्राम प्रतिदेशम्
इति हसा परिब्राजका चतुर्थाश्रमिण निष्कामा , तेषा
गति गम्यते ज्ञायते साक्षात्कियत इति गति , 'सन्यासयो
गाधातय शुद्धसत्त्वा ' इति श्रुते । 'ये पूर्व देवा ऋषयश्च
तद्विदु ते तन्मया अमृता वै बभूतु ' इति श्रुते । जीवन्मु
क्तपुरुषानुभूयमानपरमानन्दमुक्तिस्वरूपेतत्थ ॥ ३५ हस
गत्यै नम ॥

हाटकाभरणोऽज्ज्वला । हाटकस्य सुवर्णस्य कार्याणि च
तानि आभरणानि च हाटकाभरणानि तैरुज्ज्वला तथा,
प्रकाशिता अलकृतेत्यर्थ । हाटकस्य सुवर्णरूपब्रह्माण्डस्य
आभरणवतुज्ज्वला प्रकाशकरी सत्तास्फूर्तिकरीत्यर्थ । यद्वा,
तस्मिन्नाभरणै मङ्गलसूत्रादिभि सनाथखीमण्डलस्वरूपैरु

ज्ज्वलतीति । आहोस्त्रिवत्, कार्यकारणद्वयरूपवसुदानेन वसु स्वरूपेण वा उज्ज्वलति प्रकाशत इति तथा, ‘वसुरन्तरिक्ष सत्’ इति श्रुते ॥ ३५ हाटकाभरणोज्ज्वलायै नम ॥

हारहारिकुचाभोगा हाकिनी हल्यवर्जिता ।
हरित्पतिसमाराध्या हठात्कारहतासुरा ॥

हारहारिकुचाभोगा । हरस्य परमेश्वरस्य इमे सबन्धिन हारा ईश्वरत्वाप्नकामत्वनित्यत्प्रत्यादयो गुणा , तान् हरति तद्विपरीक्षाविद्याद्याधानेन उत्सादयतीति हारहारी, कुचयोराभोग पर्यन्तभूमि यस्या सा तथा । परमेश्वरस्य तद्विषयकवाङ्लिया तदेकसक्तमनस्त्वेन तत्कारणीभूताविद्या वशवृत्तित्वेन वशीकृतमायत्वस्वरूपेश्वरत्वसमानाधिकरणा पकामत्वादय अपहृता , जीवेश्वरयोरेकत्र तेषा तद्वृणाना च सामानाधिकरण्यायोगादित्यर्थ । तथा च ईश्वरस्य मादिष्टसाधनमित्यन्यत्र पदार्थे बुद्धिमत्त्वस्त्वयैव बहुभवनरूपतया तस्य जगदाकारत्वाधायका—इत्यधिकगुणोत्प्रेक्षाविषयत्वेन भोगस्यातिशयोक्तिरिति द्रष्टव्यम् । अथवा, हारान् मुक्तास्त्रज हरति आदते इति हारहारी कुचाभोगो यस्या सेति तथा षट्प्रकारेण मुक्ताहरेण यथोचितकालं भूषितवतीति भाव ॥ ३५ हारहारिकुचाभोगायै नमः ॥

हाकिनी । हाकयति जन्ममरणयो छेदयतीति हा
किनी , ‘हाकू च्छेदे’ इति धातुपाठात् ॥ ॐ हाकिन्यै
नम् ॥

हल्यवर्जिता । हल्सवन्धि हल्य कृष्णादिद्वारा जनक
त्वम् , तद्वर्जिता , कामादिविहीनशुद्धचैतन्यस्वरूपत्वात् ।
हल्य कपट मित्रेष्वप्यन्यथा स्वान्त करणाविष्कृति तेन व
र्जिता । अविद्याविरहितत्त्वपदलक्ष्यार्थभूतत्वादिति यावत् ॥
ॐ हल्यवर्जितायै नम् ॥

हरित्पतिसमाराध्या । हरिता दिशा पतय महेन्द्रादय ,
तै सम्यक् श्रद्धाभक्तिपूर्वकम् आराधितु योग्या । तद्विपक्ष
निबर्हणनेष्टप्रापकदैवतत्वादित्यभिसधि ॥ ॐ हरित्पतिस
माराध्यायै नम् ॥

हठात्कारहतासुरा । हठात्कारेण अतिशीघ्रतया हता
पराभूता असुरा असुरपक्षा महिषादयो यथा सा तथा ,
समबलयो किल लोके सामान्युपाय बलाबलविचारणा
च भवति । प्रबलस्य तु दुर्बलेषु वैरिषु सिंहस्य मेषेष्विव
तद्योगेन अतित्वरथाविचारणैव देवलोकसुखप्रदा—इति ना
मार्थविचारणायामितरेषु कैमुतिकन्यायेन तत्कारणत्व ध्व
नितमिति योजनीयम् ॥ ॐ हठात्कारहतासुरायै नम् ॥

हर्षप्रदा हविर्भोक्त्री हार्दसतमसापहा ।
हल्लीसलास्यसतुष्टा हसमन्त्रार्थरूपिणी ॥

हर्षप्रदा । हर्ष आनन्दकारक सुखविकासादिकार्थोन्मेय स्वात्मसभावनेतरपरिभवनिभित्तचित्तवृत्तिविशेष , कार्यस्य कारणाविनाभावितया तत्प्रदान तद्वेतोरप्याक्षिपतीति सुख-प्रदेत्यर्थ । प्रददातीति प्रदा । अथवा, हर्ष धनयौवनादि सुख पुत्रबन्धुवर्गादिरूपेण परिहृत्य प्रकर्षेण द्यति खण्ड यतीति वा तथा ॥ ॐ हर्षप्रदायै नम ॥

हविर्भोक्त्री । ‘स ब्रह्मा स शिव स हरि सेन्द्र सो इक्षुर परम स्वराट्’ इति श्रुते वसुरुद्रादित्याकारेण हर्भीषि यजमानेन अग्नौ प्रक्षिप्तानि स्वाहासुखेन भुङ्ग इति तथा । यद्वा हर्भीषि कालान्तरभाविफलानि अदृष्टात्मना सूक्ष्मरूपाणि तत्त्वज्ञमानजीवगतानि भूतसूक्ष्माभिधानानि समष्टि व्यष्टधात्मनेश्वरजीवोपाधिभूतानि मायाविद्याशब्दितानि मुक्तिपर्यन्त भुनक्ति पालयतीति वा तथा । अन्यथा ससा रस्यानादित्वाभावेन आदिमशरीराद्युत्पत्तौ अङ्गीक्रियमाणा याम् प्रपञ्चस्याकस्मिकत्वमकृताभ्यागमप्रसङ्गश्च स्यादिति भाव ॥ ॐ हविर्भोक्त्र्यै नम ॥

हार्दसतमसापहा । हृदयावच्छिन्नं हार्द , ‘यो वेद नि
हित गुहायाम्’ इति श्रुते । अस्मिन् यत्सतमस आवारक
त्वात् ‘तम आसीत्’ इति श्रुत्या च आत्मविषयक तदाश्रय
मज्जानम् अनर्थकरम् अव्याकृताकाशमित्युन्नयते, महावाक्य
श्रवणजन्यधीवृत्तिप्रतिफलिताकारेणापहन्तीति सा तथा ।
नाह ब्रह्मास्मि ससारी ब्रह्म नास्ति न भावत च—इत्यज्ञानस्य
सोऽह ब्रह्मास्मि सच्चिदानन्दलक्षण —इति एकाकारवृत्तिबा
ध्यत्वनियमेन बाधाधिष्ठानम् ‘नेह नाना’ इति श्रुतिसिद्ध
ब्रह्मरूपेति यावत् ॥ ॐ हार्दसतमसापहायै नमः ॥

हल्लीसलास्यसतुष्टा । हल्लीसै चित्रदण्डै कुमारिकाभि
एकतालादियुक्तगीतपूर्वक यलास्य नर्तनं तस्मिन् सतुष्टा
प्रीतिमतीत्यर्थ । ‘नारीणा मण्डलीनृत्य बुधा हल्लीसक
विदु’ इति हाराबलीकोशात् मण्डलाकारनृत्यसतुष्टेत्यर्थ ॥
ॐ हल्लीसलास्यसतुष्टायै नमः ॥

हसमन्त्रार्थरूपिणी । हसै परमहसै उपान्यो यो मन्त्र
प्रणवं तस्य शास्त्रबोधिततत्त्वाथरूपिणी । वाक्यलक्ष्यार्थस्व
रूपेण ज्ञायमानेत्यर्थ । अथवा, हसमन्त्र अजपा । हकार
सकारौ शोधिततत्त्वपदार्थौ, हकारस्य परोक्षवाचिन सकार-
स्य तादृशस्य च भागत्यागलक्षणया निष्प्रपञ्चनित्यशुद्धम्

क्लबुद्धसच्चिदानन्दस्वरूपेत्यर्थं ॥ ॐ हसमन्त्रार्थरूपिण्यै
नमः ॥

हानोपादाननिर्मुक्ता हर्षिणी हरिसोदरी ।
हाहाहृष्टसुखस्तुत्या हानिवृद्धिविवर्जिता ॥

हानोपादाननिर्मुक्ता । अनिष्टसाधने हान परित्यागक्रि-
या । इष्टसाधने उपादान स्वीकारक्रिया । परिजिह्वीर्षा
आदित्सा वा । ‘अप्राणो ह्यमना शुभ्र’ ‘अकायम्’ ‘अ
शरीर वाव सन्त न प्रियाप्रिये स्पृशत’ इति बहुश्रुते
अशरीरस्य ब्रह्मणोऽन्त करणादिधर्माणामसभवात् ताभ्या
निर्मुक्ता नि सङ्गेत्यर्थं, ‘विमुक्तश्च विमुच्यते’ इति श्रुते ॥
ॐ हानोपादाननिर्मुक्तायै नमः ॥

हर्षिणी । ‘एष ह्येवानन्दयाति’ इति श्रुते हर्षयति
सतोषयतीति तथा ॥ ॐ हर्षिण्यै नमः ॥

हरिसोदरी । हरिणा कुण्डोन समान एक उदरम् उत् ईषत्
अर भेदक अवच्छेदकमिलर्थं । उच्चैरर कूटो वा अत्यल्पमि
र्घ्याभूतमायोपाधिकचैतन्यावस्थाविशेषरूपा । ‘अपरेयमि
तस्त्वन्या प्रकृतिं विद्धि मे पराम् । जीवभूता महाबाहो
ययेद् धार्यते जगत्’ ‘देवात्मशक्तिं स्वगुणौर्निंगूढाम्’ इत्या

दिमृतिश्रुतिभ्याम् ईश्वरस्य रूपभेदवत्त्वावगमादिति मन्त्र
व्यम् ॥ ॐ हरिसोदर्यै नम ॥

हा हाहृहृमुखस्तुत्या । हा हाहृहृनामकगन्धवौं मुख्यौ येषा
जनाना तैस्तथा । स्तुता गुणनिष्ठगुणाभिधान स्तुति ।
तदाश्रयत्वेन प्रतिपादनीयेत्यर्थ ॥ ॐ हा हाहृहृमुखस्तु
त्यायै नम ॥

हानिवृद्धिविवर्जिता । अवयवोपचयरूपा वृद्धि , तदप
चयरूपा हानि , ताभ्या वर्जिता, 'न कर्मणा वर्धते नो
कर्नीयान्' इति श्रुते । उपलक्षणम् , षड्भावविकाराणा
शरीरधर्मत्वेन कर्मनिभित्तत्वादीश्वरे तदभावेन निर्विकारे-
त्यर्थ ॥ ॐ हानिवृद्धिविवर्जितायै नमः ॥

हय्यङ्गवीनहृदया हरिगोपारुणाशुका ।

लकाराख्या लतापूज्या लयस्थित्युद्भवेश्वरी ॥

हय्यङ्गवीनहृदया । हय्यङ्गवीनवत् नवनीतिसद्विरल
मृद्ववयवपरिणामद्रवत्वसाहृदययोगिहृदयकृपारसरूपपरिणा
मवतीति सा तथा । हृदयाभावेऽपि सर्वात्मकतया तद्वत्त्वम् ।
ईक्षणादिवन्मायापरिणामरूपा दया वा हृदयशब्देन उच्यते ।
'अवागमना' इति श्रुत्या सर्वनिषेधात् ॥ ॐ हय्यङ्गवी
नहृदयायै नमः ॥

हरिगोपारुणाशुका । हरिगोप इन्द्रगोप आद्रामघा-
नक्षत्रे वर्षासूह्नवा अष्टपादा रक्तवर्णा मृदुङ्घ्रा कटिवि-
शेषा , तथा शोणमशुक अम्बरम् , स्वार्थे कप्रतय ,
किरणानि वा यस्या सा तथा । ॐ हरिगोपारुणांशु-
कायै नम ॥

लकाराख्या । लकारयुक्त मूलमन्त्र आख्या वाचक
शब्द यस्या सा तथा । लकारस्य शक्वीजस्य वार्थ ,
'सेन्द्र' इति श्रुते । लकारयुक्तस्य मायावीजस्य वा स्त-
वधमायेत्यर्थ ॥ ॐ लकाराख्यायै नम ॥

लतापूज्या । लवन्ति विनमन्ति अत्यन्तनम्भा भवन्तीति
लता परमपतित्रता अरुन्धत्यादय स्थिय , ताभि स्थिरमा
ज्ञस्याय स्वेष्टदेवतात्वेन पूज्या पूजनीया । तदुक्तम्—‘समा
राध्य महेशानीं भुक्ति मुक्ति च विन्दति’ इति । अथवा,
केदारादिगौरीविशेषमूर्तौ लताभि उपलक्षण वन्यपूजोपकरणै
पूज्या अलकृता । शबरी वा वनदुर्गा वेति भाव ॥ ॐ
लतापूज्यायै नमः ॥

लयस्थित्युद्भवेश्वरी । वैपरीत्येन विशेषण योजयम् । उद्भ-
वतीत्युद्भव कार्यात्मना अभिव्यक्ति । स्थिति ज्ञानविषय
तायोग्यकालावच्छेद अनुभवसत्तावत्त्वमिति यावत् । लय

उत्पन्नकार्यस्य कारणात्मना अवस्थिति वाचारम्भणयोग्यते
त्यर्थं । तासा क्रियाणाम् अचेतनकार्यत्वायोगेन घटादिकार्ये
चेतनस्य निमित्ततादर्थनात् एकतटस्थेश्वरत्वं वा, गोपुरादौ
नानाचेतनदर्शनात्ताहशनानेश्वरत्वं वेति विशये, ‘यतो वा इ
मानि भूतानि जायन्ते’ इति श्रुतौ ‘यत’ इत्येकवचनपञ्च
स्या नानात्वतटस्थत्वे, ‘जनिकर्तुं प्रकृति’ इति सूत्रम् । जनि-
कर्तुं कार्यस्य प्रकृतिरूपादानमपादानसङ्गा स्यात् । ‘अपादाने
पञ्चमी’ इति शासनात् अभिनन्निमित्तोपादनत्वमीश्वरत्वमिति
सिद्धान्तं । तटस्थलक्षणमेतत्, ज्ञायमानस्य ब्रह्मण लक्षण
प्रमाणयो अवश्यवाक्यत्वादिल्यभिप्राय । आदौ लयशब्दो
पादानेन अनादित्वं प्रपञ्चस्य सूचितम् । जगत इति शब्द
पूरणन नाम योजनीयम् । तथा च जगत लयश्च स्थितिश्च
उद्भवश्च तेषामीश्वरी । कृटस्थचैतन्यमात्रसचिदानन्दाधायक
तया विवर्तकारणमित्यर्थं ॥ ॐ लयस्थित्युद्भवेश्वर्यै
नमः ॥

लास्यदर्शनसतुष्टा लाभालाभविवर्जिता ।
लद्ध्येतराज्ञा लाबण्यशालिनी लघुसिद्धिदा ॥

लास्यदर्शनसतुष्टा । यथा राजा सपूर्णकाम प्रयोजनम

नुहिश्यापि मृगयादिलीलाविशेषान् पश्यति बालकादिनृत्यवा, तथा आज्ञानाम् इष्टानिष्टमिश्रोदासीनपदार्थचतुष्टयानुभवजन्यहर्षशोकादिसभवन्मदोद्रेकशोकातिरेकहेतुकविहितादिकरणाकरणरूपचरणाचङ्गपरिस्पन्दरूपनानाविधप्राणिकायनिकायजन्यलास्यदर्शनेन अनुहिश्यापि प्रयोजन सतुष्टा तत्त्वकर्मानुसारेण फलप्रापकेश्वरतया सर्वसमानत्वात्, ‘नादत्ते कस्यचित्पाप न चैव सुकृत विभु’ इति भगवद्वचनात्। लास्य दवतादिवारवनितादिभि क्रियमाण तालगीतयुक्तनृत्य तदर्शनेन सतुष्टा । तदीयफलप्रदानोन्मुखकृपारसवतीर्थं ॥ ॐ लास्यदर्शनसतुष्टायै नमः ॥

लाभालाभविवर्जिता । अप्राप्तप्राप्तिर्लभ , कृतेऽपि यत्तेतदप्राप्तिरलाभ , ताभ्या विवर्जिता, पर्याप्तकामत्वेन नियत्तमत्वात्, ‘न मे पार्थीस्त र्तव्य त्रिषु लोकेषु किंचन’ इति भगवद्वचनात् ॥ ॐ लाभालाभविवर्जितायै नम ॥

लङ्घ्येतराज्ञा । इतरेषा जीवभ्रान्तिकलिपताना गुणमूर्त्यादीनाम् उपासनाविधिरूपा वा, कर्मविधिरूपा वा आज्ञा प्रेरणालङ्घ्या अविषयीकृता यथा सा तथा । शुद्धैतन्यस्य विशिष्टक्रियाद्यात्मकत्वाभावेन विश्वविषयत्वादिति यावत् । अथ वा, किंकरीत्वाभावेन इतरेषा देवतानाम् आज्ञा प्रेरणा लङ्घ्या

उपेक्षणीया यया सा तथा, ‘सर्वस्याधिपति सर्वस्येशान’
इति श्रुते । ईश्वरस्य सर्वनियन्त्रत्वेन स्वेतरानियन्त्रत्वादिति
ज्ञातव्यम् ॥ ॐ लङ्घण्येतराज्ञायै नम ॥

लावण्यशालिनी । लावण्य मौनदर्यं परमानन्दस्वरूपतया
अतिशयप्रीतिविषयत्वं शालत इति तथा । सर्वावयवसाधा-
रणसु दरभाववतीति वा ॥ ॐ लावण्यशालिन्यै नमः ॥

लघुसिद्धिदा । लघुना उपायेन सिद्धिं वाढिछतार्थप्राप्तिं
ददातीति तथा, लघुशब्द लक्षणया लघिमासिद्धिपर ।
तथा च लघिमाद्यष्टुश्वर्यप्रदेति वा । अथवा, लघूना अत्य-
न्ताल्पज्ञानभाग्यशरीररूपचरणवतामप्यतिनिकृष्टाना तिर्य-
गादीनामपि सिद्धिं मुक्तियोग्यताहेतुज्ञानादिसाधनसपत्ति
तत्कार्यमहिमातिशयोन्नेया ददातीति सा तथा ॥ ॐ लघु-
सिद्धिदायै नम ॥

लाक्षारससर्वणीभा लक्ष्मणाग्रजपूजिता ।

लभ्येतरा लब्धभक्तिसुलभा लाङ्गलायुधा ॥

लाक्षारससर्वणीभा । लाक्षारसेन लाक्षाद्रवेण समानो
वर्णो यस्या मा तथाभूता शोभा कान्तिर्यस्या सा
तथा । अतिपाटलविग्रहप्रभेत्यर्थ ॥ ॐ लाक्षारससर्वणी
भायै नम ॥

लक्ष्मणाप्रजपूजिता । अग्रे जायेते इत्यग्रजौ रामभरतौ
लक्ष्मणस्यापि ज्येष्ठभूतरामाचारानुकारिवेन चतुर्भिरपि दा-
शरथिभि पूजितेत्यर्थ । रामस्य शिवलिङ्गप्रतिष्ठाता— इति
नामवत्त्वान्यथानुपपत्त्या शिवदपतिपूजकत्वेन तद्वितरेषा तद्व-
शस्त्रीपुरुषाणा तत्सिद्धिरिति ध्वनितोऽर्थ ॥ ॐ लक्ष्मणाग्र-
जपूजितायै नम ॥

लभ्येतरा । लभ्यानि लब्धव्यानि कर्मोपासनाविशेषाणा
फलत्वेन साध्यानि भव्यानीत्यर्थ । तेभ्य इतरा विलक्षणा ।
'तत्सत्य स आत्मा' 'नित्यो नित्याना चेतनश्चेतनानामेको
बहूना यो विदधाति कामान् । तमात्मस्थम्' इति 'यत्साक्षाद
परोक्षाद्वच्छ' इत्यादिभि श्रुतिभि आत्मन नियप्राप्तस्वरूप
त्वेन प्राप्तप्राप्तव्यरूपतया मोक्षरूपत्वेन चतुर्विधक्रियाफलत्वा-
भावादिति मन्तव्यम् । अथवा, इतराणि धर्मार्थकामरूपत्रि-
र्वर्गरूपाणि फलानि लब्धव्यानि प्राप्तव्यानि यस्या सका
शादिति सा तथा, उक्तश्चुते ॥ ॐ लभ्येतरायै नम ॥

लब्धभक्तिसुलभा । भक्ति सामान्यविशेषाकारेण द्वि
विधा । तत्राद्या आर्तजिङ्गास्वर्थार्थिभि यैर्लब्धा तत्तत्कलो
देशेन समयविशेषे विच्छिद्य विच्छिद्य प्राप्ता तेषा सुलभा
तत्त्वारब्धानुसारेण फलदानोन्मुखस्वात्मरूपतया सनिहित

त्वात् । द्वितीया भक्तिस्तु ब्रह्मसाक्षात्कारवता पुरुषेण घेनैकभ
क्तिया लब्धा, ‘एकभक्तिर्विशिष्यते’ इति स्मृते, तस्य सु
लभा, स्वात्मरूपतया सदा ज्ञायमानत्वात् । ‘ज्ञानी त्वात्मैव
मे मतम्’ इति गीतासु । अथवा, लब्धा प्राप्ता सत्यपि कण्ठ
गतचामीकरवत् लब्धभक्तीना सुलभा सुखनानायासेन कष्टेन
विना साध्यतया लाभ प्राप्तिर्यस्या सा तथा, ‘भक्त्या
मामभिजानाति’ इति स्मृते ॥ ॐ लब्धभक्तिसुलभायै
नमः ॥

लाङ्गलायुधा । शेषरूपतया हलायुधेत्यर्थं, ‘अनन्त
श्रास्मि नागानाम्’ इति श्रीभगवद्गच्छनात् ॥ ॐ लाङ्गलायु
धायै नमः ॥

लग्नचामरहस्तश्रीशारदापरिवीजिता ।
लज्जापदसमाराध्या लपटा लकुलेश्वरी ॥

लग्नचामरहस्तश्रीशारदापरिवीजिता । लग्नौ करसबद्धौ
धृताविलर्थं, लग्नौ चामरौ ययोस्तौ ताहशौ हस्तौ ययोस्ते
श्रीश्च महालक्ष्मी शारदा च ते ताम्या वीजिता परिवी
जिता । अनादिकालादारभ्य परिचर्यया वीजयमानेत्यर्थं ॥
ॐ लग्नचामरहस्तश्रीशारदापरिवीजितायै नमः ॥

लज्जापदसमाराध्या । लज्जानाम अन्त करणधर्मं जुगु
प्साहेतु गूहनसाधनम्, उपलक्षण मनोधर्माणाम्, तस्य पदम्
आश्रय , ‘काम सकल्पा विचिकित्सा श्रद्धाश्रद्धा वृत्तिरधृ
तिर्हीर्धीर्भीरितेत्सर्वं मन एव’ इति श्रुते । तस्मिन समा-
राध्या चिन्तनीयेत्यर्थ ‘य आत्मनि तिष्ठन्तरो यमयति’
‘गुहाहित गङ्गरेष्ट पुराणम्’ ‘तमात्मस्थ येऽनुपश्यन्ति
धीरा’ इत्यादिश्रुतिभ्य । अथवा, लज्जापदं जीवचक्रम्,
तस्मिन् तदधिष्ठानानन्दाभिव्यक्तिहेतुतया बहिर्यागक्रमेण पू
जनीयेत्यर्थ ॥ ३० लज्जापदसमाराध्यायै नमः ॥

लपटा । लभिति पुरुष्वीवाचकक्वीजेन तदुपलक्षित जगल्ल
क्षयते, पटशब्दन आवारकत्वधर्मवत्तया अविद्या लक्ष्यते,
लम जगत पट कारणीभूता अविद्या यस्या सा तथा,
‘मायिन तु महेश्वरम्’ ‘य एको जालवान्’ इति श्रुते ।
‘अज्ञानेनावृत ज्ञानम्’ इति स्मृतेश्च । अथवा, लम्पटो नाम
तन्द्री आलस्यम्, कर्मोपासनाबाहुल्येऽपि प्रतिबन्धकभूयस्त्वे
शीघ्रतया परमेश्वरस्य फलदानोन्मुखताया राजादिवचिर-
विलम्बितसेवाफलदानवैमुख्ये तद्वत्तोपचारात्, लम्पटो यस्या
सा तथा । अथवा, लम्पटादीनामन्त करणधर्माणामध्यास-
वशेन तदवचिष्ठन्ते चैतन्ये सत्त्वरजस्तम कार्याणामुपलब्धे

स्तद्वच्च वा ॥ ॐ लपटायै नमः ॥

लकुलेश्वरी । कु पृथिव्युपलक्षितजगत् लीयते अस्मि
न्निति कुलम्, मायोपाधिकचैतन्यम्, प्रलयाधिष्ठानम् ।
'यत्प्रयन्त्यभिमविशन्ति' इति श्रुते । लीयमान कुल लकुल
निरुपाधिकमित्यर्थ । तच सा ईश्वरी च सा तथा । अथवा,
लकुल स्थानविशेष स्वाधिष्ठान मणिपूरक वा, तस्येश्वरी,
विष्णुरुद्रात्मकेत्यथ, भूतसृष्टिश्रुतौ प्रथिव्या उदके तस्य
तेजमि तस्य परमात्मनि लग्नश्रवणात् । 'सदायतना सत्प्र
तिष्ठा' इति । तस्येश्वरी विभूतिविशेषो वा ॥ ॐ लकुले
श्वर्यै नमः ॥

लब्धमाना लब्धरसा लब्धसप्तसमुन्नति ।
ह्रींकारिणी च ह्रींकारी ह्रींमध्या ह्रींशिखामणि ॥

लब्धमाना । सर्वैः प्राणिभि लब्ध मान अध्यस्ताहका
र, आभमानात्मकस्तद्वद्दकार प्रकीर्त्यते' इति स्मरणात् ।
अध्यासेनाहकाराधिष्ठानेत्यथ । अथवा, 'मान पूजायाम्' इति
स्मरणात् चैवैः प्राणिभि विद्यैश्वर्यकुलसौदयातिशयादि
वशात् पूजा लभ्यते सुखहेतु सा तदन्तर्यामिणा पूर्वमेव
लब्धा, पूजादिजन्योपकारस्य सुखादे स्वखरूपतया लब्ध-

त्वात् । यद्वा मान परिमाण अणुमहीघहस्वभेदेन प्रसि
द्ध । ‘म वा एष महानज आत्मा महान प्रभुर्वै पुरुष’
‘अणेदपीयान् महता महीयान्’ इत्यादिवेदवाक्यैर्जलसूर्या
दिवदुपाधिधर्माणामुण्डिते गजस्तम्भमत्कुणसर्पादौ प्रतीयमा
नत्वात्, लब्ध मान परिमाण उपहिततया जगत यथा
सा तथा ॥ ॐ लब्धमानायै नम ॥

लब्धरसा । ‘रसो वै स’ इति श्रुते रसवत् रसते
सबध्यत इति अस्यन्तप्रीतिविषय आनन्द, स स्वस्वरूप
त्वन लब्धो यथा सा तथा । शृङ्गारग्सो वा, तद्यज्ञकम
झलाभरणपुण्यालकारवत्त्वादिति भाव । शुद्धसत्त्वप्रधान-
मायोपाधिकतया, ‘रसा स्त्रिग्धा स्थिरा हृद्या आहारा
सात्त्विकप्रिया’ इति गीतावचनात् नैवेद्यादौ कट्वाम्ललव
णादीना देवादिविषये निषेधाच्च प्रीतिविषयत्वेन मधुररसो
लब्धो यथेति वा तथा ॥ ॐ लब्धरसायै नम ॥

लब्धसप्तसमुन्नति । लब्धा स्वस्वरूपतया स्वत सि
द्धा या सपद सत्यकामत्वादय सञ्चिदानन्दादयो वा
ताभि समुन्नति सर्वोत्कृष्टता यस्या सेति तथा । ब्रह्मण
मायामात्रापाधिना अभिव्यज्यमाना गुणा कर्मानुद्भूतत्वा

दनाकस्मिका सन्त सर्वोक्तुष्टभाव ब्रह्मण ज्ञापयन्ति ।
 ‘तमीश्वराणा परम महेश्वर त देवताना परम च दैवत ।
 पर्ति पतीना परम पुरस्ताद्विदाम देव भुवनेशमीढ्यम्’
 ‘सत्यकाम सत्यसकल्प ॥ एष सर्वेश्वर एष सर्वज्ञ एषो
 उन्तर्याम्येष योनि सर्वस्य ॥ इति ‘गतिर्भर्ता प्रभु साक्षी’
 इत्यादिश्रुतिस्मृतिशतेभ्य ‘एष नित्यो महिमा ब्राह्मणस्य’
 इति प्रसिद्धनित्योत्कर्षवत्त्वं ब्रह्मस्वरूपमेवेति नात्र विचारणीय
 किंचिदस्तीत्यभिप्राय ॥ ॐ लब्धसप्तसप्तमुञ्चत्यै नमः ॥

ह्रींकारिणी । ह्रींकार द्वितीयखण्डसमाप्त्यवयवतया वा
 च्यवाचकसबन्धन अस्था अस्तीति तथा ॥ ॐ ह्रींका
 रिण्यै नम ॥

ह्रींकाराद्या । अत्र ह्रींकारशब्देन तत्कार्यभूता वेदा ,
 तेषामप्यर्थतया कारणतया वा आद्या आदौ भवा पूर्वभा
 वीत्यर्थ । शब्दस्य अर्थविषयत्वेन प्रवृत्ते शक्तिप्रहादौ
 काव्यादिकृतौ च अर्थज्ञानपूर्वकज्ञावद्वयोगदर्शनादर्थस्य पूर्व
 भावित्वमुक्तमिति भाव ॥ ॐ ह्रींकाराद्यायै नमः ॥

ह्रींमध्या । अस्य बीजस्य जगदभिननिमित्तोपादानभूत
 मायाविशिष्टचैतन्यवाचकतया तत्प्रतीकत्वेन तन्निष्ठयावदुण
 वत्त्वं तदुपासनातिशयमहिमाभिव्यज्यते । अन्यथा मन्त्रपुर

अर्थात्स्त्रिषुसिद्धयभावप्रसङ्ग स्यात् । अव्यवहितपूर्वनाम्नान-
भिव्यक्तस्वरूपस्यापि शब्दजालस्य एतद्वीजमात्रात्मनैवाङ्गु-
रितबीजार्थवत्तया पूर्वभावित्वमुक्तम् । इदानीमभिव्यक्ता
त्मकस्वार्थकतया विवरत्वादमाश्रित्य वाचारम्भणाकारेण ना
मरूपद्वयवत्त्वमुच्यते । हींकारबीजार्थं तेन शब्देन लक्ष्यते ।
मध्ये व्यवहारकाले हीं यस्या सा तथा । घटादिषु वस्तुषु
सच्चिदानन्दप्रतीत्या व्यवहारकालेऽपि प्रपञ्चकारण ब्रह्मानु-
स्यूततया भासमान जगत्कारणमिति सिद्धान्त । अनेनाचे-
तनपरिणामारम्भादिवादा निष्प्रमाणतया युक्त्याद्याभासक
त्वेन निरस्ता वेदितव्या ॥ ॐ हींमध्यायै नम ॥

हींशिखामणि । लाके यथा चूडामणि सर्वाङ्गरचिता
भरणापक्षया तद्विजातीयप्रकाशसत्त्वाश्रयवान् उत्तमाङ्ग-
स्यानविशेषे स्थापित महदैश्वर्यादि तद्वत् पुरुषस्य ज्ञाप
यति, तथा सर्वशब्दजालतद्वाच्यार्थभूतचिज्जडसबन्धरूप-
प्रपञ्चवाचकातिसूक्ष्महींवर्णात्मकश्रीविद्याराजबीजस्य सत्य
ज्ञानानन्दात्मकलक्ष्यार्थभूता सती हींबीजजापकाना सर्वार्थं
प्रदानेन पारमैश्वर्यं व्यञ्जयतीति गुणयोगकृतनामेवम् ।
तथा च हींम शिखामणि परमतात्पर्येण ज्ञापयतीत्यर्थ ॥
ॐ हींशिखामणये नम ॥

हींकारकुण्डाग्निशिखा हींकारशिचन्द्रिका ।
हींकारभास्करश्चिह्नीकाराम्बोदचश्चला ॥

हींकारकुण्डाग्निशिखा । हींकार एव कुण्ड वाच्यवाच
कसबन्धेन परब्रह्मावच्छेदकतया आहवनीयादिसद्वशम् , त
स्याग्निशिखा, ‘उहीप्रेऽग्ने जुहोति’—इति प्रमाणेन ‘आ
हवनीये जुहोति’—इति विधिवाक्यावगतहोमाधारताया
केवलाहवनीयस्यायोग्यतया साग्निज्वालय होमाधारताया
ज्ञायमानायामदृष्ट्वारा स्वर्गसबन्धेन स्वार्थकतया तज्ज्ञा
पक्वेदवाक्यस्यापि पुरुषार्थसबन्धित्वमाहवनीयनिष्ठहोमा
विकरणीप्राग्निज्वालास्वाधारभूतकुण्डसार्थक्यसपादकेवाभा
ति । तथा स्ववाचकवीजस्यापि ‘मन्त्रैहपासीत’ इति वि
धिगतदेवतोपामनकरणाना मन्त्राणामपि स्ववाचकतया सा
र्थक्यसपादनात्तथोच्यते ॥ ॐ हींकारकुण्डाग्निशिखायै
नम ॥

हींकारशिचन्द्रिका । हींकार एव शशी चन्द्र तस्य
स्वरूपाभेदभूतप्रकाशचैतन्य चन्द्रिकापदेनोपर्यायते । यथा
चन्द्रस्वरूपभूतामृतप्रसारभूता ज्योतिः । देवादिसर्वलोकाना
सजीवकतयोपकरोति, तथा दृढतरभक्तिपरवशपुरुषधौरेया

दीना ह्रींकारवाच्यार्थतया तदभिन्नत्वेऽपि जगद्विवर्तकारण
तया सच्चिदानन्दाधायकत्वेन सजीवयतीति भाव ॥ ॐ
ह्रींकारशशिचन्द्रिकायै नम ॥

ह्रींकारभास्कररुचि । भास कान्ती करोति प्रसारयति
लाकोपकारायेति तथा सूर्य , तस्य रुचि प्रचण्डभासु ।
यथा लाके सूर्य वर्षान्वतिगाढतरस्तवदुदकधारासव्याप्तिदि
गन्तरासु दिवा विद्यमानोऽपि सूर्य साक्षादयमिति चाक्षुष
ज्ञानगाचरो न भवति, तदभावे शिष्टाना भोजनादिसजीव
कठयवहाराभावन तदुपायासिद्धयाप्रसन्नमनासि भवन्ति,
तथा ज्ञानमार्गानधिकारिणा मोक्षमार्गोपायभूताविदितदेवता
रूपह्रींकाराणा जनाना बहुतरपुण्यमहिन्ना महावातनेव मेघा
बलौ दूरीकृतया चण्डभासुरिव सुखसाधन गुरुकृपापाङ्गाव
लोकनरूपदीक्षावशेन प्रतिबन्धकदुरितापगमे परदेवतारूप
ह्रींकार पुरश्चर्यया साक्षाद्वाच्यार्थपरोक्षज्ञानहेतुर्भवति ।
चिरकालनैरन्तर्यभावनाप्रकर्षेण तस्मिन्नभिसुखे मति तल्ल
क्षयार्थरूपपरमानन्दचित्कला स्वयमेवाभिव्यक्ता सत्यानन्दा
तुभवास्तेन सुखयतीति तथोच्यते ॥ ॐ ह्रींकारभास्कर
रुचये नमः ॥

ह्रींकाराम्भोद्यच्छला । अस्मासि अमृतानि ददृतीत्य

स्मादा , हींकारोऽपि कामवर्षत्वन तैरुपमीयत । तेषु च च्च
ला विशुल्लता विद्यमाना तदभिन्नप्रकाशमाना सती वर्णोद
कद्वारा सस्याद्युत्पादकत्व यथा व्यदन्ति तथा हींकारवाच्य
तया तदभिन्नापि तत्स्वरूपविचारणाया शुद्धलक्ष्यार्थस्वरूपा
सत्यपि अनिर्वचनीयस्ववाच्यकमन्त्रप्रकाशितदेवतात्वेन स्वा
भीष्टपुरुषार्थप्राप्तिहेतुभूतेत्यभिसधि ॥ ॐ हींकाराम्भोद
चश्चलायै नम ॥

हींकारकन्दाङ्कुरिका हींकारैकपरायणा ।
हींकारदीर्घिकाहसी हींकारोद्यानकेकिनी ॥

हींकारकन्दाङ्कुरिका । हींकार एव कन्दम् दृढतरबीज
भाव तस्य अङ्कुरिका आदिप्रसव नूतनाभिव्यक्तिरित्यर्थ ।
यथा लोके अङ्कुरादिक रुन्दादिनिष्ठोत्पादकशक्तिमनभिभू
यैव स्वय स्कन्धशाखापत्रपुष्पफलाद्यात्मना यथा विवर्तमा-
न तत्सामर्थ्यप्रकटनकारण भवति, तथा हींकारम्य वेदैकदे-
शत्वेन इतरप्रमाणानपेक्षतया स्ववाच्यार्थज्ञापनन स्वत प्रा-
माण्ये स्थितऽपि तज्जन्यज्ञानविषयतावच्छेदकधमरूपनाना
प्रकारजगत्परिणामहेतुत्वसाधकाधिटितघटनापटीयसीमायोपा-
धिकत्वेन तदर्थद्वयरूपा सती तन्मात्रप्रमाणवेद्येर्थ ॥ ॐ

ह्रींकारकन्दाङ्करिकायै नम ॥

ह्रींकारैकपरायणा । ह्रींकार एव एक अनितरसाधारण चतुर्विधपुरुषार्थसाधकतया परम् अयन ज्ञापक प्रमाण यस्य सा तथा । अस्य बीजस्य वाच्यार्थो माया, सा निरचिष्ठाना न सिध्यतीति तदाश्रयत्वविषयत्वाभ्या तद्रहित तेन ज्ञाप्यत इति भाव ॥ ॐ ह्रींकारैकपरायणायै नम ॥

ह्रींकारदीर्घिकाहसी । ह्रींकार एव दीर्घिका राजोद्यान वनक्रीडावापी । ससारकाननसचारिलोकविश्रान्तिकारण त्वेन ह्रींकार तयोपमीयते, ‘आराममस्य पश्यन्ति न त पश्यति कश्चन’ इति श्रुते । आ समन्ताद्रमत्यस्मिन इत्या राम अथवा जगत् । तत्रोपासनादिना परमानन्दप्रापकतया वा ह्रींकार उपमीयते । तस्मिन हसी श्वीहस । यथा लोके सारासारविवेकिहस्या आधारसुवर्णकमलादिमती वापि का महाराजसबनिधनी विज्ञाप्यते, तद्वद्वान्यार्थरूपतया प्रकाशमाना सती स्वसबनिधवीजस्य सुखोत्पादकत्वमोक्षहेतुत्वयोत्यतीत्यभिप्राय ॥ ॐ ह्रींकारदीर्घिकाहस्यै नम ॥

ह्रींकाराद्यानकेकिनी । ह्रींकार एव उद्यानवत् फलानुभावकत्वात् तथोन्यते तस्य केकिनी मयूरी । यथा लोके

बहुषु पक्षिषु आरण्यकेषु सत्स्वपि तस्या रूपध्वनिभ्या
सुखतया दर्शनश्रवणादिजन्यप्रमोदसाधकतया उद्यानालक
रिष्णुत्वम्, तथा ह्रींकाररूपदेवताध्वने सचिदानन्दरूपत
द्वाच्यार्थस्य च परमपुरुषार्थसाधकत्वेन अविशिष्टत्वेऽपि ब्र
ह्मविष्णुरुद्रादिमूर्तिषु उद्यानतरुवल्लिकक्षगुल्मादिवदुत्तमनीच
देवतिर्थङ्गमनुष्यादिषु च मयूरीव स्वेच्छया सर्वब्यापकत्वेन
तदात्मरूपतया शरीरनिद्रयप्राणाद्याधारपरमप्रेमास्पदपरमा
नन्दरूपप्रत्यग्नोचराहवृत्तिव्याप्यतयैतद्वीजप्रकाशया भवती
त्वर्थ ॥ ॐ ह्रींकारोद्यानकेकिन्यै नमः ॥

ह्रींकारारण्यहरिणी ह्रींकारावालवल्लरी ।

ह्रींकारपञ्चरशुकी ह्रींकाराङ्गणदीपिका ॥

ह्रींकारारण्यहरिणी । ह्रींकारवाच्यार्थैकदेशभूतमायावि
द्यातत्कार्याणा बन्धरूपतया गहने व्याघ्रादीनामिव भयहे
तूना सद्ग्रावेन दुष्प्रवेशत्वरूपर्धर्मसाम्येन ह्रींकारस्य अरण्यो
पमितत्वम् । तथा च अरण्यमिव ह्रींकार इति सर्वत्रोपमा
नोत्तरपदसमाप्त । तत्रैव सति यथारण्यगतपुरुषस्य शीघ्र
हृष्टिपथ गता हरिणी एणी व्याघ्राद्यभावनिश्चयेन तदधिगम
फलप्राप्तिसाधनतामवगमयति धीरपुरुषस्य, तथा निरन्तरभ

क्षिभजनपरप्राणिलोकस्य उपासनापरिपाकमहिन्ना अपरोक्षी-
कृताङ्गाननिष्टिपूर्वक भयापकरणेनानन्द प्रापयतीति तयो
पमितेति भाव । ‘तमेव विदित्वातिमृत्युमेति’ इति श्रुत ॥
ॐ ह्रींकारारण्यहरिण्यै नम ॥

ह्रींकारावालवल्लरी । ह्रींकारमन्त्रवाचकतानिरूपितवा
च्यतानामकसबन्धावच्छिन्नपरदेवतास्वरूपत्वन् तदुपासना
विषयफलदानसमर्था सती आवालमात्रप्ररोहद्विवृद्धवल्लर्यो
पर्मायते । तथा च तत्सबन्धितया ह्रींकार जपादिना आ
वाल इव सर्वदा सरक्षणीय इति तात्पर्यर्थं परिनिष्पन्न
इति यावत् ॥ ॐ ह्रींकारावालवल्लर्यै नम ॥

ह्रींकारपञ्चरशुकी । मन्दाधिकारिणामप्युपासनाकारण
साधारणपार्वतीप्रतीकतया ह्रींकारस्य बालकादिलालनविषय
त्वधर्मपुरस्कारण पञ्चरोपमा । तथा च तत्तददृष्टानुसारेण फ-
लदात्री सती तयोपमितेति द्रष्टव्यम् । ह्रींकार पञ्चरमिव
स्य शुकी तत्सार्थक्यकारिणीत्यभिप्राय ॥ ॐ ह्रींकारप
ञ्चरशुक्यै नमः ॥

ह्रींकाराङ्गणदीपिका । अङ्गणवत् सर्वसाधारणविश्रान्ति
स्थानतया ह्रींकारस्य तदुपमा तस्य दीपिका । यथाङ्गणारो

पितरीप वाक्याभ्यन्तरवस्तुजात प्रकाशयन तत्रत्यलोकाना
मन्धकारादिनिवर्तनपूर्वकमभीष्टव्यवहारहेतुतया सर्वांन् श्ला
घयति स्वयमपि तै सरक्ष्यते, तथा ह्रींकारबीजार्थश्रवणम
नननिदिध्यासननिरन्तराभ्यासादपरोक्षीकृतस्वयमप्रकाशानन्द
रूपा सती स्वसेवकान् सर्वोत्कर्षयतीति तदुपमिता सती
तथोच्यते ॥ ॐ ह्रींकाराङ्गणदीपिकायै नम ॥

ह्रींकारकन्दरासिही ह्रींकाराम्भोजभृङ्गिका ।
ह्रींकारसुभनोमाध्वी ह्रींकारतरमञ्जरी ॥

ह्रींकारकन्दरासिही । पर्वतशिखाग्रवर्तिंगुहा कन्दरा द-
रीतर्थ । वेदमौलिपठितह्रींकारस्य ग्राम्यविषयलिप्सुप्राणि
प्रवेशयोग्यताविकलतया कन्दरापमा । तत्र यथा सिंही
स्वेतरक्षुद्रमृगप्रवेशभयहेतुसटादिस्वन्याप्यचिह्नानुमिता तस्या
स्वाश्रयमात्रता धीरस्य तत्परिसरनखनिर्धातमुक्ताफलादि
प्राप्ति च नयति, तथा मन्दभक्तिनदीबुमुक्षादिकलुषित-
परिच्छिन्नाभिमानदेवतान्तरप्रतिपादकबीजतया स्वदेवतैक
भाव कामितार्थं च प्राप्यतीति सिंहुपमिता सती तथो
न्यते ॥ ॐ ह्रींकारकन्दरासिहै नम ॥

ह्रींकाराम्भोजभृङ्गिका । ह्रींकारस्य अष्टैश्वर्यात्मकपुरुषा

र्थसाधकनानाशक्तिमत्तया नानाप्रकारवर्णान्तरघटितत्वेन प-
रागपरिमलादिमत्कमलोपमितत्वमिति याजनीयम् । कमले
यथा मधुमात्रसारग्राहिणी भृङ्गी रमते सर्वपुष्परसमधुपा-
नस्त्राभाव्येन सर्वसमापि मध्वाधिक्यविविदिषया प्रभूतम
धुवत्त्वेन च तस्मिन्नेव विशिष्ट्यासक्तिमती, तथा सर्वमन्त्र
बीजवाच्यदेवतात्मना सर्वानुगतापि ह्रीकारस्य विशिष्टगुण
वत्त्वेन सर्वोपादानसगुणब्रह्मप्रतिपादकतया तदीयस्वरूपत
टस्थलक्षणवत्त्वेन तदभिन्नस्वरूपतया सर्वशब्दजालप्रकृति-
त्वेन च रूढ्या लक्षणया वा तत्सबन्धिनी सती तदुपास
काना तदधिष्ठानतया च तैलक्ष्यत इति भृङ्गयुपमया च
र्णितेति तात्पर्यम् ॥ छैं ह्रीकाराम्भोजभृङ्गिकायै नम ॥

ह्रीकारसुमनोमाध्वी । ह्रीकारस्य वाङ्मुखतफलप्रदानसा-
धकतया सुमन साहश्यम । अथवा, पुष्पाणि व्यवहारममये
बहुसावधानतया व्यवहर्तव्यानि परममाद्वाधिकरणत्वेन बहु
मान्यत्वात्, तथा ह्रीकारोऽप्युपासनवेळाया परब्रह्मवाच्कत्वेन
प्रयत्नपूर्वकमेकाग्रमनसा देवताभिन्नत्वेन ध्यातव्य इति निय
मसपादनार्थं पुष्पोपममिति विभावनीयम् । तथा च वा-
चादिना शुष्काणि पुष्पाणि निमधुत्त्वेन फलान्यजनयित्वा
परिपतन्ति फलजनकशक्तेरभावेन, तदितराणि तु तद्वत्त्वेन

तज्जनकानि लोके दृष्टानि , पुष्परसश्च पृथिवीकारणभूतादक
तन्मात्रस्वरूपमधुररसात्मकत्वात् पुष्पाणा फलजनकशक्तिज्ञा
पको भवति , तथा ह्रींकारस्यापि सर्वजनकताशक्याधायकत
दधिष्ठानसच्चिदानन्दपरब्रह्मस्वरूपा सती तन्मन्त्रप्राप्त्या
यथोक्तफलहेतुतया तदर्थरूपेण तद्वृत्तिर्भवतीति माध्वीसमा-
नधर्मवस्त्वमस्या उपपद्यत इति विवेचनीयमिति यावत् ॥
ॐ ह्रींकारसुमनोमाभ्यै नम ॥

ह्रींकारतरुमञ्जरी । फलार्थिन स्वारूढजनान् पतनादि
भ्य प्रतिबन्धकेभ्यस्तारयति पार प्रापयति फललाभेन स
तोषयतीति तरु । ह्रींकारस्य कल्पादितरुदृष्टान्तीकृत ।
प्रेक्षावता सवादिप्रवृत्तिजनकत्वेन शास्त्रोपशास्त्राग्रगता पुष्प
मञ्जरी फलकारणयोगयता ज्ञापयतीव पुरुषार्थार्थिना अस्त
शयप्रवर्तकत्वेन प्रत्यक्ष्वरूपा सती गुरुरूपदिष्टमन्त्रदेवतात्म
कतया मन्त्रोपासनायामभिमुखीकरणेन पुरुषार्थान् प्राप
यतीति मञ्जरीसादृश्य प्राप्त एवेवताया इति विवेचनी
यम् ॥ ॐ ह्रींकारतरुमञ्जर्यै नम ॥

सकारारूप्या भमरसा सकलागमसस्तुता ।

सर्ववेदान्ततात्पर्यभूमि. सदसदाश्रया ॥

सकारारूप्या । सकारयुक्ता श्रीविद्यानामिका आरूप्या

वाचकशब्द यस्या सा तथा ॥ ॐ सकाराख्यायै नम ॥

समरसा । सम एक रस मधुरादिरसवद्वुडपिण्डादा
वेकरूपेण कार्ये व्यवस्थितेत्यर्थ । अथवा, ससारदशाया
सर्वज्ञत्वकिंचिज्ञत्वादिविशेषणभेदेन भिन्नरसवत् भिन्नस्त्वा
ववत् प्रतीयमानयोरीश्वरजीवियोर्वेदान्तश्रवणादिना जन्या-
खण्डाकारवृत्तिव्याप्त्या अह ब्रह्मास्मि— इत्यभेदानुभवदशा-
यामेकरूपतया साक्षात्कियते इति सा तथोन्यते, ‘रसो वै
स’ इति श्रुते, रसशब्दार्थं परब्रह्म सम अभिन्न यस्या
सा तथा । तैत्तिरीयोपनिषत्प्रतिपाद्येत्यर्थ ॥ ॐ समरसायै
नम ॥

सकलागमसस्तुता । आ समन्तात् गमयन्तीति आगमा ,
सकलपदार्थगोचरसविकल्पकप्रमाजनकवेदा इत्यर्थ । सकलै
रन्यूनानतिरेकेणेतिहासपुराणसहितयावदङ्गोपाङ्गरहस्यादियो
गित्व सकलशब्दार्थ । तै सस्तुता सम्यक् नात पर किवि
दस्तीति निश्चयपूर्वक स्तुता गुणिनिष्ठगुणाभिधानविषयतया
तदुपजीवकेत्यर्थ । सर्वार्थप्रकाशकवेदाना सर्वज्ञत्वेनैदृपर्येण
तदीयस्तुतिविषयतया शुद्धचैतन्यात्मकतया मोक्षकारणीभू
तज्ञानस्वरूपत्वेन जिज्ञास्येति ध्वनितोऽर्थ ॥ ॐ सकला
गमसस्तुतायै नम ॥

सर्ववेदान्ततात्पर्यभूमि । वेदानामन्त अवसान तत्त्वम् स्यादिमहावाक्यानि, तेषा तात्पर्यं समन्वयं सामानाधिकं रण्यमित्यर्थं । तस्य भूमि विषयं ज्ञाप्यमिति यावत् । ‘उपक्रमापसहारावभ्यासाऽपूर्वता फलम् । अर्थवादोपपत्ती च लिङ्गं तात्पर्यनिर्णये’ इति वचनोक्ततात्पर्यनिर्णयक्रमाणबलेनातीनिन्द्रियधर्मादिगोचरवाक्यवत् सर्वेषा वेदान्तानामुपासनाङ्गानविधिं विनाकर्मशेषतया अङ्गातङ्गापकत्वेन शसनादेव शास्त्रशब्दवाक्यानामद्वैते ब्रह्मणि गतिसामान्येन कर्मपासनाकाण्डद्वयार्थोपकार्यत्वेन मोक्षदेतुङ्गानजनकत्वेन पर्यवसानमिति तात्पर्यविषयता अखण्डवैतन्यस्येति सि द्धान्तार्थं इत्यभिसधि । ‘सामानाधिकरण्यं च विशेषणं विशेष्यता । लक्ष्यलक्षणभावश्च पदार्थप्रत्यगात्मनाम्’ इति न्यायेन सबन्धन्वयेण अखण्डार्थं वेदान्ता बोधयन्तीति ‘ततु समन्वयात्’ इत्यधिकरणे प्रतिष्ठापितमित्यलमतिविस्तरेण ॥ ३५ सर्ववेदान्ततात्पर्यभूमये नमः ॥

सदसदाश्रया । अपरोक्षतया सञ्चिति प्रतीतिविषयतया व्यवह्रियमाण सत्कार्यं रूपादिवत्तया व्यावहारिकसत्ताश्रयं पृथिव्यमेजोभूतत्रयं सदित्युच्यते । असत् सद्विज्ञतया परो क्षुङ्गानरोचर वाय्वाकाशादि तत्कार्यं च रूपादिभिन्नगुणाश्र

यमुच्यते इतर्थं । तथोराश्रया उपादानत्वेन तदधिष्ठानभूते
त्वर्थं । आरोपितस्याधिष्ठानमत्तातिरिक्तसत्ताशून्यतया सत्ता
स्फूर्तिं प्रदत्त्वेन सर्वदा तदनुस्यूतेति ध्येयम् ॥ ॐ सदसदा
श्रयायै नमः ॥

सकला सच्चिदानन्दा साध्या सद्गतिदायिनी ।
सनकादिसुनिध्येया सदाशिवकुदुम्बिनी ॥

सकला । आरोपितकलाभि उपासनार्थं कल्पिताभि
जाबालिना सत्यकाम प्रत्युक्तषोडशकलायुक्तपुरुषोपासनप्रति
पादकच्छान्दोग्यवचनरीत्या कलाशज्जितावयवै सह वर्तते
इति सा तथा । चतु षष्ठिचन्द्रकलाभ्या वा सहिता ।
अथवा, कलाशब्द सुखादिकान्तिवचन तया सहितेति
वा ॥ ॐ सकलायै नमः ॥

सच्चिदानन्दा । सच्चासौ चिह्नं सच्चित् सच्चिद्वासौ आन-
न्दश्च, कालत्रयाबाध्यत्वं सत्त्वम्, स्वेतरप्रकाशाप्रकाश्यत्वं
चित्त्वम्, परमप्रेमास्पदत्वमानन्दत्वम्, ‘सत्य ज्ञानमनन्तम्’
‘विज्ञानमानन्दम्’ ‘सदेव सोम्येदमग्र आसीत्’ ‘प्रज्ञा
प्रतिष्ठा प्रज्ञान ब्रह्म’ ‘आनन्दो ब्रह्मेति व्यजानात्’ ‘आ
नन्द ब्रह्मणो विद्वाभ्य विमेति कुतश्चन’ इत्यादिश्रुतिभ्य ।

ते स्वरूप यस्या सा तथोक्ता । वेदान्तशास्त्रोक्तब्रह्मस्वरूप
लक्षणलक्षितेत्यर्थ ॥ ॐ सच्चिदानन्दायै नमः ॥

साध्या । कर्मोपासनादिभि महावाक्यश्रवणजन्यब्रह्म
विद्यात्वेन साधनचतुष्टयसपञ्चाधिकारिणा अपरोक्षतया
साधितु प्राप्नुमहा, फलस्वरूपत्वादित्यर्थ । साध्वीति वा
पाठ साधो छी, सत्त्वगुणसपञ्चत्वात् साधु, सकल-
विद्यापारगते सति सदाचारसपञ्च दैवीसपत्तिमानित्य
थ । तदेकनिष्ठा परमपतिव्रता सती छीणा पातिब्रत्यसप्रदा
यग्रवर्तकेति यावत् ॥ ॐ साध्यायै नमः ॥

सद्गुतिदायिनी । समीचीना पुनरावृत्तिरहिता सुखमात्र
रूपा गति, गम्यते ज्ञायते प्राप्यते इति वा गति । यत्
ज्ञायते तदेव गति, तदन्यस्याङ्गातत्वात् गतित्वानुपपत्ते ।
ज्ञाते फले इच्छया तत्साधनेषु पुरुष प्रवर्तते, न त्व
ज्ञातफलसाधने— इत्यन्यथव्यतिरेकाभ्याम्, ‘ब्रह्मविदाप्नाति
परम’ ‘ब्रह्म वेद ब्रह्मैव भवति’ ‘ये पूर्व देवा ऋषयश्च
तद्विदु ते तन्मया अमृता वै बभूतु’ इत्यादिश्रुत्या च
परदेवतास्वरूपमेव मुक्तिस्वरूपतया सद्गति । उदावार-
काङ्गानाभिभवेन स्वरूपानन्दभिव्यक्त्यतीति दायिनी ।
अभेदेऽपि गतिदानयो कर्मकर्तुंप्रयाग उपपद्यते । ‘तदा

त्मानश्च स्वयमकुरुत' इत्यात्मिवदित्यथ । सर्वो वा सत्त्वगुणयुक्ता देवयानादिगतिं वा ददातीति सा तथा ॥ ॐ सदृतिदायिन्यै नम ॥

सनकादिमुनिध्येया । मननशीला मुनय , मननशब्दनलक्षणया तत्साक्षात्कारवन्त इत्यथ , ब्रह्मण मानसिकपुत्राज्ञानवैराग्यादिबहुला मोक्षमागप्रवर्तका , सनक आदियेषा वा मुनय सनन्दनसनातनसनत्कुमारप्रमुखा निरैषणा निश्चिन्ता , तैर्धर्येया अत्यादरेण स्वात्माभदज्ञानन सर्वदा विषयीकृतेत्यर्थ , 'त्व वा अहमस्मि भगवो देवत अहैव त्वमसि' 'क्षत्रज्ञ चापि मा विद्धि' 'आत्मान चेद्विजानीयादहमस्मीति पूरुष' 'अथ योऽन्या देवतामुपास्त इन्याऽसावन्याऽहमस्मीति न स वद यथा पशु' 'मृत्यो स मृत्युमाप्राप्ति य इह नानेव पश्यति' इत्यादिश्रतिस्मृतिशतेभ्य ॥ ॐ सनकादिमुनिध्येयायै नम ॥

सदाशिवकुदुम्बिनी । सदाशिव कुदुम्बम अस्या अस्तीति तथा ॥ ॐ सदाशिवकुदुम्बिन्यै नम ॥

सकलाधिष्ठानरूपा सत्यरूपा समाकृति ।
सर्वप्रपञ्चनिर्मात्री समानाधिकवर्जिता ॥

सकलाधिष्ठानरूपा । ‘अथात आदेशो नेति नेति’
 ‘नेह नानास्ति किंचन’ इत्यादिनिषेधश्रुतिभ्य प्रतिपदा ।
 ‘सर्वं खस्त्वद ब्रह्म’ इत्यादिबाधाया सामानाधिकरण्य
 मवगम्यते । कार्यम्य कारणाभेदज्ञान बाधा । तद्विनाशता
 ज्ञानस्थ भ्रमरूपत्वात् । तथा च श्रुतिनिषेधस्यावध्यपेक्षाया
 प्रकृत्यादीनामपि तत्त्वज्ञानेन निवृत्तौ भूतपूर्वगत्या सर्वाधि
 ष्ठानत्वेन अनुभूयते इति भाव ॥ ३५ सकलाधिष्ठान-
 रूपायै नम ॥

सत्यरूपा । सत्य जडानृतपरिच्छिशब्द्यावृत्तत्व सञ्चिदान-
 न्दरूप यस्या सा तथा । परिणागवादमाश्रित्य सत् अपरोक्ष-
 ज्ञानयोग्यानि पृथिव्यप्तेजासि, त्यन्तु परोक्षज्ञानविषया नि
 ल्यानुमेया इत्यर्थ, ‘सत्य लक्ष्याभवत्’ इति श्रुते । सत्य
 रूप यस्या सा तथा ॥ ३५ सत्यरूपायै नमः ॥

समाकृति । समा अभिज्ञा सञ्चिदानन्दरूपैकरसा आ
 कृति मूर्ति स्वरूप यस्या सा तथोक्ता । समा अन्यूना
 नतिरिक्ता यथाशास्त्रप्रमाण मूर्तिर्विग्रहो यस्या सेति वा ।
 समा सदाशिवेन गुणसौन्दर्यबलवीर्ययशोगाम्भीर्यैर्येङ्गि-
 तादिपरिज्ञानसर्वज्ञत्वादिवहुलधर्मविशेषे मूर्तिर्यस्या सेति
 वा । चतुर्विधभूतप्रामेषु तत्त्वारब्धानुसारेण समा

तत्र तत्र निवासयाग्या मूर्तिर्यस्या मति वा । कर्माध्यक्ष
तया तत्त्वफलविशेषदानेषु समा पक्षपातरहिता मूर्तिर्यस्या
सा । समा बाल्यस्थविरत्वादिभावविकारवर्जिता एक
प्रकारा नित्ययौवनशालिनी मूर्तिर्यस्या सा । ‘सम सर्वेषु
भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम’ अङ्गुष्ठमात्रं पुरुषोऽन्तरात्मा
सदा जनाना हदये मनिविष्ट । इति स्मृतिश्रुतिभ्यामे-
करूपत्वावगमादित्याशय ॥ ॐ समाकृतये नम ॥

सर्वप्रपञ्चनिर्मात्री । ससारस्यानादितया माक्षस्थायित्वन-
च भूतभविष्यद्वर्तमानगत्या सर्वशब्दवाच्यत्वं प्रपञ्चम् , प्रप
ञ्चयते विस्तार्यते विवर्तते इति प्रपञ्च , ‘एक बीज बहुधा
य करोति’ इति श्रुते । तस्य निर्माणी निर्माणमभिव्यक्ति
तत्रिमित्ततया तत्त्वर्त्त्वमुपचर्यते, ददृश्यते पचतीतिवत ॥
ॐ सर्वप्रपञ्चनिर्मात्रै नम ॥

समानाधिकवर्जिता । कुलशीलजातिगुणादिभि तुल्य
समान , तै श्रेयानाधिक , तैर्वर्जिता । ‘न तस्य प्रति-
मास्ति’ ‘विश्वाधिको रुद्रो महार्षि’ इति श्रुते , ‘सर्वाधि
पत्य कुरुते महात्मा’ इति ‘एकमेवाद्वितीयम्’ ‘न वत्स
मोऽस्यम्यधिक कुतोऽन्यो लोकत्रये’ इत्यादिश्रुतिस्मृति-
भ्या चेति भाव । एतदृष्ट्या समाननीय समानं पूजनी

योऽधिक तद्येन वर्जिता । ‘एकमेवाद्वितीय ब्रह्म’ इत्यादि-
श्रुतेरिति वार्थ ॥ ॐ समानाधिकवर्जितायै नमः ॥

**सर्वोच्चुङ्गा सगहीना सगुणा सकलेश्वरी ।
ककारिणी काव्यलोला कामेश्वरमनोहरा ॥**

सर्वोच्चुङ्गा । कार्यपेक्षया कारणस्याधिकत्वात् सर्वा
पेक्षया उच्चुङ्गा उन्नता, ‘पादोऽस्य विश्वा भूतानि । त्रिपा
दस्यामृत दिवि’ इति श्रुते ॥ ॐ सर्वोच्चुङ्गायै नमः ॥

सगहीना । निरवयवत्वेन निष्कारणत्वेन वा निर्गुणत्वेन
वा निराश्रयत्वेन वा निष्यशुद्धबुद्धमुक्तखूपत्वेन सबन्धर
हिता वा, ‘असगो न हि सज्जते’ ‘न चास्य कञ्चिज्जनिता
न चाधिप’ इत्यादिश्रुतेरित्याशय ॥ ॐ सगहीनायै
नम ॥

सगुणा । समा एकप्रकारा गुणा सत्यकामत्वादय य
स्या सा तथा । ‘गुणी सर्वविद्य’ ‘सत्यकाम सत्यसक-
ल्प’ इत्यादिश्रुते । हिमूर्तिस्वरूपतया सत्त्वरजस्तमोगुणै
सह वर्तते इति वा तथा ॥ ॐ सगुणायै नमः ॥

सकलेषुदा । इच्छाविषयभूतानि इष्टानि काम्यानीत्य-
र्थ , सकलानि च तानीलभेदसमाप्त , अन्यथा जीवादि-

वत् कस्मिंश्चिद्विषये असामर्थ्यशङ्का स्यात् । एकस्य पदार्थस्य
बहूनामिच्छाविषयत्वदर्शनात्, एकत्र कामनायामपि तत्स-
हभावित्वेन सर्वप्रापकत्वोक्तौ परदेवताया बहुफलप्रदातृत्वेन
अत्यन्तविश्वसनीयतया अतिशयप्रतिभानाव्यतेर्थ । अथवा,
परिच्छिन्नपरिमितभाग्यवत्प्राणिन् सर्वस्य सर्वत्र इच्छाया
मपि, यानि सर्वाणि स्वबुद्धया शास्त्राविरोधेनेष्टानि पषित-
व्यानि वाच्छ्रुतव्यानि, तान्येव प्रयच्छति ददाति, न तद
धिकानि, लोकेच्छाया बहुप्रकारत्वेन दुष्पूरणीयत्वादिति
भाव । सर्वेषां प्राणिनामिष्ठन्ना इज्यया पूजया विषयीकृता,
यज्ञेन वा समाराधिता तस्य फलप्रदेत्यर्थ । ‘अहं च स
र्वयज्ञाना भोक्ता च प्रसुरेव च’ ‘एष ह्य साधु कर्म का
रयति यमेभ्यो लोकेभ्य उत्तिनीषति’ इति स्मृतिश्रुतिभ्या
परमेश्वरार्पणबुद्धया क्रियमाणस्यैव कर्मण शुभफलत्वात्
मुक्तिहेतुत्वेन, काम्यफलार्थिना जन्ममरणादिवन्धकत्वेन स्व-
ल्पफलतया अनादरणीयत्वादित्यर्थ । अथवा, कलाभि अ-
वयवै तरतमभावैरित्यर्थ । तै सहितानि इष्टानि फ-
लानि मनुष्यानन्दादिव्रह्मानन्दपर्यन्तानि फलानि आनन्द
स्वरूपाणि ददातीति तथा ॥ ३५ सकलेष्टदायै नम ॥

ककारिणी । तृतीयखण्डद्वितीयवर्णरूप ककारावयव

वाचक अस्या अस्तीति तथा । ॐ ककारिणै नमः ॥

काव्यलोला । वाल्मीकिवेदव्यासादिकृतेषु काव्येषु लोला, वाक्यलक्ष्यार्थभेदेन तत्त्वं सबद्भेद्यर्थ । अथवा, कवि भि कृतेषु स्तुतिविशेषेषु प्रातिमतीत्यर्थ ॥ ॐ काव्यलोलायै नमः ॥

कामेश्वरमनोहरा । कामेश्वरस्य मन हरतीति तथा ।
ॐ कामेश्वरमनोहरायै नम ॥

कामेश्वरप्राणनाडी कामेश्वोत्सङ्गवासिनी ।
कामेश्वरालिङ्गिनाडी कामेश्वरसुखप्रदा ॥

कामेश्वरप्राणनाडी । कामेश्वरस्य प्राणनाडी यथा नाड्या प्राण सच्चरति सा तथा, जीवनाडीत्यर्थ । ‘इडया तु बहि र्याति’ इति लयखण्डवचनात् । लोके विशम्यमाने पशौ हृदय पुण्डरीकाकार मासखण्डात्मकान्त सुषिराष्ट्रदलोपेतमङ्कुष्ठपरिमाणसुषिरयुताधाभागकर्णिकामध्य नश्यते, तस्या कर्णिकाया कसरायमाना एकशत नाडीनामङ्कुरा तद्वेष्टनपुरीतन्नाम कनाडीसुषिरविन्यस्तमूला भवन्ति । तत्र सुषुग्नानामकनाडीमूलाधारादारभ्य ब्रह्मार धर्पर्यन्त गता । तस्या षट् चक्राणि मूलाधारादीनि तत्त्वन्मातृकावर्णसहितयोगशास्त्रोक्तदलसयु

तानि सनद्वानि वर्तन्त । तस्या मूल पृष्ठीदेवता विसतन्तुत
नीयसी कुण्डलिन्यधोमुखावरणशक्तिर्निद्राति । तस्या दक्षिण-
भागे इलानामनाडी भ्रूमध्यपर्यन्तं प्रसृता । वामे
पिङ्गला तथा । तथा च जाग्रदवस्थाया नेत्रयो दपल्यात्मना
श्रुतिप्रतिपादित , स्वप्ने मनउपाधिक , सुषुप्तावज्ञानोपाधि-
क , जाग्रति स्थूलशरीराभिमानी विश्व इत्युच्यत , स्वप्ने सू-
क्ष्माभिमानी तैजस , सुषुप्तौ कारणाभिमानी प्राङ्ग । सुषु-
प्तौ कारणात्मना स्थितानि स्थूलसूक्ष्मशरीरजन्यभोगसाधन
प्रारब्धकर्मवशेन पुरीपद्मार्ग नाडीमार्गेण तत्तद्वोलकानि प्रवि-
शन्त इन्द्रियाणि । तदुपरमप्रारब्धोद्भोधे आनदोलिकाया वि-
द्यमानो राजा गृहान्तरे सोपानमागद्वारा प्रासादे विहत्य त-
दवच्छिन्नान्तं पुरपर्यङ्के शयान इव नाडीद्वारा पुरीतप्रविश्य
तदवच्छिन्नहृदयोपाधिक परमात्मान यदा प्रविशति तदा
सुप्त इत्युच्यते । लिङ्गशरीर कारणात्मना लीयत । तदा प्राणा
दिवायव प्रलीनवृत्तय सन्त आयु स्वरूपेण शरीर रक्षन्ति ।
तथा च भाविजाग्रत्स्वप्नभोगानुकूलकर्मानुबन्धप्राणधारण सु-
षुप्तौ सोपाधिकचैतन्यस्तैव हृश्यते । तत्सत्या च नाडीना
प्राणसच्चारयोग्यतापि । एव च सति ‘न प्राणेन नापानेन
मर्यो जीवति कश्चन । इतरेण तु जीवन्ति यस्मिन्नेतावुपा-

अत्रौ' इति श्रुत्या 'जीव प्राणधारणे' इति धातुपाठाच्च प्राण नांडीशब्दस्य लक्षणया परमात्मैवोच्यते । कामेश्वरस्यैव प्रारब्धकर्मजन्यशरीरमात्राभावेऽपि घृतकाठिन्यन्यायेन मूर्ति मत्तया तदन्तर्यामिसभावनया एतम्भाग्म । कामेश्वरस्य प्राण नांडी तदधिष्ठानचैतन्यमिति फलितोऽर्थ ॥ ॐ कामेश्वर प्राणनाड्यै नम ॥

कामशोत्सगवासिनी । कामेश्वरस्य उत्सगे वामाङ्के वसतीति तथा । 'अनेकमन्मथाकारकामेशोत्सगवासिनी' इति ललितातापनीये ॥ ॐ कामेशोत्सगवासिन्यै नम ॥

कामेश्वरालिङ्गिताङ्गी । तेन आलिङ्गितम् अङ्गीकृतम् अङ्गयस्या सा तथा ॥ ॐ कामेश्वरालिङ्गिताङ्ग्यै नम ॥

कामेश्वरसुखप्रदा । कामेश्वराय सुखं प्रददातीति वा । कामेश्वरस्य यत्सुखं ब्रह्माखरूपसञ्चिदानन्दसाक्षात्कारात्मकम्, 'द्वो भूत्वा देवानप्येति' इति श्रुत्युक्तन्यायात् स्वकीयभक्ताना कामेश्वराभेदरूप सञ्चिदानन्दघनात्मक मोक्षददातीत्यर्थ ॥ ॐ कामेश्वरसुखप्रदायै नम ॥

कामेश्वरप्रणयिनी कामेश्वरविलासिनी ।
कामेश्वरतप सिद्धि, कामेश्वरमन्त्रप्रिया ॥

कामेश्वरप्रणयिनी । कामेश्वरस्य स्वस्वरूपे परमानन्दघने
या प्रीति तद्विषयभूतेत्यर्थ ॥ ॐ कामेश्वरप्रणयिन्यै
नमः ॥

कामेश्वरविलासिनी । कामेश्वरस्य विलास कार्यात्मना
विवर्तोऽस्या अस्तीति तथा ॥ ॐ कामेश्वरविलासिन्यै
नमः ॥

कामेश्वरतप सिद्धि । कामेश्वरस्य तप जगदालोचना
त्मकम्, सिद्ध्यत्वनयेति सिद्धि, तपस साधनभूतेत्यर्थ ।
खीपुरुषात्मना कलिपतभेदवशानं जगत्सर्जनसाधनभूतत्यर्थ ॥
ॐ कामेश्वरतप सिद्ध्यै नमः ॥

कामेश्वरमन प्रिया । मनस प्रिया तथा, निरवधिक-
प्रेमासपदत्यर्थ ॥ ॐ कामेश्वरमनप्रियायै नमः ॥

कामेश्वरप्राणनाथा कामेश्वरविमोहिनी ।

कामेश्वरब्रह्मचिद्या कामेश्वरगृहेश्वरी ॥

कामेश्वरप्राणनाथा । कामेश्वरस्य प्राण हिरण्यगम-
त नाथयति पालयतीति तथा । कामेश्वर प्राणनाथो वल्लभो
यस्या सेति चा तथा ॥ ॐ कामेश्वरप्राणनाथायै नम ॥

कामेश्वरविमोहिनी । विमोहयति म्बय भिन्नविग्रहवती

सती आवा दपती—इति द्विप्रकारकज्ञानवन्त करोतीति सा तथा । अभेदज्ञानवत तद्विपरीतज्ञानवत्व मोह तत्करोतीति सा तथा । अथवा, मोहो नाम बुद्धेरेकालम्बनतया तदन्याविषयकत्वम् परमेश्वरस्य स्वस्वरूपपरदेवतापरमानन्द साक्षात्कारेण स्थाणुबन्धिश्चलतया उपचारेण मोहवत्तया तदि तरप्रपञ्चाकारकृत्याद्याश्रयतादर्शनेन मोहयतीत्युपचारनाम । मोहयतीवेत्यर्थ । अन्त पुरगत राजान स्थियासक्तमितिव दित्यर्थ ॥ ॐ कामेश्वरविमोहिन्यै नम ॥

कामेश्वरब्रह्मविद्या । कामेश्वरस्य तत्त्वपदार्थसाक्षात्कार भूतेत्यर्थ, ‘य साक्षादपरोक्षाद्ब्रह्म’ इति श्रुते ॥ ॐ कामेश्वरब्रह्मविद्यायै नम ॥

कामेश्वरगृहेश्वरी । गृहात इति प्रह सर्वज्ञानम् तस्य ईश्वरी विषयाधिष्ठानभूतत्वेन नियामिकेत्यर्थ । अथवा, ‘गृहिणी गृहमुन्त्यते’ इति न्यायात कामेश्वर गृहेश्वर स्वस्या अधिपति अस्या अस्तीति सा तथा ॥ कामेश्वरगृहेश्वर्यै नम ॥

कामेश्वराहादकरी कामेश्वरमहेश्वरी ।

कामेश्वरी कामकोटिनिलया काङ्गितार्थदा ॥

कामेश्वराहादकरी । आहाद तृप्तिजन्यसुख परमेश्वरस्य

नित्यवृत्तमत्वरूपा शक्ति , परदेवतात्मकतया त करोतीति
तथा ॥ ॐ कामेश्वराहादकर्यै नम ॥

कामश्वरमहेश्वरी । महती च सा इश्वरी निरपाधिकैश्च
र्यवती , 'महान्प्रभुर्वै पुरुष' इति श्रुते । कामेश्वरस्य मह
दैश्वर्यम् अस्या अस्तीति तथा , भगवतीत्यर्थ । 'ऐश्वर्यस्य
समग्रस्य वीर्यस्य यशस श्रिय । ज्ञानवैराग्ययोश्चैव षण्णा
भग इतीरणा 'तमीश्वराणा परम महेश्वरम' इति श्रुते ॥
ॐ कामेश्वरमहेश्वर्यै नमः ॥

कामेश्वरी । मन्मथापासितकादिविद्यारूपेत्यर्थ ॥ ॐ
कामेश्वर्यै नमः ॥

कामकोटिनिलया । षण्णवतिपीठेषु मध्य कामकाटि
श्रीचक्रमित्यर्थ । निलय गृह यस्या सा तथा ॥ ॐ का-
मकोटिनिलयायै नमः ॥

काङ्क्षितार्थदा । काङ्क्षितान् काङ्क्षाविषयीभूतान् , प्राप्तम
जातीयेच्छा काङ्क्षा , तद्वोचरान् पदार्थान् ददातीति तथा ।
काङ्क्षिता सती उपास्यदेवता मे प्रसन्ना भूयादितीच्छया
चिरकालोपासिता सती पुरुषार्थान् अप्रार्थयमानस्यापि
स्वयमेव ददातीत्यर्थ ॥ ॐ काङ्क्षितार्थदायै नम ॥

लकारिणी लब्धरूपा लब्धधीर्लब्धवाङ्गिष्ठता ।
लब्धपापमनोदूरा लब्धाहकारदुर्गमा ॥

लकारिणी तृतीयखण्डतृतीयवर्णत्वेन वाचकतया अस्या
अस्तीति सा तथा ॥ ॐ लकारिण्यै नम ॥

लब्धरूपा । रूप्यते ज्ञाप्यते एभिरिते रूपाणि लक्षणा
नि स्वरूपतटस्थभेदेन सगुणनिर्गुणपराणि, लब्धानि यया
सा तथा । रूप्यते ज्ञाप्यते इति रूपम् अर्थ , उपलक्षण नाम्नो
इपि, लब्धे नामरूपे यया सा तथा । आदौ स्वय मायोपा
धिना शब्दार्थभावमापद्य पश्चात् व्याकरणमकरोदिति भा
व ॥ ॐ लब्धरूपायै नम ॥

लब्धधी । निश्चयात्मिका सविकल्पनामका अन्त कर
णवृत्तयो धिय , ता उपाधित्वेन प्रतिबिम्बाधिष्ठानत्वेन लब्धा
यया सा तथा । वृत्त्यारूढ चैतन्य ज्ञानमिति वा, चैतन्य-
व्यापा वृत्तिर्वेति वेदान्तसिद्धान्त । जडाना विषयाणा ग्रहणे
तादृशीना वृत्तीना असामर्थ्ये जगदान्ध्यप्रसङ्गेन स्वरूपचै
नन्यमन्त करणाद्युपहित फलचैतन्यतया प्रकाशयति । तथा
च ‘ब्रह्मण्यज्ञाननाशाय वृत्तिव्याप्तिरिहेष्यते’ इति न्यायेन
लब्धा धी तत्त्वमस्यादिभावाकथश्रवणजन्यवृत्तिव्याप्तिर्वया

सत्यर्थं । अथवा, धी शब्दन् सर्वज्ञत्वादिकमुन्नयते, तत् लब्ध ययेति वा, ‘य सर्वज्ञ सर्वविज्ञ’ इति श्रुतः ॥ ऊँ लब्धधिये नमः ॥

लब्धवाच्छित्ता । वाच्छाया वशयीभूत वाच्छतम् इष्टफ लमित्यर्थं । लब्ध पूर्वमव प्राप्त तद्ययेति तथा । आपकामेति यावन् ॥ ॐ लब्धवाच्छित्तायै नमः ॥

लब्धपापमनोदूरा । पापप्रधानानि च तानि मनासि च पापमनासि लब्धानि पापमनासि यैस्ते सदा पापचिन्तका इत्यर्थं । तषा दूरा अवेशेत्यर्थं, ‘अन्यत्र धर्मादन्यत्राधर्मादन्यत्रास्मात्कृताकृतात् इति श्रुते । ‘तमेत वेदानुवच नेन ब्राह्मणा विविदिषन्ति’ इति श्रुत्या विहिताना तत्तद्वर्ण-श्रमधर्मणामीश्वरार्पणबुद्ध्या । क्रियमाणानाभात्मज्ञानमाधन तया श्रूयमाणत्वात् तदन्येषा दुखप्राप्तिसाधनत्वेन पापवा सनाप्रधानत्वेन दुरधिगमेत्यर्थं ॥ ॐ लब्धपापमनोदूरायै नमः ॥

लब्धाहकारदुर्गमा । अहकारोऽभिमान चपलक्षण तत्कार्याणामासुरसपत्तिविशेषाणाम् । लब्ध अहकार राजस तामसात्मक यैस्त दुखेनाप्यधिकप्रयत्नेन क्रियमाणसाधनकलापेन अधिगन्तु ज्ञातुमशक्या । सत्त्वगुणाभावे देहे

निद्र्यादौ सुखप्रकाशाव्याप्तौ मन स्थैर्याभावेन रजस प्रवर्त
कस्य विक्षेपकस्य तमसश्चावरणप्रधानस्य विवेकज्ञानप्रतिब
न्धकस्य निद्रालस्यादिसमुद्भवस्य कायेण जामित्वादिरूपेण
श्रेयोमागसाधनानुष्ठाने गुरुवेदयो श्रद्धाक्षये बाह्यविषयस
पादनव्यग्र मनसि लाभालाभेतुकहर्षशोकजन्यरागद्वेषपर
तन्त्रे अनात्मजासुरसपत्तिमता चित्ते न भातीत्याशय ।
प्रत्युत जननमरणप्रवाहरूपससारमेवानुभवन्ति, ‘तानह
द्विषत कूरान्’ इति भगवद्वचनात् । अतो निरभिमानपुरु
षेण स्वाभीष्टलाभाय चित्त सदा चिन्तनीयेत्यर्थ । ‘यतय
शुद्धसत्त्वा’ इत्यादिप्रमाणेभ्य इति द्रष्टव्यम् ॥ ॐ लब्धा
हकारदुर्गमायै नम ॥

लब्धशक्तिर्लब्धदेहा लब्धैर्वर्यसमुन्नति ।

लब्धवृद्धिर्लब्धलीला लब्धयौवनशालिनी ॥

लब्धशक्ति । लब्धा शक्ति सकलसामर्थ्येतुभूता मा
यामिका यया सा तथा, ‘ते ध्यानयोगानुगता अपश्यन्
देवात्मशक्ति स्वगुणैर्निर्गूढाम्’ इति श्रुते ॥ ॐ लब्धश
क्त्यै नम ॥

लब्धदेहा । लब्ध देह विग्रह यया सा तथा । स्वे

च्छावलभितमूर्ति धृतकाठिन्यन्यायेन जीवत्वाभावेन कर्मा
धीनत्वाभावात् । तथा च सति अध्यस्तमायाशक्ते भेदक
त्वस्वाभाव्यन ‘पतिश्च पत्री चाभवताम्’ इति श्रुत्या च
दपतिमूर्तिमती बभूवेत्यभिप्राय ॥ ॐ लब्धदेहार्थै नम ॥

लब्धैश्वर्यसमुन्नति । ऐश्वर्याणा समुन्नति आधिक्य प
यवसानमित्यर्थ , लब्धा ऐश्वर्यसमुन्नति यथा सा तथा,
'तमीश्वराणा परम महश्वरम्' इति श्रते 'नान्तोऽस्ति
मम दिव्याना विभूतीना परतप' इति स्मृतेश्च । 'सर्वे
श्वर एष सर्वज्ञ एषोऽन्तर्याम्येष योनि सर्वस्य' इति
श्रुतौ निरुपाधिकमहदैश्वर्यसपत्ते तदुपासकानामगस्त्वादि
महर्षीणा दर्शनात् तदीयमहदैश्वर्यस्य निरवधिकत्वमिति
किमु वक्तव्यमिति ज्ञायते इत्यभिप्राय ॥ ॐ लब्धैश्वर्य-
समुन्नत्यै नम ॥

लब्धवृद्धि । वृद्धिर्नाम व्याप्ति परिपूर्णतेत्यथ , अव
यवोपचयात्मका न, तस्या कर्मजन्यत्वेन विनाशहेतुत्वात् ,
'स वा एष महानज आत्मा न वर्धते कर्मणा' इति
श्रुतिवचनात् , 'निष्क्रिय निष्कलम्' इति अवयवमात्रानि
वैधाच , तथा च लब्धा वृद्धि सर्वव्यापकता स्वस्वरूपैव
सती उपाधिभिर्जन्यस्तदाश्रयभूतै अभिव्यञ्यत । न

त्वविद्यमानारोपिता इति निष्कर्षार्थ ॥ ॐ लब्धतुद्यै
नम ॥

लब्धलीला । लीला अन्यप्रयोजनार्थव्यापारा स्वहर्ष
मात्रहेतुका वा, तत्त्वालोचितशृङ्खारादिनवरसाङ्गीकारसमये
तदुचितभङ्गीविशेषा वा लब्धा यथा सा तथा ॥ ॐ लब्ध
लीलायै नम ॥

लब्धयौवनशालिनी । अस्तित्वजननवर्धनभावविकारा
वस्था बास्यम्, परिणाम अपक्षयो नाश उत्तरावस्था
जरा, दहाभावेन तदुभयनिषेधे अर्थाद्यौवनम्, यौति
गच्छतीति युवा दृढबलवीर्य, तस्य भाव यौवन तदुभ
यवयोऽवस्थाराहित्येनैकस्वरूपता, तल्लब्ध प्राप्त यौवन यथा
सा तथा, ‘अजरोऽमृतोऽभयो ब्रह्म’ इति श्रुते सर्वदा
एकप्रकारस्वरूपवतीत भाव ॥ ॐ लब्धयौवनशालिन्यै
नमः ॥

लब्धातिशयसर्वाङ्गसौन्दर्या लब्धविभ्रमा ।

लब्धरागा लब्धपतिर्लब्धनानागमस्थितिः ॥

लब्धातिशयसर्वाङ्गसौन्दर्या । सुन्दरो रुचिर तस्य
भाव सौन्दर्यम्, अवयवाना सर्वेषा सौन्दर्यमतिशयि
सर्वाङ्गेषु सर्वावयवेषु लब्ध यथा सा तथा, यथाक्षाक्षोक्ता

वयवविन्यासविशेषत्वन् सर्वमनाहरमूर्तिवतीत्यर्थं , ‘न
तम्य प्रतिमास्ति’ इति श्रुते ॥ ॐ लब्धातिशयसर्वाङ्गसौ
न्दर्यायै नम ॥

लब्धविभ्रमा । विभ्रमो बालकीडा लब्धा यथा सा
तथा , सर्वात्मकतया सर्वकर्तृत्वादिति भाव ॥ ॐ लब्ध
विभ्रमायै नम ॥

लब्धरागा । लब्ध सजानीयो राग काम , ‘मोऽका-
मयत’ इति श्रुत्या जगत्सर्जनस्य कामनापूर्वकत्वप्रतिपाद-
नात् , लब्धो रागो यथा मा तथा इत्यर्थं ॥ ॐ लब्धरा-
गायै नम ॥

लब्धपति । लब्ध स्वेच्छायैव स्वयवरे पति कामेश्वरो
यथा सा तथा ॥ ॐ लब्धपतये नम ॥

लब्धनानागमस्थिति । आ समातात् नानाप्रकारै कर्मो
पासनाज्ञानकाण्डतदङ्गत्वादिभि गमयन्ति स्वार्थान् प्रका-
शयन्तीत्यागमा वेदा नाना अनेकशाखाप्रभिन्नसामाद्य
तेषा स्थिति परिपालन लब्धा यथा सा तथा । नाना
गमस्थिति वेदचतुष्टयोक्तमर्थादा काण्डप्रयविषया लब्धा
यथा सेति वा । ससारस्यानादित्वेन निरपेक्षप्रमाणभूतान्
वेदाभ् ‘सर्वे वदा यत्कैक भवन्ति’ इति श्रुते स्वस्वरूपभूतान्

महाप्रलये सरक्ष्य सर्गादौ जायमानहिरण्यगर्भस्यान्यूनानति
रेकेण तानेव प्रतिभासयति स्वय दपती भूत्वा तदुकधर्मा
ननुष्टाय परेषामप्यनुष्टापयतीति च । ‘वेदज्ञाङ्गे ममैवाङ्गे
वर्त एव च कर्मणि । यदि ह्यह न वर्तेय जातु कर्मप्यतन्द्रि-
त । उत्सीदेयुरिमे लोका न कुर्यां कर्म चेदहम्’ इत्यादि
भगवद्वचनादिति द्रष्टव्यम् ॥ ॐ लब्धनानागमस्थित्यै
नम् ॥

लब्धभोगा लब्धसुखा लब्धहर्षाभिपूजिता ।
ह्रींकारमूर्तिह्रींकारसौधशृङ्खकपोनिका ॥ ५४ ॥

लब्धभोगा । भोग सुखमात्रानुभव दुखानुभवे उच्चय
माने जीवाविशेषप्रसङ्गात । लब्ध भोग यथा सा तथा ।
जीववत् क्रमिकस्वेष्टपदार्थानुभवानन्तरकालीन सुख न भव-
ति, स्वस्या आनन्दरूपत्वेन सिद्धस्वरूपत्वात्, साधनभूत-
भोगोऽप्येतद्विषये सिद्ध इत्युपचर्यते इति लब्धभोगेत्यु-
च्यते ॥ ॐ लब्धभोगायै नम् ॥

लब्धसुखा । लब्ध सुख अनुकूलवेदनीय स्वस्वरूपभूत
सुख तत्माधन च धर्म यथा सा तथा ॥ ॐ लब्धसु-
खायै नम् ॥

लब्धहृषाभिपूरिता । लब्ध या हर्ष तृप्तिनिमत्तकचि
त्तोऽलासविशेष मुखप्रसादशरीरपृष्ठशादिकार्योन्नियं जगत्या
स्वाभीष्टपदार्थानुभवादिजन्य सतोष इति प्रसिद्ध , तेनाभि
पूरिता अभित समन्तादन्यूनानतिरेकेणादिन्द्वन्द्वरूपतया
पूरिता भरिता । तद्विपरीतदु खाद्यनुत्पादेन तन्मात्रसमाश्रया
नित्यप्रसन्नमुखीत्यर्थ ॥ ॐ लब्धहृषाभिपूरितायै नमः ॥

ह्रींकारमूर्ति । वाच्यवाचकताभेदसबन्धेन ह्रींकार मूर्ति
विग्रहो यस्या सा तथा ॥ ॐ ह्रींकारमूर्त्यै नमः ॥

। ह्रींकारसौधशृङ्कपोतिका । सुधामय मौधम , सुधा-
विकार अद्वालिकेत्यर्थ , तस्य शृङ्क शिखर चन्द्रशालादि-
भिन्नयुपरिभाग , निरूपाधिकविश्रान्तजन्यसुखानुभवहेतु
तथा ह्रींकारस्य सौधोपमा , तत्र हकारस्य श्रेतवर्णतया
अद्वालिकसाहश्यम , रेफस्य लोहितरूपतया इष्टकादिकृता
धोभिन्नयुपमा , हकारोपरि ह्रींकारस्य शृङ्कोपमा , ऊर्ध्वगत्व-
साम्यात् , तदुपरितनविन्दु सर्वप्रकृतभूतशब्दार्थात्मक-
तया तदवयवत्वेन विचित्रस्वरूपोऽपि सूक्ष्मतया अपवरक-
गतकपोतकान्तेव जागरूक हश्यत इति तदर्थत्वेन परद
ध्येयमानशब्देनाभिधीयत इति भाव ॥ ॐ ह्रींकारसौध-
शृङ्कपोतिकायै नमः ॥

ह्रींकारदुग्धाब्धिसुधा ह्रींकारकमलेन्दिरा ।
ह्रींकारमणिदीपार्चिह्रींकारतरुशारिका ॥

ह्रींकारदुग्धाब्धिसुधा । दोहान्त्रिष्पन्न दुग्धम् । स्तनग
तस्य पयस स्वीयतापादनहस्तक्रियाविशेषो दोह । उपल
क्षण चौषणादीनाम्, तथा च प्रदीपालकार सिद्ध, अनन्तो
दक्षप्रसारितनिन्नभूप्रदेश अब्धिरुच्यते । आप धीयते
अस्मिन्निति तथा । तस्मिन् मजीवकत्व धर्म । हिम्भक
सजीवने स्तन्यादौ दर्शनात् । ह्रींकारस्यापि इकारयुक्तया
श्वेतवर्णत्वाद्मृतहेतोश्च तत्साहश्यम् । तस्य सुधेव सुधा
तदभिव्यक्तवाविशेषात्त्सेवकाना नित्यत्वे सति बहुविधम
हिमशालितया दर्शनादिति भाव ॥ ॐ ह्रींकारदुग्धाब्धि
सुधायै नमः ॥

ह्रींकारकमलेन्दिरा । ह्रींकारबीजस्य विचित्रवर्णतया पर
मप्रतिविषयतया च कमलोपमा । तस्य वाच्यार्थतया तदु
परितनत्वेन सर्वपुरुषार्थप्रदातृत्वाच्च कमलशब्देनाभिधीयते ।
तस्या पद्मालयत्वात् ह्रींकारकमलस्य इन्दिरा तदधीनव्रह्म-
विद्येत्यर्थ ॥ ॐ ह्रींकारकमलेन्दिरायै नमः ॥

ह्रींकारमणिदीपार्चि । आधिदैविकाद्युपद्रवानभिभूतत्वे

सति चिरकालावस्थायित्वं मणिदीपसात्तद्यम हींकारस्य ।
 तस्य प्रकाशं अनितरसाधारणमहातिशयवत्त्वेन अनर्धत्वं
 मावेद्यति । तदुपासकस्य निरवधिकमहत्त्वापादकहींकार
 वान्यतया तत्प्रकाशेत्यर्थं । तथा च निरन्तरनमोऽपाकर
 णेन स्वेष्टपदार्थापादनेन च सुखयतीति फलितोऽर्थं ॥ ३५
 हींकारमणिदीपार्चिषे नम ॥

हींकारतरुशारिका । तारयति फलार्थिन स्वारुढान्
 पतनादे रक्षतीति तद् , तस्य शारिका पिङ्गलुण्डनेत्रचरणा
 शारिका अभ्यासातिशयेन मनुष्यभाषायामपि भाषते ।
 भूतभविष्यद्वर्तमानलोकयात्रापरिज्ञात्री सती शुभाशुभफल
 प्राप्तिं च स्वभाषया वदति । अस्य बीजस्य वान्यार्थतया
 तत्सबन्धिनी सती वेदवाचा सर्वे प्रकाशयतीत्यर्थं ॥ ३५
 हींकारतरुशारिकायै नम ॥

हींकारपेटकमणिहींकारादर्शविस्तिता ।

हींकारकोशासिलता हींकारास्थाननर्तकी ॥

हींकारपेटकमणि । गूहनसाधनतया हींकार पेटकेन
 दृष्टान्तीकियते । तस्य मणि वैद्वूर्यमित्यर्थं । यथा हीरा
 द्विमणि पेटकावौ गापितोऽपि स्वकान्त्या बाह्याभ्यन्तर तस्य

प्रकाशयन्नितरपेटकेभ्य त व्यावर्तयति, तथेदमपि बीज
स्ववाचकतयेतरवर्णेभ्य निरतिशयमहिङ्गा भेदयतीति भाव ॥
ॐ ह्रींकारपेटकपण्ये नमः ॥

ह्रींकारादर्शबिम्बिता । अस्य बीजस्य इतरप्रमाणानपेक्ष
वेदान्तर्गततया निर्दोषित्वादादशसाम्यम् । तस्मिन् बिम्बिता
प्रतिबिम्बिता, मायाप्रतिबिम्बचैतन्यस्यैव जगत्कारणतया
सर्वत्र दर्पणे मुखमिव प्रतिफलतीति तात्पर्यार्थं ॥ ॐ
ह्रींकारादर्शबिम्बितायै नमः ॥

ह्रींकारकोशासिलता । ह्रींकार एव कोशा तस्यासिलता
अतिदीर्घखड्डभिलथ । सर्ववैर्यादिजन्यदु खणिवर्तकत्वमसि
लताया इव परदेवताया अपि । तथात्पेन बहि प्रकटनायो
ग्यतामाहश्येन आच्छादकापेक्ष्या ह्रींकारस्य वाचकशब्द
तया अर्थावारकत्वौपस्थादसिकोशतुल्यता । तथा च ह्रींकार
काशे विद्यमाना असिलतेव दु खणिवारकत्वे सति भक्ताभय
करीति भाव । सर्वेषामायुधविशेषाणाम् असिपदमुपलक्ष
णम् । 'महद्वय वज्रमुद्यतम्' 'भीषास्माद्वात् पवते' इत्या
दिश्रुते ॥ ॐ ह्रींकारकोशासिलतायै नमः ॥

ह्रींकारास्थाननतकी । ह्रींकार एव आस्थान सभामण्डप
मर्वाश्रयत्वान् । तस्य नतकी नटनसबन्धभूसयोगचरणवि

न्यासोपलक्षिततालानुसारिहस्ताद्यङ्गचेष्टा नर्तनम्, तत्कर्त्री
नर्तकी । ह्रींकारवाच्यार्थतया मायादिसबन्धासबन्धनिमित्त
कविचित्रतरकार्येत्पादनव्यापारानुकारविकार्यविकारिस्वरूप
वतया द्रष्ट्वाकमनोवृत्तिभेदेन तीत्रमन्दमन्दतरप्रीतिरूपभ
क्तिविषयतयाभिव्यक्तानभिव्यक्तेष्टफलसाधनतया स्वकीयपु-
ण्यादितारतम्येन बुद्धिशुद्धिभेदात्प्रतिभातीत्यर्थ ॥ ३५ ह्रीं
कारास्थाननर्तक्यै नम ॥

ह्रींकारशुक्तिकामुक्तामणि ह्रींकारवाधिना ।
ह्रींकारमयसौवर्णस्तम्भविद्वमपुत्रिका ॥

ह्रींकारशुक्तिकामुक्तामणि । ह्रींकार एव शुक्तिका नील
पृष्ठत्रिकोणाकारा, तस्या मुक्तिकेव मुक्ताफलामवाभिव्यज्य-
माना— यथा स्वातीमहानक्षत्र सर्वदेशेषु मधसघात्पतञ्जल
विन्दु शुक्तिकान्त पतित समुद्रदेशविशेषे मुक्ताकारेण
परिणमते, तथा मन्त्रवरजस्तमोगुणात्मकहीर्वीजावच्छेदेन म
नोहरवाचामगोचरसुन्दरतरपरदेवतामूर्ल्या मर्वगतमपि चै-
तन्य विशिष्याभिव्यज्यते । तथा च मौक्तिकार्थिना शुक्त्यु
पादानवत् परदेवतासाक्षात्कारेप्सूना ह्रींकारोपादानमाव
श्यकमिति भाव ॥ ३५ ह्रींकारशुक्तिकामुक्तामणये नमः ॥

हींकारबोधिता । सिद्धे पदार्थे इन्द्रियादिसबन्धे सति
स्वत एव ज्ञानोत्पत्तिचिदर्शनान्न ज्ञाने विधिरपेक्षित , क्रियाफ-
लत्वाभावात् । तर्हि नित्यापरोक्षधर्मादिज्ञानवत् शुद्धब्रह्मा-
भेद वेदैकदेशहींकारेणैव बोध्यते, अज्ञातज्ञापक्त्वेन वदस्य
स्वत प्रामाण्यान्युपगमात्, परचैतन्यस्य च ज्ञायमानस्य
परमानन्दरूपतया पुरुषार्थरूपत्वात् । अत हींकारेणैव मू-
लमन्त्रात्मना बोधिता ज्ञापिता । हकाररेफेकाराणा व्यस्तत्व
दशाया भिन्नभिन्नार्थकाना मेलने हींकारात्मना परिणामे
सच्चिदानन्दस्वरूपश्रीक्षिपुरसुन्दर्या तदर्थत्वेन अद्वैतस्वरूप
तथा प्रतिभानात् । ‘नान्योऽतोऽस्ति द्रष्टा’ ‘इद सर्व
यद्यमात्मा’ ‘एक एव तु भूतात्मा भूते भूते व्यवस्थित ।
एकधा बहुधा चैव दद्यते जलचन्द्रवत्’ इत्यादिश्रुते ।
‘आत्मा वा अरे हष्टव्य’ ‘तद्विजिज्ञासस्व’ ‘आत्मान
पश्येत्’ इत्यादिलिङ्ग्लोट्टव्यप्रत्ययानामर्हतार्थकतया न वि-
धित्वमिति सिद्धान्त ॥ ॐ हींकारबोधितायै नमः ॥

हींकारमयसौवर्णस्तम्भविद्वुमपुत्रिका । पिङ्गलपृथ्वीरेणु
सुवर्णमित्युच्यते । अनुन्धिद्यमानद्रवत्वस्य नैमित्तिकत्वेऽपि
तैजसान्तर प्रदीपप्रभादावर्द्धनात् । पदार्थान्तरसयोगे रज
तादिवदतितेज सयोगात् भस्मभावापत्तेश्च हीरमणौ लोहले

रुद्धत्वाभाववर्त्त्वेऽपि पार्थिवत्ववदत्र पार्थिवत्वे बाधाभावात् ।
 द्रवत्वस्यादकस्वभावस्वन तत्कायपृथिव्यामपि उपलभ्मोपप
 त्तेश्च । तद्विकार , सौवर्णश्चासौ स्तम्भश्च । सौवर्णस्तम्भस्य
 नवरत्नमण्डपभारवाहिन्ये सति तदभिन्नत्वेन तदलकारभूतत्व
 स्येव गाधर्म्यस्य ह्रींकारेऽपि जगदाश्रयत्वे मति तत्कारणत्वे
 सति तदन्तर्भूतत्वे सति परभानन्दजनकत्वस्य सत्त्वेन ह्रींका
 रमय इत्यभेदोपचार प्रदीपालकारघोतनार्थं इति ज्ञातव्यम् ।
 ह्रींकारे उपमेये मयशब्देनोपमानाभेदकल्पनात् । तस्मिन्वि
 चित्रपिङ्गलप्रधानरूपे तत्सबन्धितया विद्वमपुत्रिकेव प्रतीय
 माना विद्वमन प्रवालन कृता पुत्रिका सालभज्जिका । सौव
 र्णस्तम्भशब्द उपलक्षण भिन्नयादीनाम , प्रायस्त्वदर्शनात् तदु
 पादान स्वत मनोऽस्य स्तम्भस्यातिशयदर्शनीयतायै । दुर्ल
 भतरप्रवालपुत्रिका स्तम्भमण्टप तत्सामिन तदश च प्रकृ
 ष्टीकरोति तथा श्रीपरदेवतापि रूढ्यैतद्वीजाथतया तदव
 क्षिण्णा सती तदादीन सर्वान् भूषयति सफलीकरातीत्यथ ॥
 अ३० ह्रींकारमयसौवर्णस्तम्भविद्वमपुत्रिकायै नमः ॥

ह्रींकारवेदोपनिषद्व्यांकाराध्वरदक्षिणा ।

ह्रींकारनन्दनारामनवकल्पकवल्लरी ॥ ८७ ॥

ह्रीकारवेदोपनिषत् । वेदान्ते ज्ञायन्ते सर्वे पदार्था
अनेनेति वेद । जालेकवचनम् । ह्रीकार एव वद ।
ज्ञापकत्वाविशेषान् । तस्य उपनिषद्वेदान्तभाग लक्ष्यार्थो
वा, तत् ब्रह्मोपनिषत्परमिति श्रुत । कर्मोपासनाज्ञानका-
ण्डभेदेन चत्वाराऽपि वेदा लिप्रकारा । ‘तमेत वदानुव
चनेन ब्राह्मणा विविदिषन्ति’ इति वाक्येन ज्ञानसाधनतया
कर्मोपासनयो विनियुक्तत्वात्, ‘अन्धतम प्रविशन्ति ये
उविद्यामुपासते । ततो भूय इव ते तमो य उ विद्याया
रता’ इति श्रुता तदुभयो ससारफलकत्वेन निनिदृतत्वात्,
‘आत्मान चेद्विजानीयाद्यमस्तीति पुरुष । किमिच्छन् क
स्य कामाय शरीरमनुसञ्चरेत्’ ‘आत्मकाम आपकाम’
इत्यादिश्रुतिभ्य अद्वैतज्ञानोत्पादकवेदभागस्योपनिषच्छब्द
वाच्यस्य मोक्षफलकत्वेन फलप्रतिपादनात्तदुभयप्रतिपादक
वदभागापेक्षया श्रेष्ठत्वम्, लाके साधनापेक्षया फलस्य श्रेष्ठत्व
नात्तमत्वप्रसिद्धे । तथा च पूर्वकाण्डद्वयार्थस्य जन्यतया
तत्प्रतिपादकवेदभागस्योपनिषच्छेष्टत्ववत् ह्रीकारस्यापि पर-
देवताप्रकाशकत्वेन तच्छेष्टत्वात्तस्या प्राधान्यमुक्तमिति द्रष्ट
व्यम् । वेदान्तेषूपनिषच्छब्द तज्जन्यतारूपशक्यसवन्धेन प्र
वर्तते । मुख्यया वृस्त्या तु ब्रह्मविद्यायामेव । तथा हि—उप

शब्द समीपदेशार्थक । ब्रह्मण्यध्यस्तमायासमीपदेशक
तत्पदार्थप्रतिबिम्बितमविद्योपाधिकचैतन्यं जीवशब्दवाच्यमुप
शब्दार्थं लक्षणया प्रतिपाद्यते । नि शब्दं षट् इति पदस्य
विशेषणम् । मन इति पदं मदनगत्यवसादनेषु भवति ।
तथा च उपशब्दवाच्यो जीव अविद्या निहत्य त्यक्त्वा
ब्रह्मस्वरूपेण निषीदति वर्तत इति उपनिषदित्येकोऽर्थ ।
जीव ब्रह्म स्वरूपेण अवसीदति परिसमाप्नोतीति तुतीयोऽर्थ ।
एवमुपनिषच्छब्दस्य ब्रह्मविद्यावाचकत्वेन प्रसिद्धस्य तद्वाच
कवेदभागे लक्षणवत्त्वेऽप्युपनिषच्छब्दवाच्यो भवति । तथा
च ह्रींकार एव वेद तस्य उपानषत्रधानभूता ब्रह्मविद्ये
तर्थ । ॐ ह्रींकारवेदोपनिषदे नम ॥

ह्रींकाराध्वरदक्षिणा । ह्रींकार एव अध्वर यज्ञ तस्य
दक्षिणा समाप्निसाधनम्, दक्षिणाया दक्षाया यज्ञसमाप्नि
दर्शनात् । ह्रींकारस्यापि जप यजनात्पक्तया अध्वान
राति गच्छतीत्यध्वर मार्गसाधक इत्यर्थ । दक्षिणापद
फलवाचि त्रत्विग्व्यापाराणा दक्षिणाफलत्वदर्शनात् । ह्रीं
काराध्वरस्य ह्रींकारजपयज्ञस्य दक्षिणा फलसाधनीभूतपुरु
षार्थरूपा । अथवा ह्रींकाराध्वरस्य दक्षिणा पत्री, ‘मखस्य

दक्षिणा पल्ली' इति वचनात् । 'ज्ञानयज्ञेन तेनाहमिष्ट स्या
मिति मे मति' इति भगवद्वचनात् । हींकारलक्ष्यार्थज्ञान-
मेव हींकाराध्वर हींकारज्ञानयज्ञ , 'प्रधान दक्षिणा मत्वे'
इति वचनात् दक्षिणावृक्फलभूतत्वेन प्रधानभूतेति वा । वे
वतोहशेन द्रव्यल्यागो याग इत्युच्यते । लक्तद्रव्यस्य अग्नौ
प्रक्षेपा होम । नस्त्विगुदेशन वद्यामथविभागो दक्षिणा । अ-
र्थिभ्य वेदिबहिर्देशोऽर्थविभागो दानमिति तेषा भेद ॥ उ३
हींकाराध्वरदक्षिणायै नम ॥

हींकारनन्दनारामनवकल्पकवल्लरी । नन्दयत्यानन्दयती
ति नन्दन स चासौ आरामश्च तथा । देवेन्द्रोद्यान विचि
त्रस्वरूपतया विजातीर्थार्थकत्वात् । हींकार एव नन्दना
राम सुखकर्तृबिश्रामभूमि , तस्य नवा नूतना अतिकोमले
र्यर्थ । कल्पयतीति कल्पका कल्पका च सा वल्लरी चेति
तथा । देवोद्याने विद्यमानाना वृक्षगुल्मलतातृणादीनाम्
ण्ठस्त्रोकातिशायिपुष्पफलादिभन्त्वेऽपि न सर्वोत्तमताप्रसि-
द्धि । कल्पवल्लयास्तु यथाकर्म यथासेवमुपासकना सर्वा-
र्थप्रदानशक्तिभन्त्वेन सर्वोक्तुष्टता । तथा ब्रह्मविष्णुरुद्राणा
तद्वाचकवर्णभेदानाम् अन्योन्यसबन्धतया एकत्र प्रतीयमा
नत्वेन चिरजीवित्वफलादिप्रदानेन आनन्दकतया ससारता

पशामकत्वेन च ह्रींकारस्य नन्दनापमा । तत्र सर्वाथप्रदा
तृत्वेन कामेश्वरालिङ्गितकोमलतरसुन्दरमूत्या विशिष्टपुरुषा
र्थचतुष्टयकल्पनन सगुणनिर्गुणोपासकाना तद्वतात्मना प्रा
धान्येन समष्टिरूपतया साहश्येन नवकल्पकवल्लीत्युन्नयत
इति भाव ॥ ॐ ह्रींकारनन्दनारामनवकल्पकवल्लैर्यै
नम ॥

ह्रींकारहिमवद्गङ्गा ह्रींकारार्णवकौस्तुभा ।
ह्रींकारमन्त्रसर्वस्वा ह्रींकारपरपरसौख्यदा ॥

ह्रींकारहिमवद्गङ्गा । हिमान्यस्मिन् सन्तीत हिमवान्
शीतलपवेतराज । ह्रींकारस्य अभृतादसाधकतया शीत
लता ओध्या । तस्माद्गङ्गेव पावनी सर्वपुरुषार्थप्रदा
मन्त्रदवतात्मनाभिव्यक्तेत्यर्थ ॥ ॐ ह्रींकारहिमवद्गङ्गायै
नमः ॥

ह्रींकारार्णवकौस्तुभा । कौस्तुभ क्षीराब्धिजन्मसु चतु
र्दशरब्रेषु यथा श्रेष्ठ सर्वाधिकप्रकाशादिगुणतया, तथा पर
देवतापि अपारमहिमापरिच्छन्नह्रींकारमन्त्रवेद्यत्वेन तन्नि
ष्पन्ना सती ‘अत्राय पुरुष स्वय ज्योति’ इति श्रुते स्वय
प्रकाशतया विद्योतत इत्यर्थ । अत्र कौस्तुभहृदयस्य लक्ष्मी

पतित्वसर्वदेवोत्तमत्वसकलसुन्दरतमत्वगुणा इव विष्णो हीं
कारार्णवविद्योतमानहींकारदेवतोपासकस्यापि नारायणाभेदेन
श्रीकान्तत्वादिधर्मा स्वत एव मिथ्यन्तीति कौस्तुभपदन ध्व
नितमिति द्रष्टव्यम ॥ ॐ ह्रींकारार्णवकौस्तुभायै नम ॥

ह्रींकारमन्त्रसर्वस्वा । सर्वाणि च तानि स्वानि च धना
नि अणिमाद्यैर्थ्यजनकत्वादीनि तानि तथा । ह्रींकारधटि
ता ह्रींकारो वा तेषा सर्वस्वा सकलसप्त् सर्वर्थसाधकश
क्तिरित्यर्थ ॥ ॐ ह्रींकारमन्त्रसर्वस्वायै नम ॥

ह्रींकारपरसौख्यदा । ह्रींकारपरा ह्रींकारमन्त्रजपपरा
ह्रींकारधटितश्रीविज्ञाजपपरा वा । तेषा सौख्य चतुर्विधपुरु
षार्थप्राप्तिजन्यानन्द तद्दातीति तथा । ह्रींकाराणा व्यष्टि
रूपण वाच्यार्थना त्रिमूर्तीना पर सौख्य सामरस्यसुख एकी
भावानन्द ददातीति वार्थ । ‘यत्र नान्यत्पश्यति नान्य
च्छृणोति नान्यद्विजानाति स भूमा । यत्रान्यत्पश्यत्यन्य
च्छृणोत्यन्यद्विजानाति तदल्पम्’ ‘नात्पे सुखमस्ति’ इति,
‘आनन्द ब्रह्मणो विद्वान् न विभेति कुतश्चन’ इति ‘यदा
ह्वैष एतस्मिन्द्वये उनास्येऽनिलयनेऽभय प्रतिष्ठा
विन्दते । अथ सोऽभय गतो भवति’, ‘विज्ञानमानन्द ब्रह्म
रातिर्द्वातु परायणम्’ इत्यादिवद्वुशुतिभ्य अस्त्रण्डसविदा

नन्दब्रह्मस्वरूपतया सैव फल भवति, अन्यज्ञानादन्यफल
प्राप्तेरयोगात् । ‘ब्रह्म वद ब्रह्मैव भवति’ ‘तरति शोकमा
त्पवित्’, ‘येन मामुपयान्ति ते । तषामह समुद्धर्ता मृत्यु
समारसागरात्’ ‘ब्रह्मैव सन ब्रह्माप्यति’ इत्यादिश्रितिसम्म
तिगतेभ्य स्वस्वरूपप्राप्तेरेव पुरुषार्थस्य प्रदातृत्वं सिद्धम् ॥
ॐ श्रीकारपरसौख्यदायै नमः ॥

इति श्रीमत्परमहसपरिब्राजकाचार्यस्य श्रीगोविन्दभगव
त्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत् कृतौ
श्रीललितात्रिशतीभाष्यम् सपूर्णम् ॥

इत्येव ते भयाख्यात देव्या नामशातत्रयम् ।

रहस्यातिरहस्यत्वाद्वोपनीय त्वया मुने ॥

शिववर्णानि नामानि श्रीदेव्या कथितानि हि ।
शक्त्यक्षराणि नामानि कामेशकथितानि च ॥

उभयाक्षरनामानि हुभाभ्या कथितानि वै ।

तदन्यैर्ग्रथित स्तोत्रमेतस्य सदृशा किमु ॥ ३ ॥

नानेन सदृशा स्तोत्र श्रीदेवीप्रीतिदायकम् ।

लोकत्रयेऽपि कल्याण सभवेन्नात्र सशाय ॥

इति हयसुखगीत स्तोत्रराज निशम्य
 प्रगलितकलुषोऽभूचित्पर्याप्तिमेत्य ।
 निजगुरुमथ नत्वा कुम्भजन्मा तदुक्त
 पुनरधिकरहस्य ज्ञातुमेव जगाद् ॥ ५ ॥

अगस्त्य उवाच—

अश्वानन महाभाग रहस्यमपि मे वद ।
 शिववर्णानि कान्यत्र शक्तिवर्णानि कानि हि ॥

उभयोरपि वर्णानि कानि वा वद देशिक ।
 इति पृष्ठ कुम्भजेन हयग्रीवोऽवदत्पुनः ॥ ७ ॥

तव गोप्य किमस्तीह साक्षादम्बानुशामनात् ।
 इदं त्वनिरहस्य ते वक्ष्यामि शृणु कुम्भज ॥

एतद्विज्ञानमात्रेण श्रीविद्या सिद्धिदा भवेत् ।
 कतय हठय चैव शौको भागः प्रकीर्तिः ॥ ९ ॥

शक्त्यक्षराणि शोषाणि हीँकार उभयात्मकः ।
 एव विभागमङ्गात्वा ये विद्याजपशालिन ॥

न तेषां सिद्धिदा विद्या कल्पकादिशतैरपि ।

चतुर्भिं शिवचक्रैश्च शक्तिचक्रैश्च पञ्चभिः ॥

नवचक्रैश्च ससिद्धं श्रीचक्रं शिवयार्बपु ।

त्रिकोणमष्टकोणं च दशकोणङ्गं तथा ॥ १२ ॥

चतुर्दशारं चैतानि शक्तिचक्राणि पञ्च च ।

विन्दुश्चाष्टदलं पद्मं पद्मं षोडशपतकम् ॥ १३ ॥

चतुरश्च च चत्वारि शिवचक्राण्यनुक्रमात् ।

त्रिकोणे वैन्दवं श्लिष्टं अष्टारेष्टदलाम्बुजम् ॥

दशारयो षाडशारं भूगृहं भुवनाश्रके ।

शैवानामपि शास्त्रानां चक्राणां च परस्परम् ॥

अविनाभावसबन्धं यो ज्ञानाति स चक्रवित् ।

त्रिकोणस्त्रिपिणी शक्तिर्विन्दुरूपपरं शिवं ॥

अविनाभावसबन्धं तस्माद्विन्दुत्रिकोणयो ।

एव विभागमज्ञात्वा श्रीचक्रं यः समर्चयेत् ॥

न तत्फलमवाप्नोति ललिताम्बा न तुष्यति ।
ये च जानन्ति लोकऽस्मिन्श्रीविद्याचक्रवेदिनः ॥

सामान्यवेदिन सर्वे विशेषज्ञोऽतिरुलभं ।
स्वयविद्याविशेषज्ञो विशेषज्ञ समर्चयेत् ॥१९॥

तस्मै देय ततो ग्राह्यमशक्तस्तस्य दापयेत् ।
अन्धनम् प्रविशन्ति येऽविद्या मसुपासते ॥

इनि श्रुतिरपाहैतानविद्योपासकान्पुन ।
विद्यान्योपासकानेव निन्दत्यारुणिकी श्रुतिः ॥

अश्रुता सश्रुतासश्च यज्वानो येऽप्ययज्वन् ।
स्वर्घन्तो नापेक्षन्ते इन्द्रमर्प्ति च ये विदुः ॥

सिकता इव मयन्ति रश्मिभि समुदीरिताः ।
अस्माल्लोकादसुष्माचेत्याह चारण्यकश्रुतिः ॥

यस्य नो पश्चिम जन्म यदि वा शकर स्वयम् ।
तेनैव लभ्यते विद्या श्रीमत्पञ्चदशाक्षरी ॥

इति मन्त्रेषु बहुधा विद्याया भहिमोच्यते ।
माक्षैकहेतुविद्या तु श्रीविद्या नात्र सशयः ॥

न शिल्पादिज्ञानयुक्ते विडच्छब्दं प्रयुज्यते ।
माक्षैकहेतुविद्या भा श्रीविद्यैव न सशय ॥

तस्माद्विद्याविदेवात्र विडान्विडानितीर्यते ।
स्वयं विद्याविदे दद्यात्त्व्यापयन्त्रद्वृणान्सुधी ॥

स्वयविद्यारहस्यज्ञो विद्यामाहात्म्यवेद्यपि ।
विद्याविदं नार्चयेचेत्को वा त पूजयेज्जन ॥२८॥

प्रसङ्गादिदसुक्तं त प्रकृतं शृणु कुम्भज ।
य कीर्तयन्तमकृद्धक्षया दिव्यनामशतत्रयम् ॥

तस्य पुण्यमहं वक्ष्ये शृणु त्वं कुम्भसभव ।
रहस्यनाममाहस्पाठे यत्फलमीरितम् ॥ ३० ॥

तत्फलं कोटिगुणितमेकनामजपाद्धवेत् ।
कामेश्वरीकामेशाभ्या कृत नामशतत्रयम् ॥

नान्येन तुलयेदेतत्स्तोत्रेणान्यकृतेन च ।
श्रिय परम्परा यस्य भावि वा चोत्तरोत्तरम् ॥

तेनैव लभ्यते चैतत्पञ्चाच्छ्रेय परीक्षयेत् ।
अस्था नाम्ना त्रिशत्यास्तु महिमा केन वर्ण्यते ॥

या स्वय शिवयोर्बङ्गपद्माभ्या परिनिःसृता ।
नित्य षोडशसख्याकान्विप्रानादौ तु भोजयेत् ॥

अभ्यक्तास्तिलतैलेन स्नातानुष्णेन वारिणा ।
अभ्यर्च्य गन्धपुष्पादौ कामेश्वर्यादिनामभि ॥

सूपापूपै शर्करादौ पायसै फलसयुतै ।
विद्याविदो विशेषेण भोजयेत्षोडशा द्विजान् ॥

एव नित्यार्चन कुर्यादादौ ब्राह्मणभोजनम् ।
त्रिशतीनामभि पञ्चाद्वाह्यणान्कमशोऽर्चयेत् ॥

तैलाभ्यङ्गादिक दत्त्वा विभवे सति भक्तित ।
शुद्धप्रतिपदारभ्य पौर्णमास्यवधि क्रमात् ॥

दिवसे दिवसे विप्रा भोज्या विश्वातिसख्यया ।
दशभिं पञ्चभिर्वापि त्रिभिरेकेन वा दिनै ॥

त्रिशातषष्ठि शतविप्रा सभोज्यास्त्रिशात क्रमात्
एव यं कुरुते भक्तया जन्ममध्ये सकृद्धर ॥

तस्यैव सफल जन्म मुक्तिस्तस्य करे स्थिरा ।
रहस्यनामसाहस्रभोजनेऽप्येवमेव हि ॥ ४१ ॥

आदौ नित्यबलिं कुर्यात्पञ्चाद्वाश्यणभोजनम् ।
रहस्यनामसाहस्रमहिमा यो मयोदित ॥ ४२ ॥

सशीकराणुरत्रैकनाम्नो महिमवारिधेः ।
वाग्देवीरचिने नामसाहस्रे यथदीरितम् ॥ ४३ ॥

तत्फल कोटिगुणित नाम्नोऽप्येकस्य कीर्तनात् ।
एतदन्यैर्जपै स्तोत्रैरर्चनैर्यत्फल भवेत ॥ ४४ ॥

तत्फल कोटिगुणित भवेन्नामशातत्रयात् ।
वाग्देवीरचितास्तोत्रे तादृशो महिमा यदि ॥

साक्षात्कामेशकामेशीकृतेऽस्मिन्गृह्णतामिति ।
मकृत्सकीर्तनादेव नामामस्मिन्दातत्रये ॥४६॥

भवेच्चित्तस्थ पर्यासिन्यूनमन्यानपेक्षिणी ।
न ज्ञातव्यमितोऽप्यन्यन्नं जसव्य च कुम्भज ॥

यद्यत्साध्यतम कार्यं तत्तदर्थमिदं जपेत् ।
तत्तत्फलमवाभोति पश्चात्कार्यं परीक्षयेत् ॥

ये ये प्रयोगास्तन्त्रेषु तैस्तैर्यत्साध्यते फलम् ।
तत्सर्वं सिध्यति क्षिप्रं नामलिशानकीर्तनात् ॥

आयुष्करं पुष्टिकरं पुत्रद वड्यकारकम् ।
विद्याप्रदं कीर्तिकरं सुकवित्वप्रदायकम् ॥५०॥

सर्वसप्तप्रदं सर्वभोगदं सर्वसौख्यदम् ।
सर्वाभीष्टप्रदं चैव देवया नामशानत्रयम् ॥५१॥

एतज्जपपरो भूयान्नान्यदिच्छेत्कदाच्चन ।
एतत्कीर्तनस्तुष्ठा श्रीदेवी ललितास्मिका ॥

भक्तस्य यद्यदिष्ट खात्तात्पूरयते ध्रुवम् ।

तस्मात्कुम्भोद्भव मुने कीर्तय त्वमिद सदा ॥

नापर किंचिदपि ते बोद्धव्य नावशिष्यते ।

इति ते कथित स्तोत्र ललितात्रीतिदायकम् ॥

नाविद्यावेदिने ब्रूयान्नाभक्ताय कदाचन ।

न शठाय न दुष्टाय नाविश्वासाय कर्हिचित् ॥

यो ब्रूयात्रिशतीं नाम्ना तस्यानर्थो महान्भवत् ।

इत्याज्ञा शाकरी प्राक्ता तस्माद्गोप्यमिद त्वया ॥

ललिताप्रेरितनैव मयोक्त्त स्तोत्रमुत्तमम् ।

रहस्यनामसाहस्रादपि गोप्यमिद मुने ॥ ५७ ॥

एवमुक्त्या हयग्रीव कुम्भज तापसोत्तमम् ।

स्तोत्रेणानन ललितां स्तुत्वा लिपुरसुन्दरीम् ॥

आनन्दलहरीमध्यमानसः ममवर्तत ॥ ५९ ॥

इति श्रीललितात्रिशतीस्तोत्र सपूर्णम् ॥

ललितात्रिशती
नामानुक्रमणिका



॥ श्री ॥

॥ नामानुक्रमणिका ॥

	पृष्ठम्		पृष्ठम्
ईकाररूपा	१९१	इश्वरवल्लभा	१९५
ईक्षणसूष्टाण्डकोटि	१९५	ईश्वराधार्जक्षशरीरा	१९६
ईक्षित्री	१९४	ईश्वरोत्सवगनिलया	१९७
ईडिता	१९५	इषात्स्मतानना	१९८
ईतिवाधाविनाशिनी	१९७	इहाविरहिता	१९८
ईद्विग्यित्वविनिर्देश्या	१९८	एकप्राभवशालिनी	१९०
ईप्रिस्तार्थप्रदायिनी	१९९	एकभाक्तमदर्चिता	१८१
ईशाताण्डवसाक्षिणी	१९७	एकभोगा	१८५
ईशाशक्ति	१९८	एकरसा	१८६
ईशाधिदेवता	१९६	एकवीरादिसेव्या	१८०
ईशानादिब्रह्ममयी	१९३	एकाक्षरी	१७५
ईशात्री	१९१	एकाग्रचित्तनिर्धारी	१८२
ईशित्वाद्यष्टसिद्धिदा	१९३	एकातपत्रसाम्राज्यप्रदा	१८७
ईश्वरत्वविधायिनी	१९३	एकानन्दाचदाकृति	१७९
ईश्वरप्रेरणकरी	१९६	एकानेकाक्षराकृति	१७७

	पृष्ठम्		पृष्ठम्
एवन्तप्रज्ञता	१११	करालिप्राणनायिका	२२४
एकाररूपा	१७५	कमनीया	१६९
एकैश्वर्यग्रदयिना	१८६	कमलाक्षा	१६९
एजदनेकजगदीश्वरी	१८९	कम्बुकण्ठा	२२६
एतत्तदित्यनिर्देश्या	१७८	कम्पनिग्रहा	१७४
एधमानप्रभा	१११	करनिर्जितपङ्खवा	२२६
एन कुटविनाशिना	१८५	करभार	२२३
एलासुगा धन्विकुरा	१८४	करुणामृतसागरा	१७०
एवमित्यागमाबोध्या	१८०	कर्पूरबीगीमौरभ्यकल्होलि	१७२
एषणाराहताहता	१८४	कर्मफलप्रदा	१७५
कजलाच्चना	१७३	कमादसाक्षिणी	१७४
कदपूजनकापाङ्गवीक्षणा	१७१	कलानाथमुरी	२२३
कदपविद्या	१७१	कलावती	१६९
ककाररूपा	१६६	कलालापा	२२६
ककाराशा	२२	कलिदाषहरा	१७३
कक्कनिणी	२६४	कल्पवल्लासमभुजा	२२७
कचाजताम्बुदा	२२३	कल्मषज्ञी	१७०
कटाक्षस्थादकरुणा	२२३	कल्याणगुणशालिनी	१६७
कठिनस्तनमण्डला	२२२	कल्याणशैलनिलया	१६८
कदम्बकाननावासा	१७१	कल्याणा	१६७
कदम्बकुमुखिया	१७१	कल्या	२२२

	पृष्ठम्		पृष्ठम्
कस्तुरीतिलकाञ्जिता	२२८	कामश्वरालिङ्गिताङ्गी	२६७
काञ्जितार्थदा	२७०	कामश्वराहादकरी	२६९
कान्ता	२२५	कामेश्वरी	२७०
कांतधूतजपायलि	२२६	कारयित्रा	१७४
कामकाटिनिलया	२७	कारुण्यविग्रहा	२२४
कामसजीवनी	२२८	कालहत्री	२२१
कामितार्थदा	१२१	कायलोला	१६७
कामेश्ची	२२१	लपटा	२४३
कामेशोत्सगवासिनी	२६७	लकाररूपा	१९८
कामेश्वरगृहेश्वरा	२६९	लकारारथा	२३६
कामेश्वरतप सिद्धि	२६८	लकारिणी	२७१
कामेश्वरप्रणयिनी	२६८	लकुलेश्वरी	१४३
कामेश्वरप्राणनाडी	२६५	लक्षकान्चण्डनायिका	२०१
कामेश्वरप्राणनाथा	२६८	लक्षणागम्या	२०२
कामेश्वरब्रह्मवित्रा	२६९	लक्षणोज्ज्वलदिव्याङ्गी	१००
कामश्वरमनाहरा	२६५	लक्ष्मणाग्रजप्रजिता	२४०
कामेश्वरमन प्रिया	२६८	लक्ष्मीवाणीनिषेविता	१०८
कामेश्वरमहेश्वरी	२७०	लक्ष्माथा	२०१
कामेश्वरविमोहिनी	२६८	लग्नचामरहस्तश्रीशारा०	२४१
कामेश्वरविलासिनी	२६८	लघुसिद्धिदा	२३९
कामेश्वरसुखप्रदा	२६७	लङ्घयेतराजा	२३८

	पृष्ठम्		पृष्ठम्
लजाढ्या	२०४	ल-धशक्ति	२७३
लज्जापदसमाराध्या	२४२	ल-धसपत्समुच्चात	२४४
लतातनु	७ ८	ल-धसुखा	२७७
लतापूज्या	२३६	लब्धहर्षाभिपूरिता	२७८
ल धकामा	२०९	लब्धातिशयसर्वाङ्गसौदर्या	२७०
लब्धदेहा	२७३	लब्धाहकारदुर्गमा	२७२
ल-धधी	२७१	लब्धैश्वर्यसमुच्चति	२७४
ल धनानागमस्थिति	२७६	लन्या	२ ८
लब्धपति	२७६	लभ्येतरा	२४०
लब्धपापमनोदूरा	२७९	लभ्यमुक्तालताञ्जिता	२ ३
लब्धमक्तिसुलभा	२४०	लभ्योदरप्रसू	२०४
लब्धभोगा	२७७	लयवर्जिता	२ ४
लब्धमाना	२४३	लयस्थित्युद्घवश्वरी	२२६
लब्धयौवनशालिनी	२७६	ललनारूपा	१९९
लब्धरसा	२४४	ललितिकालसत्फाला	२०
लब्धरागा	२७६	ललाटनयनार्चिता	२००
लब्धरूपा	२७१	ललामराजदलिका	२०३
लब्धलीला	२७५	ललिता	१९८
लब्धवाञ्छिता	२७२	लसद्वाडिमपाटला	१९९
लब्धविभ्रमा	२७६	लाकिनी	१९९
लब्धवृद्धि	२७४	लाक्ष्मारससवर्णाभा	२३९

नामानुक्रमणिका ।

३०५

	पृष्ठम्		पृष्ठम्
लाङ्गलायुधा	२४१	समानाधिकवर्जिता	२६२
लाभालाभविवर्जिता	२३८	सर्वकर्ली	२१६
लावप्यशालिनी	२३९	सर्वगता	२१९
लास्यदर्शनसतुष्टा	२३७	सर्वज्ञा	२१५
सगहीना	२६३	सर्वप्रपञ्चनिमात्रा	२६२
सकला	२५८	सर्वभर्ली	२१६
सकलागमसस्तुता	२५६	सर्वभूषणभूषिता	२२०
सकलाधिष्ठानरूपा	२६१	सर्वमङ्गला	२१५
सकलेष्टदा	२६३	सर्वमाता	२१९
सकाररूपा	२१५	सर्वविमोहिना	२१८
सकाराख्या	२५५	सर्ववेदाततात्पयभूमि	२५७
सगुणा	२६३	सर्वसाक्षिणी	२१७
सचिदानन्दा	२५८	सर्वसौरयदात्री	२१८
सत्यरूपा	२६१	सर्वह त्रा	२१६
सदसदाश्रया	२५७	सर्वाङ्गसुदरी	२१७
सदाशिवकुटुम्बिनी	२६०	सर्वात्मिका	२१७
सद्गतिदायिनी	२५९	सर्वाधारा	२१८
सनकादिसुनिधेया	२६०	सर्वानवद्या	२१७
सनातना	२१६	सर्वासुणा	२१९
समरसा	२५६	सर्वावगुणवर्जिता	२१९
समाङ्कति	२६१	सर्वेशी	२१५